वर्ष 42 अंक : 5 31.12.2019 मंगलवार (सितंबर - दिसंबर) वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

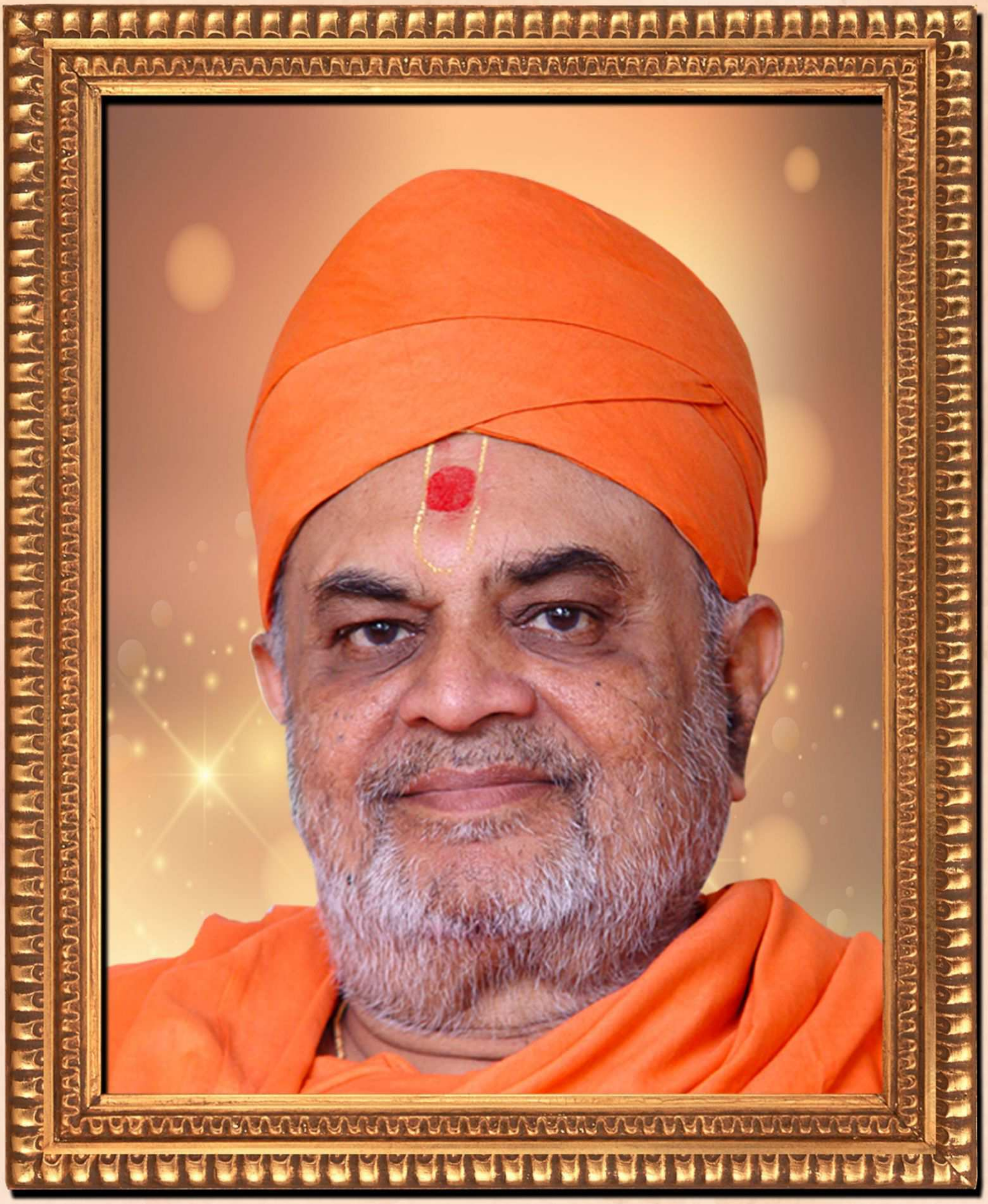

गुणातीत समाज की जय

'स्वामी अक्षर के विहारी' चरणे,
वंदे सभी भाव से...

हे अक्षरविहारीस्वामीजी ! आपके जैसा माहात्म्य और दासत्व सहजता से प्रगटे...

हे अक्षरविहारीस्वामीजी !
अमर रहो...

'अक्षर का तेज़' हुआ 'अक्षर' में विलीन...

21 दिसंबर 2019... प्रातः 4:15 बजे गुणातीत समाज के आधारस्तंभ समान 84 वर्षीय **प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी** ने लंबी बीमारी के बाद, **राजकोट** के **'वोकहार्ट'** अस्पताल में स्वतंत्ररूप से अक्षरधामगमन किया। सुबह 5:00 बजे दिल्ली मंदिर में जब यह समाचार मिला, तो उनके साथ बिताए क्षणों का संस्मरण करके प.पू. गुरुजी का हृदय द्रवित हो गया। किन्तु मंदिर से जुड़े मुक्त व्याकुल न हों, इस हेतु अपने आपको संभालते हुए भजन-प्रार्थना करते-कराते रहे।

2012 - 1 से 5 फरवरी को गुरुहरि काकाजी के साक्षात्कार की हीरक जयंती के अंतर्गत दिल्ली में प.पू. गुरुजी का 75वाँ प्राकट्य दिन प्रगट गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में खूब जोर-शोर से मनाया था। लेकिन, प.पू. गुरुजी के प्रति अनोखे सखाभाव और प्रीति के वश प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी अगले ही महीने 13 मार्च-प्राकट्य दिन के अनुसार सांकरदा के सभी संतों, सेवकों एवं बहनों को न केवल दिल्ली लेकर आए, बल्कि सांकरदा से प्रसाद बनाने की सारी सामग्री लेकर आए। तब सांकरदा के संतों ने स्वयं प्रसाद बना कर उपस्थित मुक्तों को खिलाया और **प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी ने तो बड़े भाई के नाते प.पू. गुरुजी को स्वयं भोजन की थाली परोस कर दी।** इस स्मृति का स्मरण करते हुए प.पू. गुरुजी ने वह वीडियो क्लीप पुनः देखी और भावविभोर हो उठे! दूसरी ओर–पू. राकेशभाई, पू. आशिष एवं पू. सौरभ अंतयेष्टि में जाने हेतु टिकिट बुकिंग कराने लगे।

22 की तड़के 5:00 बजे की फ्लाईट से बड़ौदा पहुँच कर, कुछ मुक्त हरिधाम जाने के बाद सांकदरा गए और प.पू. गुरुजी सुबह 10:30 बजे की फ्लाईट से बड़ौदा और वहाँ से हरिधाम पहुँच कर, फिर सांकरदा गए।

गुरुहरि पप्पाजी के **ज्येष्ठ पुत्र** एवं **पू. प्रफुल्लभाई** (अनुपम मिशन) के **ज्येष्ठ भ्राता पू. रमेशभाई** अर्थात्–प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी का जन्म ही **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** की कृपादृष्टि वाले सत्संगी परिवार में हुआ। अतः युवावस्था में ही गुरुहरि योगीजी महाराज की दृष्टि में आ गए। वे अनादि के थे, इसलिए दिनाँक 15 फरवरी 1955 को उनके प्राकट्य दिन पर **गुरुहरि योगीजी महाराज** ने पू. काकाजी को याद करके, साक्षात् अक्षरदेरी में निम्न पाँच संकल्प किए–

1. रमेशभाई पढ़-लिख कर अच्छे तैयार होंगे।
2. माता-पिता की प्रतिभा प्राप्त करके लायक बनेंगे।
3. अच्छे सत्संगी बनेंगे और एकांतिक धर्म सिद्ध करेंगे।
4. सभी सत्संगियों में दासत्वभक्ति बढाएँगे।
5. संत-हरिभक्तों में निर्दोषबुद्धि रखते हुए उनकी वृद्धि ही होगी।

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के संकल्प को साकार करने हेतु, गुरुहरि योगीजी महाराज ने गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी के सहयोग से 51 शिक्षित युवकों को साधु की दीक्षा देने का बिगुल बजाया था। सो, अपने पिताश्री पू. पप्पाजी की आज्ञा और मार्गदर्शन में, दीक्षा लेने वाले युवकों की वे खूब छुपी सेवा करते। पू. पप्पाजी अपनी पेन्शन में से थोड़ी रकम उन्हें देते, ताकि उससे युवकों के लिए ज़रूरी कपड़े, उनके लिए वाहन के किराए इत्यादि की सुविधा कर सकें। माहात्म्ययुक्त सेवा को ही उन्होंने अपना जीवनध्येय बनाया था। गुरुहरि योगीजी महाराज की 'फारगो'

गाड़ी चलाने की सेवा करते हुए, हमेशा प.पू. बापा की सुविधाओं पर भी वे विशिष्ट ध्यान देते थे। एक बार नेनपुर मंदिर गए थे। प.पू. बापा को शौच के लिए जाना था। सो, सेवकों ने कपड़ा बांध कर शौचालय तैयार कर दिया, लेकिन लाईट नहीं थी। सो, भक्ति अदा करने की सुझ से प.पू. रमेशभाई ने तुरंत ही गाड़ी नज़दीक लाकर, उसकी बैटरी से एक तार जोड़ कर लाईट का प्रबंध किया। उन्हें एक ही अनुसंधान था कि साक्षात् स्वरूप को कम तकलीफ पड़े। लाईट देख कर प.पू. बापा भी हैरान हो गए और जब मिट्टी से हाथ धो रहे थे, तब उन्होंने सेवक से पूछा – *लाईट का प्रबंध किसने किया ?* तो, एक सेवक ने बताया – *रमेशभाई ने गाड़ी में से लाईट लगाई है।* यह सुन कर **प.पू. बापा** ने – *गुरु खरा ! बहुत होशियार...* कहते हुए पीठ थपथपा कर प्रसन्नता व्यक्त की।

गुरुहरि योगीजी महाराज को राज़ी करने और गुरुहरि पप्पाजी की मरज़ी को साकार करने, ब्रह्मरस भरवाने हेतु 'योगी की सेना' में जुड़ कर, 1961 में गुरुहरि योगीजी महाराज के वरद् हस्तों से, प.पू. रमेशभाई ने भागवती दीक्षा ग्रहण करके **'साधु अक्षरविहारीदास'** जैसा अद्भुत नाम प्राप्त किया। जगत के रंग में रंगे जो कई युवक प.पू. बापा के प्रेमवश साधु हुए थे, उन्हें प.पू. बापा की आज्ञा से प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी ने खूब लाड़ से संभाला। साथ ही **गुरुहरि काकाजी के वचन से, 'स्वरूपयोग' करवा कर, संतों के अंतर में प.पू. बापा की भरपूर महिमा भरी।** प.पू. बापा के दीक्षार्थी संतों में से यदि किसी को उदास देखते, तो किसी भी प्रकार से कला-बल, छल-गोष्ठि-पदार्थ इत्यादि से भी संभाल लेते। एक बार तो एक संत के साथ रात के ग्यारह बजे गोष्ठि में बैठे और लगातार सुबह पाँच बजे तक निरंतर माहात्म्य की बातें उससे करते रहे। प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी द्वारा किया ऐसा जतन देख कर, **प.पू. बापा** इतने राज़ी हुए कि **'अक्षरभुवन'** की जिस गॅलरी में प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी संतों के साथ गोष्ठि करते थे, वहाँ आशीर्वाद दिया कि –

'जाओ, इस गॅलरी में तुम्हारे पास जो गोष्ठि करने के लिए बैठेगा, वह भले रोता-रोता आएगा, लेकिन हँसता-हँसता ही लौटेगा।'

प.पू. बापा के प्रति प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी की अनुपम प्रीति थी। इसलिए अक्षरभुवन में प.पू. बापा की सुविधानुसार एक कमरा बनवाया। प.पू. बापा भी उनकी भावनावश सहर्ष वहाँ ठहरते। यह वही कमरा था, जहाँ **पू. माधवस्वामीजी प.पू. बापा की सेवा में रहते थे और प.पू. गुरुजी रातभर बैठ कर प.पू. बापा का दर्शन करते थे। इस कमरे की स्मृतियाँ प.पू. गुरुजी की चित्तपट्टी पर आज भी ईदम् हैं।**

इसी तरह, प.पू. बापा की आज्ञा से प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी ने **'यज्ञपुरुष स्मृति खंड'** का निर्माण करवाया, तो **प.पू. बापा** ने राज़ी होकर आशीर्वाद दिया –

'तुमने यह हॉल बना दिया है, अब तुम्हारे अंतर का हॉल हम बना कर शास्त्रीजी महाराज को पधरा देंगे।'

उनकी ऐसी कई विशेषताओं और आध्यात्मिक पात्रता को पहचान कर, 16 अगस्त 1965 को प.पू. महंतस्वामी, प.पू. डॉक्टरस्वामी और प.पू. भक्तिप्रियस्वामी कोठारी की भाँति **'सद्गुरु'** की मान्यता देकर, स्वहस्त से दो बार टीका करके **प.पू. बापा** ने प्रसादी का चंपा का पुष्प देते हुए कहा –

'ये अक्षरविहारीस्वामी को सद्गुरु नहीं होना, लेकिन बनाया है, तो बनना पड़ेगा।'

इससे भी अधिक, प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी की चेतना को परखते हुए, प.पू. बापा ने उन्हें श्रीजी महाराज की मूर्ति के सिद्ध और अति उच्च आध्यात्मिक कक्षा के **'स्वरूपानंदस्वामी'** के रूप में भी नवाज़ा। यूँ, समय-समय पर प.पू. बापा के अंतर की उन्होंने खूब प्रसन्नता प्राप्त की।

28 मई 1966 को गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी से जुड़े 39 संतों को संस्था ने 'विमुख' करार दिया। तब **प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी** की परछाईं बन कर प्रतिकूल परिस्थितियों में वे अडिग रहे और विपरीत माहौल में संतों को खूब संभाला। प.पू. बापा की इन धरोहरों को सगे पुत्र से भी कई गुणा मान कर, गुरुहरि काकाजी ने गुरुहरि पप्पाजी के सहकार से जो ज़हमत उठाई, वह तो अकल्पनीय कही जाए। गुरुहरि काकाजी ने दो वर्ष में ही **22 मई 1968–गुरुवर्य योगीजी महाराज की 77वीं जन्मजयंती** के अवसर पर **'सांकरदा'** की पुण्य भूमि पर गुणातीत समाज के प्रथम मंदिर की रचना करके, प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी को वहाँ का महंत बना कर संतों को उनकी निश्रा में रखा। इसे याद रखते हुए **प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी** आख़िर तक दोहराते रहे–

'काकाजी ने मुझे यह मंदिर बनवा दिया था।'

सो, पिछले ही वर्ष 29 दिसंबर को इस मंदिर की स्वर्ण जयंती एवं गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी के अवसर पर, गुरुहरि काकाजी के लाड़ले योगेश्वरों ने इसका पुनः निर्माण करवा कर मूर्तिप्रतिष्ठा करवा कर अद्भुत भक्ति अदा दी।

तब से बार-बार प्लेटलेट्स कम हो जाने के कारण, प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी की तबियत नाज़ुक चल रही थी, लेकिन गुणातीत स्वरूपों के आशीर्वाद एवं अपनी संकल्पशक्ति से आश्रितों को मूर्ति का सुख देने के लिए वे कई बार अस्पताल में दाख़िल होकर, थोड़ा स्वस्थ होकर लौटते। अंतिम बार राजकोट में प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी के निजी डॉ. श्री देवांगभाई की देख रेख में आयुर्वेदिक चिकित्सा हेतु वे गए थे। **पू. गुरुजी (निष्कामजीवनस्वामी), पू. बापुस्वामी, पू. वजुभाई, पू. बिंपलभाई, पू. भीमसिंहभाई** इत्यादि संतों-सेवक लगातार उनकी सेवा में हाज़िर थे। अचानक प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी की तबियत नाज़ुक होने के कारण 'वोकहार्ट' अस्पताल में दाख़िल किया। दस दिन वहाँ चिकित्सा प्राप्ति द्वारा संबंध में आए डॉक्टरों-मुक्तों का श्रेय करके, 21 दिसंबर की सुबह जीवनलीला समेट कर उन्होंने अक्षरधामगमन किया। यह खबर सुनते ही समग्र गुणातीत समाज को भारी चोट लगी; क्योंकि गुणातीत समाज का एक आधारस्तंभ स्थूल रूप से अदृश्य जो हो गया!

राजकोट में 'दिव्य विग्रह रथ' में उनका पार्थिव देह विराजमान करके, सर्वप्रथम **'गुणातीत ज्योत-प्रभुकृपा'** लाया गया। वहाँ पर प.पू. हंसा दीदी एवं प.पू देवी बहन की निश्रा में गुणातीत ज्योत के साधक भाइयों, सद्गुरु स्वरूपों, संत बहनों एवं गृहस्थों ने पुष्पांजलि की। तत्पश्चात् वहाँ से **'मोगरी-अनुपम मिशन'** ले जाया गया। वहाँ संतभगवंत साहेबजी की निश्रा में सभी संत भाइयों एवं भक्तों ने पूजन किया। यहाँ से **'पप्पाजी तीर्थ–शाश्वत्धाम'** गए, तो वहाँ भी संतों-भक्तों ने पूजन किया। तदोपरांत **'हरिधाम'** ले जाया गया। वहाँ प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी के सान्निध्य में सभी संतों, अंबरीष सेवकों, भक्तों ने पूजन, पुष्पांजलि एवं आरती द्वारा भावांजलि अर्पित की। पूजन करते हुए प.पू. स्वामीजी भी अत्यंत भावुक हो गए! कदाचित् 1966 के बाद एक-दूजे के साथ बिताए क्षणों का स्मरण हो आया।

दोपहर करीब 2:30 बजे **सांकरदा मंदिर** में प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी का रथ पहुँचा। प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी से जुड़ा सारा समाज अंतिम दर्शन हेतु आतुर था। अतः **'प्रभु स्मृति' हॉल** में रथ को स्थापित किया।

22 दिसंबर की दोपहर को **गुणातीत समाज के सिरछत्र प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी एवं संतभगवंत साहेबजी की दिव्य निश्रा में सभी केन्द्रों के वडील संतों, संत भाइयों, संत बहनों सहित हज़ारेक मुक्त अंतिम विदाई देने के लिए एकत्र हुए थे।** गुणातीत समाज के ध्वज, पुष्प चादर, पुष्प हार एवं पुष्पों से सभी ने श्रद्धांजली अर्पित की। वर्षों से प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी के प्रति अतिशय प्रीति से जुड़े निजी सेवक **पू. बिंपलभाई**

ने गद्‌गद्‌ कंठ से अंतिम क्षणों का विवरण देते हुए प्रार्थना की–

'हम हमारे वर्तन से स्वामीजी को सदैव प्रगट रख सकें।'

सारी पूजन विधि एवं आरती के बाद प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी को पालकी में विराजमान करके वेदिका पर ले गए। यहाँ प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी, संतभगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. निर्मलस्वामीजी ने अंतिम पुष्प हार अर्पण किया।

प.पू. स्वामीजी ने एक साधक की अदा से शब्दपुष्पों द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए कहा–
'अक्षरविहारीस्वामीजी का पहले से ही अत्यंत सरलतायुक्त जीवन था। उनकी दासत्वभक्ति बेजोड़ थी। रंकभाव और महिमायुक्त उनका जीवन बेनमून था। वे बापा की जिस प्रकार विनम्रभाव से सेवा-दर्शन करते, वह देख कर मेरी आँखों में आसूँ आ जाते थे। ***स्वामीजी को इस धरती से जाने नहीं देना है।*** *मुझे ऐसा होता था कि मुझ में ऐसी भक्ति-सेवा कब उदित होगी ? ऐसा उनमें रांकभाव, सरलता, विवेक, विनम्रता थी। हम सभी को जाग्रत रहना है। जिसमें विवेक, विनम्रता इत्यादि न हो, वह मानव न कहा जाए... हम साथ में बड़े हुए हैं। वे जब बापा की सेवा करते थे, तो मैं उनके साथ रहता था।* ***वे भक्ति का स्वरूप थे।*** *मुझे विवेक, विनम्रता इत्यादि का ख्याल नहीं था, स्वामीजी के साथ से मुझ में ये गुण आए। हमें स्वामीजी को कभी भी जाने नहीं देना है।* ***किसी भी प्रकार उन्हें इस समाज में जीवंत रखना है।*** *उनके जैसी सरलता, सेवा-भावना, भक्ति, विनम्रता हम में सहजता से प्रगटे, जिसके फलस्वरूप हमारे जीव में जो अनंत प्रकार का मान रहा हो, उसकी विस्मृति हो जाए। लय होकर, भुलकुं की यात्रा सहजता से शुरु हो जाए।* ***वे एक भुलकुं की अदा से वर्त कर गए।*** *इसी प्रकार सभी वर्तें ऐसा बुद्धियोग महाराज और स्वामी, भगतजी महाराज, जागास्वामी, कृष्णजी अदा, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी-पप्पाजी, हमारे जीवन में प्रगटाएँ–यही आज के शुभ दिन पर स्वामीजी के चरणारविंद में प्रार्थना।'*

तत्पश्चात् प.पू. स्वामीजी और संतभगवंत साहेबजी ने **पू. निष्कामजीवनस्वामीजी** को **प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी के आध्यात्मिक वारिसदार** के रूप में घोषित करते हुए हार अर्पण किया। पू. निष्कामजीवनस्वामीजी ने विनम्रभाव से सभी का पूजन किया। अंत्येष्टि विधि का आरंभ करते हुए सभी केन्द्रों के अग्रणी हरिभक्तों ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी की वेदिका पर चंदन के काष्ठ अर्पण किए। तत्पश्चात् सभी स्वरूपों द्वारा प्रासादिक मशाल द्वारा **पू. गुरुजी (निष्कामस्वामीजी), पू. बापुस्वामीजी, पू. विज्ञानस्वामीजी, पू. बिंपलभाई, पू. वजुभाई एवं पू. बाबुभाई (कंथारिया)** ने अग्निदाह दिया।

सांकरदा की साधक बहनों की स्थिति अत्यंत संवेदनशील थी। जिनके लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित किया, उनके स्थूल दर्शन हेतु नेत्र तो जीवनपर्यंत आतुर रहेंगे ही। फिर भी सभी केन्द्रों की वडील संतबहनों द्वारा इस आघात से उबरने का बल प्राप्त करके, प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी को अंतर में प्रगटा लेने की हूँफ उन्होंने पाई। अग्निदाह होते ही वैश्वानल चिता को स्पर्श करके फैल गया और... **'अक्षरविहारीस्वामीजी अमर रहो'** के जयनाद से समग्र वातावरण गूँज उठा और... प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी की दिव्य स्मृति हृदयस्थ करके भारी दिल से सभी ने प्रस्थान किया।

हरिधाम पहुँच कर रात्रि को प.पू. स्वामीजी का दर्शन-गोष्ठि करके प.पू. गुरुजी एवं मुक्तों ने आशीर्वाद लिया। अगले दिन **23 दिसंबर** की सुबह **प.पू. गुरुजी** हरिधाम से पुनः सांकरदा गए। वहाँ संतों के साथ बैठ कर उन्हें बल दिया और प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी को प्रगट मानने की करामत बताई–

(हरिप्रसाद)स्वामी, निष्कामस्वामी को नियुक्त करके गए हैं और साहेब ने भी सम्मति दी है। पूरे गुणातीत समाज ने तालियों से उसे स्वीकारा। उसमें कोई पक्षपात की तो बात थी ही नहीं, बस एक लीडर चाहिए। वर्ना तो पाँच मिल कर काम करेंगे, तो अक्षरविहारीस्वामीजी तो प्रगट हैं ही और हमें उनकी प्रतीति भी हो जाएगी। तो, अक्षरविहारीस्वामीजी में जितने गुण थे, वे सभी निष्कामस्वामीजी में निहारने हैं...

यहाँ से हरिधाम लौटे और दोपहर को प्रसाद लेकर, वडोदरा में **पू. जयेशभाई पटेल** के घर पधरामणी करते हुए, रात की फ्लाईट से प.पू. गुरुजी कुछ मुक्तों के साथ दिल्ली लौटे। मंदिर आने के बाद रात के एक बजे तक **प.पू. गुरुजी** बैठे और उपस्थित मुक्तों से सांकरदा की बातें - साधक बहनों को याद करते हुए बोले – ***उन्हें रोता देख कर, मुझे भी रोना आ गया !'***

प्रभुधारक संत तो शाश्वत् - अमर हैं। वे अपने आश्रितों के हृदयाकाश में सदैव स्थित हैं और हर पल वैसी ही परवरिश करते रहेंगे, जैसे कि स्थूल रूप से करते थे। फिर भी स्वरूप तो 'स्वरूप' होता है, जिसकी स्थूल हाज़िरी प्रत्येक शिष्य के लिए आलंबन है।

❋❋❋

नूतन वर्ष शुभाशीष एवं अन्नकूट कृपाप्रसाद...

शुद्धभावना को **'प्रगट विभूति'** के संबंध से चैतन्यमय पंख आते हैं
जिससे असाधारण एवं असंभव ऐसा मूलभूत प्रकृति का परिवर्तन भी सरल और सुगम हो सकता है।
ऐसी गुणातीत भावना ब्रह्मस्वरूप गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने हमारे लिए अमर बना दी
और
गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा वह गुरुपरंपरा प्रगट रही।
अतः फिलहाल भी वैसा ही महान अद्भुत दिव्य रुपांतर हम सभी के लिए सुगम है।
धाम, धामी और मुक्तों के प्रति प्रगट, साकार और सर्वोपरिभाव की परिपक्व निष्ठा दृढ़ होने पर,
'प्रगट स्वरूप' के साथ आध्यात्मिक संबंध दृढ़ होता है और अक्षरधाम का सुख आता है।
इस सुख का अधिकारी बनने के लिए जीतेजी ही रूपांतर करवा लेने हेतु
श्रद्धा, गरज़ और समागम
या
गुण, विनय और सेवा
या
'प्रगट के संबंध वालों' की माहात्म्य युक्त सेवा–
इन तीनों में से किसी भी एक प्रकार से बड़े संत का 'प्रसंग' करने लग पड़ें।
तो, ब्राह्मीस्थिति आज भी सुलभ है और अन्यों को भी उससे लाभान्वित कर सकते हैं।
सो, ध्येय की ओर नज़र रख कर चैतन्यशक्ति के सनातन कायदे से हम दिव्य जीवन जीते हो जाएँ,
ऐसा बल दें यही **नए वर्ष** पर गुरुचरणों में निज अंतर की प्रार्थना !

– गुरुहरि काकाजी महाराज, 1969

वर्षों पूर्व गुरुहरि काकाजी महाराज द्वारा दिए गए इन आशीर्वाद में संत समागम और संबंध की महिमा का ही महत्त्व दिखाई देता है और... उन्हें प्रति पल जीवंत रखे हुए-उनकी रुचि, रहस्य और मर्म को संजोए रखे हुए, **प.पू. गुरुजी** ने भी अबकी बार अन्नकूटोत्सव पर, बाहरी तौर से कड़े वचनों से और अंतर्मन से निहारें तो अपने आश्रितों के प्रति अतिशय प्रेम के वश निम्न आशीर्वाद दिया –

...खूब सावधानी से सुनना। इतने साल से सत्संग में रहने के बावजूद भी हमारा मन दुविधा में रहता है। सत्संग की बातें सुनने में मधुर ज़रुर लगती हैं, पर जब वर्तन में लाना हो तब कठिनाई आ जाती है। हम बोलते ज़रुर हैं कि सत्संग हमारी प्रॉयरीटी होनी चाहिए, पर क्या सच में ऐसा है या हमारे देह के संबंधी ही हमारी प्रॉयरीटी है? कल दिवाली के अवसर पर सद्भावना वाले (नए) काफ़ी मुक्त मंदिर में दर्शन करने आए, उन्होंने पुराने जोगियों के बारे में पूछा कि वे कहाँ हैं? अपना परिवार है, सो स्वाभाविक ही अपनों से मिलने की इच्छा होती है। यह सब देख कर मन मायूस हो जाता है कि अपनों को मिलने के लिए ये भगत तरसते हैं और पुराने जोगियों को इस बात की परवाह नहीं है। फिर माइक पर सत्संग की महिमा और अपनेपन की कितनी ही बातें किया करें, उसका प्रभाव नहीं पड़ता। लोग बोलते नहीं हैं, पर चेहरा बताता है कि वे तुम पर हँसते हैं। यह देख कर मेरा अंतर इतना रोता है, जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। दिवाली के दिनों में, नूतन वर्ष में ऐसी कड़वी बातें इसलिए करता हूँ कि आपको भले हमारे साथ प्रीति न हो, पर एक शिष्टाचार तो रखो। ***इतना-सा एहसान नहीं कर सकते?***

हम कल ***रात करीब 1 बजे नरुलाजी के घर इसलिए गए कि वह अपनी फॅमिली है।*** *उनकी इच्छा थी कि गुरुजी घर आएँ। मेरा मज़ाक करने का स्वभाव है, तो मैं पूरे दिन 'न' करता रहा, पर आख़िर रात को गया। अपना परिवार है, सो जाना चाहिए और वहाँ जाते ही उस परिवार ने मुझसे पूछा कि वो भक्त कहाँ हैं? कितना अपनापन होगा उन्हें उस भक्त से? इस बात पर उस भक्त को खुद सोचना चाहिए कि क्या ऐसा अपनापन उसने सत्संग से रखा है? या बस मैं और मेरा परिवार में ही घिरा और जकड़ा हुआ है। मैं सिर्फ इस भक्त की बात नहीं कर रहा हूँ, यह तो सब पर लागू होती है। इससे हम आगे जाएँ। काकाजी कहा करते थे – दिखावे व दंभ की भक्ति नहीं करनी। नए साल में और कुछ नई बात नहीं करनी है, इस साल के दिवाली के कार्ड में लिखा है कि अभिप्राय की भक्ति करें। तो, अभिप्राय की भक्ति एक ही है कि प्रगट के संबंध वाले मुक्तों के साथ* ***दिल की सच्चाई*** *से अपनेपन से जुड़ते जाएँ, तभी काकाजी के सॅन्टर की रौनक और शौनक हमारे द्वारा बनी रहेगी...*

अन्नकूट के अवसर पर इस बार दिल्ली विधान सभा के 'नेता प्रतिपक्ष' **श्री विजेन्द्र गुप्ताजी** आए थे। 'मंदिर' एवं 'तीन फरवरी पार्क' के शांतिमय वातावरण का वर्णन करते हुए उन्होंने सभा को संबोधित किया। **पू. चाँदप्रकाशजी** एवं **पू. परेशभाई दोशी** ने आशिष याचना की।

इस वर्ष मंदिर के पुराने जोगी आर्टिस्ट **पू. अमृतभाई पटेल** के परामर्श से **राजस्थानी** थीम पर, 'कल्पवृक्ष' हॉल, 'समाधि स्थल' एवं मंदिर के 'मुख्य द्वारा' पर सजावट की गई थी। उसी के अनुसार कई स्वयं सेवकों की वेशभूषा भी थी। आरती के दौरान क्षेत्र के विधायक **श्री राजेश गुप्ताजी** भी दर्शन करने के लिए आए। आरती के बाद अन्नकूट दर्शन करके सभी ने प्रति वर्ष की भाँति कढ़ी, चावल और मिक्स सब्जी का प्रसाद लिया। दर्शन हेतु दोपहर 3:30 बजे तक भक्तों का तांता लगा रहा। अन्नकूट की विभिन्न सेवाओं से धन्य होकर मुक्तों ने प्रस्थान किया।

गुरुहरि काकाजी स्वरूप
प.पू. दिनकरभाई के अमृतपर्व निमित्त
प.पू. गुरुजी की पंचदेशीय धर्मयात्रा...

2019 के प्रथम माह में ही **प.पू. दिनकरभाई** के **अमृतपर्व** का बिगुल बज गया, जब दिल्ली मंदिर के 'कल्पवृक्ष' हॉल में **12 जनवरी** को, प.पू. गुरुजी ने दिल्ली गुणातीत समाज के मुक्तों को प.पू. दिनकरभाई का अमृतपर्व मनाने का सुनहरा अवसर दिया और... तभी से गुरुहरि काकाजी के प्रति भक्ति अदा करने की भावना और प.पू. दिनकरभाई के साथ अनोखे संबंध के वश प.पू. गुरुजी ने तै कर लिया कि वे गुरुहरि काकाजी की प्रसादिक भूमि शिकागो पुनः जाएँगे।

2016 में जब शिकागो में गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी मनाई गई, तब प.पू. गुरुजी पहली बार अमेरिका की प्रसादिक धरती पर गए थे और... बड़े पैमाने पर उत्सव होने के कारण हरिभक्तों के घर वे नहीं जा पाए थे। सो, अबकी बार उन हरिभक्तों को राज़ी करने के ध्येय से, प.पू. गुरुजी ने अधिक समय शिकागो में व्यतीत करने का सोच लिया। सो, **प.पू. वशीभाई** एवं शिकागो के पू. विराटभाई (पिन्टुभाई) से विचार-विमर्श करके **पू. राकेशभाई** के नेतृत्व में **पू. अक्षरस्वरूपस्वामीजी, पू. पुनीत गोयलजी, पू. पुनीत मल्होत्रा, पू. सौरभ शाह** एवं **पू. नित्या दीदी-पू. डॉ. अर्ची दीदी** ने प.पू. गुरुजी का सारा प्रोग्राम बनाना शुरू किया। कार्यक्रम बनाते हुए सभी को विचार आया कि लगातार सोलह घंटे का सफ़र करने की बजाय, पहले **लंदन** के **अनुपम मिशन** में नूतन मंदिर का दर्शन करके, चार दिन वहाँ के मुक्तों के दर्शन-समागम का लाभ लेकर प.पू. गुरुजी शिकागो के लिए रवाना हों।

इसी प्रकार, गुरुहरि काकाजी के लाड़ले **पू. प्रवीणभाई लाड** के आग्रह से लौटते हुए पॅरिस एवं स्वीटज़रलॅन्ड के मुक्तों का लाभ लेते हुए भारत लौटें। यूँ, पूरे एक महीने का कार्यक्रम तैयार हुआ।

पहली बार ऐसा हुआ कि प.पू. गुरुजी इतने लंबे समय के लिए दिल्ली से ही नहीं, पर भारत से बाहर जाने वाले थे। जिन मुक्तों को दिन-रात प.पू. गुरुजी के दर्शन मिलते हैं, उनके लिए तो यह वियोग का विषय कहा जाए। परंतु, जिस प्रकार गुरुहरि काकाजी कहते थे – हवा सर्वत्र है... इसी प्रकार चैतन्यों को अपनी मूर्ति-दर्शन का सुख देने के लिए सत्पुरुष किसी से बाध्य नहीं है और... जनवरी से शिकागो जाने के बिगुल की आवाज़ अति तीव्र हो गई, जब **24 अगस्त, शनिवार 2019-श्री कृष्ण जन्माष्टमी** की सायं पाँच बजे से सभी मुक्त अपने प्राण पुरुष प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी को एक महीने के लिए रुख़सत देने के लिए एकत्र होने लगे... प्रसाद लेने के पश्चात् सायं करीब साढ़े सात बजे प.पू. गुरुजी ने पंद्रह मिनिट धुन करवाई और फिर मंदिर एवं अक्षरज्योति के स्टाफ की ओर से **पू. डॉ. दिव्यांग** ने मार्मिक भजन ***'बापा पे सब कुछ वार दिया...'*** प्रस्तुत किया, जिसे सुन कर सभी रो पड़े। साढ़े आठ बजे के करीब प.पू. गुरुजी के साथ प.पू. दीदी एवं 16 मुक्त मंदिर से **इंदिरा गाँधी इंटरनेशनल हवाई अड्डे** के लिए रवाना हुए और... तकरीबन डेढ़ सौ मुक्त एयरपोर्ट पर छोड़ने के लिए साथ-

साथ आए। इम्मीग्रेशन चॅकिंग के बाद मध्य रात्रि को दो बजे **ब्रिटिश एयरवेज़** की फ्लाईट BA-142 से लंदन के लिए रवाना हुए।

दि. 25 की सुबह करीब सात बजे **लंदन** के **हिथ्रो एयरपोर्ट** पर पहुँच कर सामान इत्यादि लेने के बाद बाहर निकले तो **प.पू. अश्विनभाई** स्वयं **पू. हिंमतस्वामीजी, पू. किशोरभाई मास्टर्स, पू. वीनूभाई नकारजा** एवं मुक्तों के साथ पुष्पों से स्वागत करने के लिए पधारे थे। दिल्ली के **पू. धीरुभाई कापड़िया** के सुपुत्र **पू. मिहिरभाई** द्वारा भेजी गाड़ियों एवं अनुपम मिशन से आई गाड़ी व छोटी बस में बैठ कर सभी अनुपम मिशन गए। वहाँ मंदिर में श्री ठाकुरजी का दर्शन किया। प.पू. अश्विनभाई की निश्रा में उपस्थित मुक्तों ने पुष्प हार से प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी का एवं दिल्ली के मुक्तों का पुष्पों से स्वागत किया। प.पू. गुरुजी एवं संतभगवंत प.पू. साहेबजी के विशिष्ट संबंध की स्मृति करते हुए **प.पू. अश्विनभाई** ने आशीर्वाद दिया और **प.पू. गुरुजी** ने **पू. हिंमतस्वामीजी** की सरलता के गुण को उजागर करते प्रसंगों का उल्लेख करते हुए आशीष दी–

...दिनकरभाई के अमृतपर्व निमित्त शिकागो जाने का कार्यक्रम बना, तो सभी ने कहा कि एक साथ सफ़र करने के बजाय बीच में रुक कर जाएँ। तो, मुझे हुआ कि चलो हिंमतस्वामी का दर्शन करते हुए जाएँ। उनके प्रति मुझे पहले से पूज्यभाव है। ***काकाजी के लिए कहा जाता है– 'सरलता का स्वरुप तमे...' ऐसे ही हिंमतस्वामी एकदम सरल व्यक्ति ! उन्हें देखें तो सहज ही 'स्वामी' कहने का मन होता है...*** *गुणातीत समाज में पप्पाजी हमें सूत्र देकर गए कि सामने आया मुक्त ब्रह्म की मूर्ति मानी जाए, तो ऐसे हिंमतस्वामी के लिए तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता...*

स्वागत सभा के अंत में **प.पू. दीदी** ने स्वरूपों का धन्यवाद करते हुए उन्हें राज़ी करने की संक्षेप में करामत बताई और पू. राकेशभाई ने दिल्ली मंडल की ओर से आभार प्रकट किया। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी एवं सभी ठहरने के स्थान पर गए। नाश्ता इत्यादि करके नित्यक्रम से फ़ारिग होने के बाद दोपहर को विश्राम किया। सायं करीब 5:00 बजे मंदिर के हॉल में **प.पू. शांतिभाई साहेब** के **प्रागट्य दिन** निमित्त सत्संग सभा का आयोजन था। सो, **पू. वीनूभाई नकारजा, पू. हिंमतस्वामीजी, पू. निलेशभाई, पू. बारेन्द्रभाई, पू. अश्विनभाई पोपट, पू. एनड्रिया, पू. भूपाभाई** जैसे मुक्तों ने प.पू. शांतिभाई साहेब के प्रसंगों द्वारा बताया कि किस प्रकार प.पू. शांतिभाई ने उनके जीवन को सुगम बनाने में कार्य किया। फ्लाईट के सफ़र के 'जॅट लेग' के कारण प.पू. गुरुजी स्थूल रूप से इस सभा में उपस्थित नहीं हो पाए।

कइयों के प्राणाधार **प.पू. अश्विनभाई** गुरुस्थान पर हैं, फिर भी वे आज स्वयं साधक की अदा से जीते हैं, सो वैसी ही प्रेरणा देते हुए उन्होंने आशीर्वाद दिया–

आज नंदमहोत्सव ! 'नंद घेर आनंद भयो, जय कैन्हयालाल की...'

इसी दिन हमारे प्यारे-प्यारे शांतिदादा का प्रागट्योत्सव रविवार की सभा में मनाने का हमें मौका मिला। इंगलैंड में सत्संग की नींव में जिनका योगदान है और जो आज भी प्रेम की वर्षा बरसा रहे हैं, वो हमारे माँ जैसे संत प.पू. शांति दादा हैं। पिछले पचास-साठ साल से शांतिभाई के साथ रहने का मुझे मौका मिला। योगीबापा ने हम दोनों के सिर के बाल पकड़ कर, अपनी गोद में रख कर कहा था कि पिछले जन्म में तुम दोनों भाई थे, तो इस जन्म में भाई बन

कर रहना। मेरे स्वभाव-प्रकृति से आप सभी परिचित हैं। ***मेरी और शांतिदादा के बोलने-चलने, बैठने-उठने, कार्य करने की पद्धति में पूर्व-पश्चिम की भाँति विरोधाभास है। लेकिन, बापा ने अपने वचन और गुरुहरि साहेबदादा ने अपने जतन की प्रेम की जंजीर से केवल हम दोनों को ही नहीं, बल्कि सनंदभाई, विट्ठलभाई, रतिभाई, पूनमभाई, हर्षदभाई जैसे भिन्न-भिन्न प्रकृति और महत्वाकांक्षा वालों को बांधे रखा...*** *उसमें से 'अनुपम मिशन' का उद्भव हुआ। काकाजी-पप्पाजी, सोनाबा ने प्रेम से सिंचन किया... 1973 में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साथ साहेब दादा सबसे पहले इंगलैंड आए। फिर 1975 में साहेबदादा शांतिदादा को साथ में लेकर आए।* ***बापा, काकाजी, पप्पाजी के कृपापात्र साहेबदादा हमारे गुरु हैं, ऐसे माहात्म्य का सिंचन शांतिदादा ने केवल इंगलैंड में नहीं, बल्कि 1966 से बाद उत्पन्न हुए 'गुणातीत समाज' के सभी मुक्तों के हृदय में किया...*** *इंगलैंड के गृहस्थ कुटुंबों के जीवन में शांतिदादा ने एक साधु की भूमिका अदा की... शांतिदादा का जीवन सरल और स्फटिकमय पारदर्शी है। जैसा विचार करते हैं, वैसा बोलते, वर्तते और लिखते हैं। उनके हृदय में जो माहात्म्य छलकता है, उसके कारण मैं बहुत प्रेमपूर्वक कहता हूँ कि शुरुआत के वर्षों में हमारी साधना मुश्किल या उदास न बन जाए, उसका स्नेह सिंचन शांतिदादा ने किया है। प्रभु के लिए कोई भी कार्य गुरु की आज्ञा से यदि करना हो, तो मन संपूर्ण रूप से पिरो कर, हृदय निचोड़ कर किस प्रकार प्रेमपूर्वक भक्ति अदा करनी चाहिए, यह बात अब हम सीखे, जबकि शांतिदादा ने तो यह बात शुरुआत में ही सिद्ध कर ली थी, हस्तगत थी और उन्होंने हमें उस राह पर अग्रसर किया...* ***कहीं नई शुरुआत करनी हो और माहात्म्य का सिंचन करना हो, तो साहेबदादा ने अपने साथ या अपनी ओर से शांतिदादा को हमेशा आगे किया है।*** *इसलिए हमें हमेशा उन्हें आगे रखना है... साहेबदादा इंगलैंड हों और शांतिदादा भारत में हों, तब यदि साहेबदादा का फोन आए तो यदि शांतिदादा कुर्सी पर बैठे हों, तो साहेबदादा को प्रत्यक्ष मान कर वे खड़े होकर फोन एटेन्ड करते हैं। इस प्रकार उन्होंने साहेबदादा को धारण किया है और अपनी साधुता की उच्च कक्षा का दर्शन कराया है। साहेबदादा से बात करते हुए वे इतने गद्गद् हो जाते हैं कि आँखों से अश्रु छलक जाते हैं और वे बोल ही नहीं पाते...* ***शांतिदादा के प्रेम से तैयार हुआ साधु हिंमतस्वामी हमारे लिए अद्भुत भेंट है...*** *शांतिदादा का सेवन करके हिंमतस्वामी सच्चे साधु बने हैं...* ***शांतिदादा के संपर्क में जो कोई आता है, उसके हृदय में वे भगवान पधरा देते हैं और उसे भगवान के साथ जोड़ते हैं।*** *अपने साथ बांध कर या जोड़ कर नहीं रखते। उसे स्वरूपों की महिमा समझाते हैं। स्वयं ब्रह्म के आकार से जीते हैं।* ***शांतिदादा, योगीबापा की बहुत बड़ी भेंट है... काकाजी ने शांतिदादा को आशीर्वाद दिया कि शांतिलाल शांति की गोली बाँटेंगे...*** *साधु को हमने साधु के रूप स्वीकार किया और अब हम उन्हें गुरु मान कर सेवन कर रहे हैं। इसलिए हमें आशीर्वाद प्राप्त हो रहे हैं...*

'नंद घेर आनंद भयो' *की उपमा देते बात करूँ, तो यमुना नदी के किनारे भगवान कृष्ण का जन्म हुआ था और उनके पिताजी उन्हें टोकरी में रख कर, यमुना नदी को लाँघ कर वृंदावन में रख आए थे। आज मुझे कहने का मन हो रहा है कि* ***कृष्ण जन्माष्टमी की देर रात्रि को दो बजे फ्लाईट पकड़ कर, यमुना नदी के उस पार से साक्षात् कृष्ण (प.पू. गुरुजी) हमारे घर आए हैं...*** *महाराज ने वचनामृत में कहा कि जैसा परोक्ष अवतारों के प्रति भाव है, ऐसा प्रगट के प्रति हो, तब सच में प्राप्ति होती है। कैसे* ***संयोग की बात है कि गुरुजी ने टिकट भी***

कृष्ण जन्माष्टमी के दिन की बुक कराई और दिल्ली से निकल कर लंदन आए। सो, हमारे मन से तो यह 'लालो' आज नंद महोत्सव मनाने के लिए आया है...

हमारी भक्ति में माहात्म्य बढ़े और प्रगट स्वरूपों का माहात्म्य समझ कर गुरुहरि साहेबदादा और गुरुहरि गुरुजी-मुकुंदजीवनस्वामीजी गुणातीत समाज के मुक्तों में जो कुटुंब-परिवार, प्रेम और आत्मीयता, अपनेपन का जो सिंचन कर रहे हैं, वह हम सभी के जीवन में साकार हो... हमने काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी मनाई और अब दिनकरभाई का अमृतपर्व मनाने जा रहे हैं। ***माहात्म्य जीवन का सच्चा अमृत है। जितना माहात्म्य बढ़ता है, उतना जीवन चिरंजीव बनता है।*** *ऐसा अमृतमय माहात्म्य हमारा जीवन बने...*

तत्पश्चात् **प.पू. दीदी** ने गुणातीत स्वरूपों एवं अनुपम मिशन के संतों के रूप में मिली अनमोल प्राप्ति का एहसास कराते हुए आशिष याचना की–

*...**काकाजी** जब-जब दिल्ली आते तो उन**की परावाणी में बार-बार एक ही बात आती** कि जाओ, **विद्यानगर में हमारी बहनों– ज्योति बहन, दीदी, तारा बहन को देखो। मोगरी में हमारे साहेब, अश्विनभाई, शांतिभाई को देखो।** भले हम दिल्ली से गुजरात ज्यादा नहीं जा पाते, लेकिन गुरुजी भी अकसर इन सबकी महिमा की बातें बताते हैं...*

*मुझे सत्संग में आए हुए करीब चालीस साल हुए। लेकिन अभी भी ऐसा होता है कि इन **गुणातीत स्वरूपों को हमने मायिकभाव से ही ज़्यादा देखा है।** नापातोली से ही ज्यादा देखा है। **इसका ज़्यादा रखा, मेरा नहीं रखा। इसकी तरफ देख कर हँसे, मेरी ओर तो देखा ही नहीं। ऐसी चीज़ों की गिनती में ही हमने अपना बहुत टाईम गँवाया है। इसलिए ऐसी प्राप्ति होने के बाद जो प्रगति होनी चाहिए, हम वो नहीं कर पाते...***

*__हिंमतस्वामीजी__ जैसे संतों का दासत्व निहार कर ऐसा होता है कि जब ये ऐसे हैं तो उन्होंने जिनका सेवन किया है, वे गुरु कैसे होंगे ? ये स्वरूप हमारे साथ खूब सस्ते बन कर हमारे साथ रहते हैं। वे हमें ख्याल ही नहीं आने देते कि वे कितने बड़े हैं। 'स्वामी की बातें' में है कि एक स्टीमर जा रही हो और समुद्र की कोई मछली हो, तो वो स्टीमर को देख कर ज्यादा से ज्यादा क्या सोच पाएगी ? यही कि ये मछली मुझ से थोड़ी ज्यादा बड़ी है। लेकिन, ये स्टीमर मेरे जैसी कितनी मछलियों को इस पार से उस पार पहुँचा सकेगी, उसकी तो वो कल्पना ही नहीं कर पाएगी। ऐसे हमें ख्याल आना चाहिए कि हमें कैसी समर्थ विभूतियाँ मिली हैं। अश्विनभाई आज जो बात कर रहे थे, यही बात गुरुजी भी अकसर कहते हैं कि ऐसे फंक्शन्स, ऐसे इकट्ठा होना, ये हम सब में और ज्यादा महिमा भरता जाता है। ये फंक्शन्स इसलिए होते हैं। **शांतिभाई की इमेज तो प्रभुस्वरूप की है ही, लेकिन आज उनकी महिमा सुन कर और आनंद उमड़ा कि ओहो इतने बड़े संत हमें मिले हैं।***

*लेकिन, गुरुजी दिल्ली में कहते हैं कि आप सबको लगाव ज़रूर है, लेकिन उनकी हमें जैसी महिमा होनी चाहिए या उनके संबंध वालों की भी जैसी महिमा होनी चाहिए वैसी नहीं है। अभी तो हमारी गाड़ी स्वरूप के प्रति ही मनुष्यभाव पर अटकी हुई है कि ऐसा क्यों करते हैं, ऐसा तो नहीं करना चाहिए। ऐसा करते तो अच्छा रहता। तो, मुक्तों को दिव्य मानने की बात तो बहुत दूर है। लेकिन, इन लोगों ने हमारे लिए संकल्प किया है... **'पूर्ण मळया छे, तेनो आनंद; पूर्ण करीने मूकशे।'***

तो, शांतिभाई के प्राकट्य दिन पर साहेबजी, अश्विनभाई, शांतिभाई और सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना है कि आप गुणातीत ज्ञान की अपनी गठरी और खोलते जाइए। जो आप हमें देना चाहते हैं, वो लेने के लिए हम तैयार तो नहीं हैं, लेकिन इतना भरोसा ज़रूर है कि आप हमें नहीं देंगे, तो और किसको देंगे ? तो ऐसा अनुग्रह आप ज़रूर बरसाना।

काकाजी कहते थे–मारे तमारा बधां पर लीलो अनुग्रह करवो छे. सो, हमें ऐसा वर्तना है कि ऐसे आशीर्वाद आपके हाथ से फिसल जाएँ कि इन लोगों को भगवान देने हैं, देने हैं और देने हैं...

संध्या आरती करके सभा की पूर्णाहुति हुई। रात को प्रसाद लेने के बाद प.पू. गुरुजी थोड़ी देर 'योगी प्रसाद' के बाहर बैठे और फोन द्वारा दिल्ली मंदिर में बात करके सेवकों-हरिभक्तों को आनंद करा कर आराम में गए।

दूसरे दिन **26 अगस्त** की सुबह डॅनहाम - अनुपम मिशन में पूजा - नाश्ता करने के बाद, प.पू. गुरुजी मुक्तों के साथ **पू. मिहिरभाई कापड़िया** के घर गए। उनकी भावना-उमंग अवर्णनीय थी। परदेश में रहते हुए भी उन्होंने **पू. धीरुभाई कापड़िया** एवं **पू. सुरेखा बहन** से प्राप्त उच्च संस्कारों का सिंचन अपने बच्चों में बखूबी किया है। यहाँ दोपहर को श्री ठाकुरजी का थाल करके प्रसाद लिया और आराम किया। सायं 4:30 बजे प.भ. मिहिरभाई के घर से विदा लेकर, लंदन सिटी टूर करते हुए **गुरुहरि योगीजी महाराज** की दृष्टि से पावन हुई **'थेम्स'** नदी में क्रूज़ द्वारा साईट सीईंग किया और फिर **'लंदन आई'** के एक कैप्स्यूल में बैठ कर **अपने लाड़ले नक्षु सहित** संतों - मुक्तों को दिव्य स्मृति दी। तत्पश्चात् 'लंदन आई' का थ्रीडी शो देखने के बाद **गुरुहरि काकाजी महाराज** के प्रासादिक **'सवॉय' हॉटल – जहाँ गुरुहरि काकाजी ने स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित श्री जवाहरलाल नेहरू को पार्टी दी थी** – का दर्शन करने के लिए गए। गुरुहरि काकाजी की स्मृति करते हुए वहीं धुन भी की और हॉट कॉफी पी। बीच रास्ते में गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रासादिक कॉलेज **'लंदन स्कूल ऑफ इक्नोमिक्स'** का दर्शन करते हुए अनुपम मिशन के लिए रवाना हुए। करीब रात पौने ग्यारह बजे अनुपम मिशन पहुँचे। इतनी देर रात को भी **प.पू. अश्विनभाई** सबकी राह देखते हुए प.पू. गुरुजी एवं संतों को भोजन कराने के लिए स्वयं बैठे। भोजन के पश्चात् देर तक फोन द्वारा भारत-दिल्ली में पू. वच्छराजजी, पू. प्रकाशचंदजी के साथ आनंदोब्रह्म करके प.पू. गुरुजी आराम में गए।

27 अगस्त की सुबह नित्यक्रम के बाद करीब दस बजे प.पू. गुरुजी **लॅस्टर** के मुक्तों को दर्शन का लाभ देने के लिए रवाना हुए। मिडवे में एक जगह ठहर कर अल्पाहार लिया और फिर लॅस्टर पहुँच कर **पू. अशोकभाई राठोड़** के घर गए। यहाँ धुन-भजन के बाद दोपहर करीब 2 बजे **पू. विमु मासी** के घर गए और श्री ठाकुरजी का थाल करके प्रसाद लिया। तत्पश्चात् **अक्षरनिवासी पू. नटुभाई** के घर आराम करने गए। पू. अशोकभाई राठोड़ के घर के पास ही बॅप्स का मंदिर है और पता चला कि प.पू. डॉक्टरस्वामीजी वहाँ विराजमान हैं। सो, वहाँ से मंज़ूरी लेकर, सायं करीब पाँच बजे प.पू. गुरुजी एवं चार-पाँच मुक्त **प.पू. डॉक्टरस्वामीजी का दर्शन करने** के लिए गए। पूर्वाश्रम में प.पू. डॉक्टरस्वामीजी तो प.पू. गुरुजी के घर पर जो रह चुके थे – उन स्मृतियों से प.पू. गुरुजी खूब भावुक भी थे। यहाँ से **गुरुहरि पप्पाजी के कृपापात्र पू. विठलानी साहेब** के घर गए। धुन, भजन, कथावार्ता का

लाभ देकर, अल्पाहार लेकर लंदन-अनुपम मिशन के लिए रवाना हुए। करीब ग्यारह बजे पहुँचने के बाद वे आराम में गए।

28 अगस्त की सुबह नाश्ते के बाद नौ बजे एक घंटे की दूरी पर प.पू. गुरुजी **'ऑक्सफोर्ड'** जाने के लिए निकले। **26 फरवरी 1830** को मुंबई के तत्कालीन गवर्नर **श्री जॉन माल्कम साहेब** की **भगवान स्वामिनारायण** से भेंट हुई थी। तब भगवान स्वामिनारायण ने उन्हें अपने स्वहस्त से **'शिक्षापत्री'** की प्रत स्मृति रूप दी थी। वही शिक्षापत्री आज भी ऑक्सफोर्ड युनीवर्सीटी के **'बॉडलियन'** पुस्तकालय में मूल्यवान ख़ज़ाने के रूप में रखी गई है। उसी का दर्शन करने के लिए प.पू. गुरुजी के साथ सभी गए। शिक्षापत्री का दर्शन करके **'ब्लॅकवॅल'** बुकशॉप में करीब आधे घंटे तक पुस्तकें देख व खरीद कर लंडन के लिए रवाना हुए।

लंदन में पू. किशोरभाई मास्टर्स की मातुश्री **पू. गजराबा** और पुत्री **पू. भावना बहन** के घर पहुँच कर श्री ठाकुरजी का थाल करके प्रसाद लिया। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी आराम करने के लिए अनुपम मिशन गए और अन्य सभी प.पू. दीदी के साथ गुणातीत ज्योत के सेवक एवं प.पू. ज्योति बहन की अंतेवासी सेविका **पू. प्रवीणा बहन** के पूर्वाश्रम के भाई **पू. सुरुभाई गोहिल** के फ्लॅट पर गए। वहाँ धुन-भजन करके अनुपम मिशन लौटे और सायं साढ़े पाँच बजे **'गुणातीत ज्योत'** में गए। थकान होने के कारण प.पू. गुरुजी नहीं जा पाए, परंतु पू. सुहृदस्वामीजी, पू. अक्षरस्वामीजी के साथ कुछ हरिभक्त एवं प.पू. दीदी व बहनें गईं। गुणातीत ज्योत में उपस्थित मुक्तों ने पुष्प हार एवं गुलदस्तों से सबका स्वागत किया। आरती करके **गुरुहरि पप्पाजी के मानसपुत्र पू. दिलीपभाई भोजाणी** संतों के साथ गोष्ठि करने बैठे जिसमें उन्होंने गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी एवं प.पू. गुरुजी के साथ के अपने प्रसंग बताए। दूसरी ओर बहनों की छोटी सभा हुई जिसमें **प.पू. दीदी** ने प्रार्थना करते हुए कहा– *गुरुजी अकसर कहते हैं कि यदि काकाजी-पप्पाजी मेरे जीवन में नहीं आते, तो मेरी घड़ाई कौन करता? इसी प्रकार हम जो जहाँ जिस भी केन्द्र में रहते हैं, उनके जीवन में यदि गुणातीत पुरुषों ने स्थान नहीं लिया होता तो...? लॅस्टर में **विठलानी साहेब से गुरुजी ने कल कहा ही था कि काकाजी-पप्पाजी ने विदेश में जहाँ सत्संग के बीज बोए, वहाँ आज वटवृक्ष बन गया!** सो, **हम कभी भी इन नींव के पुरुषों को न भूलें...***

अंत में आरती के बाद ज्योत की बहनों द्वारा बनाया गया विशिष्ट प्रसाद सभी ने लिया और गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी एवं प.पू. गुरुजी की दिव्य स्मृतियाँ कीं। करीब साढ़े नौ बजे अनुपम मिशन जाने के लिए निकले। रात्रि को प.पू. गुरुजी ने थोड़ी देर लेखन कार्य किया और अनुपम मिशन के साधक भाई पू. भूपाभाई के साथ ज्ञानगोष्ठि करके आराम में गए।

29 अगस्त की सुबह नाश्ते के बाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का दर्शन करके साढ़े आठ बजे प.पू. गुरुजी एवं सभी हिथ्रो एयरपोर्ट जाने के लिए रवाना हुए। **पू. हिंमतस्वामी** ने स्वयं गाड़ी ड्राईव की और प.पू. गुरुजी के साथ उसी गाड़ी में **प.पू. अश्विनभाई** भी बैठे। हिथ्रो एयरपोर्ट के टर्मिनल 3 पर पहुँचने बाद जब तक चॅक इन नहीं हो गया, तब तक तकरीबन डेढ़ घंटे तक प.पू. अश्विनभाई, पू. हिंमतभाई एवं पू. वीनूभाई नकारजा वहीं मौज़ूद रहे और सिक्योरिटी चॅक के गेट तक छोड़ने के लिए आए। लंदन के लोकल समय के अनुसार दोपहर करीब एक बजे ब्रिटिश एयरवेज़ 1542 टेक ऑफ हुई और पौने नौ घंटे का सफ़र तै करके लोकल समय के अनुसार दोपहर तीन

बजे **शिकागो** के 'ओहारे' एयरपोर्ट पहुँचे। बहुत ही आनंद की बात हुई कि लंदन-गुणातीत ज्योत से **पू. दीना बहन** एवं **पू. ऊषा बहन** भी इसी फ्लाईट से आईं। पॅरिस से **पू. अंकुरभाई लाड** एवं उनकी पत्नी **पू. वर्षा भाभी** तकरीबन उसी समय फ्रांस-पॅरिस की फ्लाईट से और भारत-दिल्ली से **पू. विपिन यादव** पहुँचे थे। सो, वे भी प.पू. गुरुजी एवं मुक्तों के साथ सम्मिलित हो गए। लॅगेज लेने के बाद करीब साढ़े चार बजे बाहर निकले, तो **प.पू. दिनकरभाई, प.पू. महेन्द्र बापु, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. पिन्टुभाई** के साथ शिकागो के करीब पच्चीस मुक्त स्वागत करते हुए द्वार पर खड़े थे और तालियाँ बजा कर **'वॅलकम होम'** के गुब्बारों से अभिनंदन किया। एयरपोर्ट से सीधा डॅसप्लेन, मॅरियन स्ट्रीट में स्थित 'अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण स्पीरीच्युअल सॅन्टर' गए। वहाँ भी पवई के **पू. राजुभाई ठक्कर, पू. अश्विनभाई, पू. लीलू बहन, पू. कृपा बहन** के सहित उपस्थित कई मुक्तों ने स्वागत किया। स्टेज पर **'अक्षरदेरी'** के प्रतीक रूप सजावट की थी, जिसमें भगवान स्वामिनारायण सहित सभी गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियाँ स्थापित की थी। प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकर अंकल एवं प.पू. भरतभाई के सान्निध्य में करीब बीस मिनिट धुन हुई। तत्पश्चात् **प.पू. दिनकर अंकल** ने हर्ष व्यक्त करते हुए **प.पू. कांतिकाका के प्राकट्य दिन** की स्मृति की और गुजराती भजन की निम्न पंक्ति द्वारा प्रार्थना करने की सभी मुक्तों को सूझ दी–

दिव्यता जोवा दृष्टि दे, जोऊँ तुजमय सृष्टिने, सर्व कर्ता ने प्रेरक तू सत्य स्वरूप नयनगोचर तू, प्रेमे वंदन प्रेम वंदन पुरुषोत्तमने... और फिर प.पू. गुरुजी से आशीर्वाद देने के लिए कहा।

लंदन से शिकागो की टोटल फ्लाईट नौ घंटे की थी और आगे-पीछे के समय की गणना करें, तो 82 वर्षीय **प.पू. गुरुजी** तकरीबन तेरह घंटे का सफ़र तय करके आए थे। लेकिन, सत्संग का सही अर्थ बताती उनकी निम्न निर्मल वाणी से एहसास हुआ कि प्रभुधारक ऐसी दिव्य विभूति देहभाव से कैसी परे होती हैं–

स्वामी की पहले प्रकरण की पहली बात है कि भगवान के भक्तों की महिमा सुननी व गानी... महिमा समझने के अतिरिक्त अन्य कोई साधन भी नहीं है। ***दिनकरभाई महिमा के ऐसे स्वरूप हैं।*** *अतः सभी को सहज होता है कि यदि काकाजी को राज़ी करना हो, तो हमें दिनकरभाई के किसी भी प्रसंग पर हाज़िर हो ही जाना चाहिए। ऐसे* ***अपनेपन का हमारा यह प्रसंग है। दिनकरभाई के प्राकट्य दिन पर सभी को ऐसा होता है कि मानो हम सभी का प्राकट्य दिन है।*** *बस, यह भावना बढ़ती ही रहे यही उद्यम करना है...*

बापा जब अफ्रीका गए थे, तब वहाँ से ***काकाजी ने*** *पत्र में लिख कर भेजा था कि* ***'विकास'*** *बहुत हुआ। विकास अर्थात् निष्ठा वाले हरिभक्त कितने हुए? यह उस समय की धारणा थी। अब* ***आत्मबुद्धि-प्रीति, कुटुंबभावना वाला समाज जितना हुआ–वही सच्चा सत्संग है। पू. दिनकरभाई ऐसे कुटुंब तैयार करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं।*** *यहाँ हॉल खचाखच भरा दिखाई नहीं दे रहा... सिंह जैसे मरजीवे, भगवान और उनके भक्तों के लिए जीवन जीने वाले एकत्र हुए हैं... सुबह से लेकर रात तक दिनकरभाई के जीवन में सत्संग के सिवा अन्य कोई प्रवृत्ति दिखाई नहीं देती। फोन की शुरुआत ही सत्संग की बात से होती है। एबोट लेबोरॅटरी के वे डायरॅक्टर हैं, परंतु उससे भी विशेष दिनकरभाई के लिए सत्संग है। ऐसा सत्संग कोई अलग चीज़ है। भगवान और भगवान के भक्तों में आत्मबुद्धि और प्रीति–जैसे अपने कुटुंब वालों के साथ होती है!* ***प्रगट के संबंध वाले***

मुक्तों - हरिभक्तों एवं उनके संबंध वाले सभी को देख कर ऐसा हो कि अहोहो ! ये तो हमारे... ऐसी उमंग हो जाए तो मानना कि हमें सत्संग हुआ है। *ऐसा सत्संग करते रहें ऐसे आशीर्वाद भरतभाई, दिनकरभाई दें ऐसी प्रार्थना !*

प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद के साथ स्वागत सभा समाप्त हुई और प्रसाद लेकर सभी **'लिबर्टी विल'** में स्थित **पू. डॉ. सपनभाई शाह** के फार्म हाऊस के लिए रवाना हुए। पू. डॉ. सपनभाई एवं उनकी धर्मपत्नी **पू. डॉ. रचना** स्वागत हेतु वहीं मौज़ूद थे। **दस दिन** प.पू. गुरुजी मुक्तों के साथ यहीं रहे। साथ में प.पू. दिनकरभाई भी रहे। **यहाँ गुरुहरि काकाजी की प्रेरणा से प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. महेन्द्र बापु द्वारा अमेरिका की भूमि पर बोए माहात्म्य के अकुंरों का अद्‌भुत दर्शन हुआ।** वैसे तो पू. डॉ. सपनभाई अपने परिवार के साथ शिकागो के डाउन टाऊन में एक फ्लॅट में रहते हैं। पर, इसी दौरान उनके फ्लॅट का रिनोवेशन हो रहा था। सो, वे अपने फार्म हाऊस पर ठहरे थे। लेकिन अब जब प.पू. गुरुजी सभी मुक्तों के साथ यहाँ ठहरने वाले थे, तो वे अपनी पत्नी पू. डॉ. रचना के साथ एक-दो दिन हॉटल में ठहरे और फिर अपने किसी मित्र या रिश्तेदार के यहाँ ठहरने गए ! हैरानी की बात थी कि इस बात का उन्होंने किसी से जिक्र भी नहीं किया व न ही अपने वर्तन से तनिक भी झलकने दिया। फार्म हाऊस पर भी प.पू. गुरुजी एवं मुक्तों की सुविधानुसार बहुत ही अच्छी व्यवस्था की हुई थी। पू. डॉ. सपनभाई एवं पू. डॉ. रचना की भावना कैसी शुद्ध होगी कि प.पू. गुरुजी एवं सभी को इन **दस दिन ऐसा ही प्रतीत हुआ कि मानो वे दिल्ली मंदिर-अपने घर में हैं।** सच, **ऐसे मुक्त ही सत्पुरुष का गौरव बन कर एक मिसाल कायम करते हैं।**

फार्म हाऊस पर प.पू. गुरुजी और प.पू. दिनकरभाई ज्ञानगोष्ठि करके रात को ग्यारह बजे के करीब विश्राम करने गए।

फ्लाईट की थकान दूर करके **30 अगस्त** – शुक्रवार की सुबह प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई और सभी आराम से तैयार हुए। प.पू. गुरुजी का दर्शन, समागम एवं मुक्तों के साथ सेवा का लाभ लेने अमेरिका में रहते **पू. आशिष जानी** अपनी पत्नी **पू. अंकिता** के साथ एवं **पू. इक्क्षेण्य संघवी** फार्म हाऊस पर ठहरने आए।

गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति करते हुए प.पू. दिनकरभाई अकसर कहते हैं– ***आनंद करो, भई आनंद करो...*** सो, उनके इस वचन को मूर्तस्वरूप देते हुए **पू. डॉ. सपनभाई** के माता-पिता **पू. सुरेशभाई** एवं **पू. रोहिणी बहन** सहित पूरे परिवार ने **प.पू. दिनकरभाई** के **अमृत पर्व** का मंगल आरंभ **'आनंदोब्रह्म'** से किया और... दोपहर को कई गेम्स को अध्यात्म से जोड़ कर प्रगट प्रभु के संबंध की महिमा जानी। तकरीबन ढाई सौ हरिभक्तों ने यहीं विभिन्न भारतीय व्यंजनों का प्रसाद लिया। सायं अल्पाहार के बाद **पू. अमितभाई - पू. दर्शनभाई (यू.एस.ए.)** एवं **पू. अंकुरभाई (पॅरिस)** ने विविध भजनों से पूरा वातावरण दिव्यता से भर दिया। इसी दौरान लंदन से प.पू. अश्विनभाई एवं पू. हिंमतस्वामीजी भी मुक्तों के साथ पधारे। भजन के बाद स्वागत उद्‌बोधन से **पू. पंकजभाई** ने महिमागान किया। तत्पश्चात् **प.पू. भरतभाई** ने प.पू. दिनकरभाई की विशेषताओं को उजागर किया –

...दिनकरभाई की जो पावर है – सबको समझाने की उनकी जो रीति है, वो अद्‌भुत है। सही अर्थ में तो दिनकरभाई जैसे सच्चे संत जो हमें मिले हैं, वही हमारा बहुत बड़ा भाग्य है। ***काकाजी कहते*** *– सच्चे संत मिलना कठिन हैं और ऐसे संत मिल भी जाएँ, तो उन्हें पहचानना मुश्किल है। यूँ दिनकरभाई से कोई मिले, तो उन्हें*

पहचान नहीं पाएगा। लेकिन, उनके साथ रहेंगे, उनकी बातें-ज्ञान सुनेंगे तो पता चलेगा कि ये कोई अलग व्यक्ति हैं। चौबीस घंटों में उनकी एक भी पल ऐसी नहीं जाती है, जिसमें वे भगवान के साथ एक भी पल का कनेक्शन तोड़ेंगे। अखंड स्वामिनारायण का मंत्र तो चलता ही है, लेकिन साथ ही साथ जो भी उनके संपर्क में आते हैं, उसका भला हो, वो कैसे आगे बढ़े, उसमें जो कसर है वो निकल जाए और आगे जाए... बस अन्य खुश हों, वही उनका उद्यम है... दिनकरभाई में बहुत गुण हैं, लेकिन गुण से अतिरिक्त ***गुणातीतभाव में रहना, हर एक में भगवान का स्वरूप देख कर जीवन जीना, यह कठिन से कठिन जीवनशैली उन्होंने अपनाई है...*** *कोई हमारा दोष दिखाए वो तो ठीक है, लेकिन उसे टालने का बल भी दें-भजन करें ऐसे दिनकरभाई को हम कोटि कोटि प्रणाम करते हैं। हे दिनकरभाई ! हम आपके साथ ऐसे निर्दोषभाव, अहोभाव, दिव्यभाव से जुड़े रहें और आप व आपके संबंध वाले सभी को ऐसा ही दिव्य मानते रहें–यही प्रार्थना।*

प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा – *...काकाजी सभा में पूछते थे–तुम सुखीप्रसाद आनंदीलाल हो या दुःखीप्रसाद – मुंझवणलाल हो ? जैसे भरतभाई ने बताया और हम सब मानते हैं कि दिनकरभाई ने काकाजी को अखंड रखा है। इसलिए स्वाभाविक है कि वे हम सभी को आनंदीलाल सुखीप्रसाद रहने की चाहना रखेंगे। हम हमेशा आनंदीलाल सुखीप्रसाद बने रहें, उसका एक आसान तरीका है। लेकिन, वह हम अपनाते नहीं हैं, इसलिए हमेशा परेशानी या उलझन में रहते हैं... जैसे भरतभाई ने दिनकरभाई के बारे में सारी बात की और हम सभी को ख्याल भी है और कइयों ने बात भी करी कि* ***दिनकरभाई*** *सभी से मिलते-करते हैं, सभी को अपना मानते हैं। लेकिन,* ***काकाजी की तरह ही सभी के संगी होने के बावजूद बिलकुल असंगी और निर्लेप हैं।*** *उनके बीहेवियर से ख्याल पड़ जाता है कि उन्हें किसी भी प्रकार का पाश नहीं रहता। पाश न रहे, वह बहुत बड़ी कक्षा है। हम किसी से तकरार करके आए होंगे, तो एकदम कम्फर्टेबल नहीं बैठ पाएँगे क्योंकि वो याद आता रहता है।* ***पू. गोरधनकाका ने यह बात ढूँढी थी कि काकाजी सभी के संगी होते हुए भी केवल निर्लेप हैं।*** *निर्लेप का अर्थ यह नहीं कि उन्हें किसी भी प्रकार का कन्सर्न नहीं। उनका योगीजी महाराज के साथ पूरा कन्सर्न था। इसलिए वे मानते थे कि जो भी होता है, वो मेरे 'प्रगट प्रभु' करते हैं और वे सर्वोपरि हैं।* ***काकाजी के जीवन की ये दो बातें हम समझ लें कि हमें मिले स्वरूप सर्वोपरि प्रभु को अखंड धारण किए हुए हैं और सर्वोपरि भाव से वर्तते हैं। उनके होते हुए काल, कर्म और माया कर्ता-हर्ता नहीं हैं, बल्कि वे स्वयं हैं और वे मेरे हैं जो मेरा कभी भी अहित नहीं होने देंगे।***

यही भाव आज हम दृढ़ करके जाएँ कि दिनकरभाई द्वारा काकाजी सर्वोपरि भाव से वर्तते हैं, प्रगट रहते हैं और ऐसे दिनकरभाई को कोई भेदभाव नहीं है। जैसे हवा सर्वत्र है, इसी प्रकार ऐसे ब्रह्मस्वरूप संत सर्वत्र हैं, प्रगट, मूर्तिमान और साकार हैं। यह बात विरोधाभासी कही जाए कि जो सर्वत्र हैं, उन्हें साकार कैसे कह सकते हैं ? निराकार हों, तो वे सर्वत्र बन सकते हैं। सो, काकाजी कई बार कहते कि यह बात तुम्हें समझ नहीं आएगी। पर, हमें उनकी बात का भरोसा करना पड़े कि यह बात ऐसी ही है। तब ही हमने बड़े पुरुष को माना कहा जाए। दिनकरभाई या ऐसे पुरुषों के साथ हमारा लगाव टिका रहे, बरकरार रहे... सब चीज़ का इलाज़ एक ही है कि धुन किया करें। काकाजी कितनी धुन कराते थे... ***काकाजी जैसी ही समता दिनकरभाई में दिखाई देती है। तुम उन्हें***

सहयोग दो या न दो... *ऐसे पुरुषों की स्मृति किया करें कि ऐसे पुरुषों ने हमारे लिए कितना परिश्रम किया है। हम भले कुछ न कर सकें, लेकिन इन पुरुषों के प्रति एक सद्‌भाव तो रखें ही कि भले मुझे इनकी बात समझ नहीं आती, पर ये बहुत अच्छे हैं...* ***दिनकर अंकल का अमृतपर्व बहुत अच्छा है, बस यह भाव रखेंगे तो अक्षररूप बन जाएँगे। गुणातीतभाव में दाखिल हो जाएँगे...***

अंत में **प.पू. अश्विनभाई** ने आशिष वर्षा की–

साहेब दादा की आज्ञा से मुझे दिनकर अंकल के अमृतपर्व में हाज़िर रहने का सद्‌भाग्य प्राप्त हुआ... दिनकरभाई ने आज आनंदोत्सव में सुहृदभाव की एक अनूठी बात समझाई। भरतभाई ने इसे समझाने के लिए बताया कि खेल में प्रतियोगिता हो रही थी। स्वाभाविक रीति से सभी को प्रथम आने की और प्रथम इनाम प्राप्त करने की इच्छा होती है। लेकिन, बड़े पुरुषों के जीवन में अध्यात्म इतना निहित है कि ऐसे खेल इत्यादि में भी दिनकरभाई ने प्रार्थना करना सिखाया कि ***मेरा नंबर पहला न आए, ताकि मेरे साथ के जो सुहृद साथीदार हैं, वे प्रथम आएँ, वे आगे रहें और उन्हें इनाम मिले। ऐसा अद्‌भुत संदेश दिनकर अंकल ने हमें खेल द्वारा समझा दिया है। अपने जीवन व्यवहार में भी वे ऐसे ही रहते हैं।*** *आज मज़ाक-मस्ती आनंद के साथ-साथ* ***प.पू. गुरुजी*** *ने कहा कि* ***भगवान को धार कर, भगवानमय बन कर व्यक्ति जो भी क्रिया करे, जिसका सतत अनुसंधान भगवान के साथ है, उसने भगवान और काकाजी के मूलभूत सिद्धांत-सूत्र को जाना कहा जाए... दिनकर अंकल हमारे और सभी के हैं,*** *सो उनके अमृतपर्व पर शुभेच्छा करते हैं कि उनकी तबियत खूब-खूब अच्छी रहे, ताकि वे भक्तों को अध्यात्म का मर्म दे सकें।* ***गुरुहरि साहेब दादा एवं समग्र गुणातीत समाज के साथ उनकी जो आत्मबुद्धि और प्रीति है, वो उनके काकाजीमय, पप्पाजीमय और स्वामीजीमय होने का दर्शन कराती है।*** *हम सभी प्रार्थना करें कि ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज, काकाजी-पप्पाजी महाराज और स्वामीजी महाराज ने हमें जो ये विभूति दी हैं, उन्हें हम सतत दृष्टि समक्ष रखें। अपने प्रगट प्रभु को दृष्टिसमक्ष रख कर जी रहे ऐसे प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकर अंकल और प.पू. भरतभाई की इस प्रकार महिमा समझ कर, उनका समागम और भक्तों की सेवा करें–ऐसा अच्छा बुद्धियोग हमें दें...*

योगीजी महाराज कहते थे कि भगवान प्रसन्न होते हैं, तो वे अच्छे साधु का संग देते हैं। अच्छे साधु के संग के साथ-साथ अच्छा बुद्धियोग भी देते हैं, ताकि उस संत की महिमा समझ सकें। सो, अमृतपर्व निमित्त दिनकर अंकल के गुणगान के साथ-साथ प्रार्थना करें कि हमें ऐसा बुद्धियोग दें कि उनकी महिमा समझ कर उनका सेवन कर सकें और वे जिस सुख के भोक्ता बने हैं, उसके हम भी बनें। ऐसे बढ़िया आशीवाद श्री ठाकुरजी, गुणातीत स्वरूप एवं अमृतपर्व के निमित्त दिनकर अंकल दें!

प.पू. अश्विनभाई के आशीर्वचन के बाद सभी को प.पू. दिनकरभाई की विभिन्न मुद्रा वाली 'बर्थ डे कॅप' दी गई और केक कटिंग करके सभा का समापन हुआ। फिर सभी ने पीज़ा का प्रसाद लिया। देर रात्रि तक फार्म हाउस के हॉल में बैठ कर, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई मुक्तों को अपनी स्मृति देकर आराम में गए।

31 अगस्त – शनिवार की सुबह नाश्ता करके प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई एवं सभी **'वॉकिगन मंदिर'** के लिए रवाना हुए। यहीं प.पू. दिनकरभाई का प्रासादिक निवासस्थान है।

'धन्य है वृंदावन वट वृक्ष की छाया... जहाँ श्रीहरि - गुरुहरि काकाजी महाराज बिराजते रे...'

ऐसे तीर्थधाम में प्रतिष्ठित मूर्तियों के लिए गुरुहरि काकाजी द्वारा दिए आशीर्वाद की स्मृति करते हुए, प.पू. दिनकरभाई ने गुरुहरि काकाजी के साथ के अपने अनुभवों का विस्तृत वर्णन किया। उपस्थित सभी मुक्तों को एहसास हुआ कि प.पू. दिनकरभाई भले ही बहुत कम वर्ष एवं समय गुरुहरि काकाजी के स्थूल सान्निध्य में रहे, लेकिन उन्होंने गुरुहरि काकाजी को पूर्णतः आत्मसात् किया है। मंदिर में ही रहतीं शिकागो सत्संग की नींव समान **पू. कुसुमबा** जो कि अत्यधिक बीमार हैं, उनसे प.पू. दीदी मिलीं। प.पू. दिनकरभाई ने बताया कि प.पू. काकाजी ने जब श्रीजी महाराज की मूर्ति यहाँ पधराई थी, तब आशीर्वाद दिया था कि जो भी इसके सामने **बीस मिनिट** धुन करेगा, उसका कार्य महाराज करेंगे ही... सो, **प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि काकाजी - पप्पाजी के सिक्के जारी कराने के लिए 'धुन' कराई।** तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई की निश्रा में करीब बीस मिनिट धुन करके, यहाँ से सभी **पू. नीता बहन** के घर गए। दोपहर को श्री ठाकुरजी के थाल का प्रसाद लेकर फार्म हाऊस लौट कर, दोपहर का आराम किया। सायं 5 बजे फार्म हाऊस से निकल कर सायं 6:00 बजे **'धी मॅडोज़ क्लब बैंक्वेट हॉल'** पहुँचे। जहाँ गुणातीत स्वरूपों के प्रत्यक्ष दर्शन से **'गाला नाईट'** मनाने वाले थे। लाल कालीन पर पुष्पों द्वारा गुणातीत स्वरूपों का शुभ स्वागत हुआ। प.पू. दिनकरभाई के अमृत पर्व को गौरवपूर्ण दिव्य स्मृतिमय बनाने हेतु, **पू. विराटभाई** (पिन्टूभाई) ने गुणातीत स्वरूपों का तहेदिल से धन्यवाद किया। तत्पश्चात् तकरीबन चालीस मिनिट की विडियो फुटेज़ 'सहज दृष्टि से गुणातीत अनुभूति' द्वारा प.पू. दिनकरभाई के जीवन एवं कार्य के अद्भुत वर्णन से सभी कृतार्थ हुए। गुरुहरि काकाजी महाराज ने वाक़ई अमेरिका के मुक्तों की जीवनडोर अपने जैसे ही समर्थ सारथी को सौंप कर उन्हें निहाल कर दिया है, इस तथ्य की सभी को प्रतीति हुई। तदोपरांत विडियो प्रेज़न्टेशन को तैयार करने वाले मुक्तों का धन्यवाद एवं गुणातीत स्वरूपों - मुक्तों का स्वागत करते हुए **प.पू. वशीभाई** ने दिनकरभाई की कई विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए माहात्म्यगान किया। इसी दौरान ख़ास सभी को दर्शन व आशीर्वाद देने के लिए **प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी** पधारे... प.पू. वशीभाई ने अपना वक्तव्य जारी रखते हुए कहा–

*...शुरुआत में जब हम दिनकरभाई के अमृत पर्व का छोटा-सा कार्ड लेकर **स्वामीजी** के पास गए थे। तब, उन्होंने कार्ड पर तीन बार उंगली ठोकते हुए कहा–**काकाजी का बेनमून सर्जन !***

...महाराज ने वचनामृत गढडा प्रथम 27 में आशीर्वाद दिया है– धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति युक्त जो भक्त है, उसके हृदय में भगवान अखंड निवास करके रहते हैं। दिनकरभाई ने ऐसी स्थिति प्राप्त की है और उनके संपर्क में जो आता है, उसे भी ऐसी स्थिति प्राप्त करने का मन हो जाता है...

***दिनकरभाई के जीवन में देखा है कि कैसा भी प्रसंग आए, तब वे हमेशा शांत व स्थिर रहते हैं।** उन्हें किसी भी प्रकार की हबड़ा-तबड़ी या भागादौड़ी नहीं होती... दिनकरभाई ने ऐसा स्वरूपलक्षी ज्ञान प्राप्त किया है। **कसौटी होने पर ज्ञान टिका रहे, वो सच्चा ज्ञान है और दिनकरभाई ने ऐसा ज्ञान प्राप्त किया है।** तो, दिनकरभाई से प्रार्थना है कि आप जिस प्रकार जीवन जीते हैं, वो हम आत्मसात् करें। **दिनकरभाई की सूक्ष्म भक्ति इतनी है कि जिसका वर्णन करना मुश्किल है। उनका अपना अस्तित्व ही नहीं है – ऐसे भाव से जीते हैं।** तो, हे स्वामीजी ! सभी भक्तों की ओर से आपके चरणों में प्रार्थना है कि हमारा अपना व्यक्तिरूप अस्तित्व*

27 अक्तुबर – दीपावली के अवसर पर शारदा पूजन की महापूजा...

28 अक्तुबर – हिन्दू नूतन वर्ष निमित्त स्नेहमिलन...

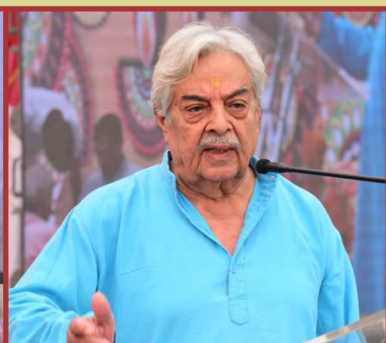

अन्नकूट का भक्तिपूर्ण कलात्मक दर्शन...

स्मृतियों की दौलत ही मारी जीवन पूँजी...
से पके भक्तों का थाल हे प्रभु जिमो...
आप यहाँ आए हो न?

अनुपम मिशन – लंडन की स्मृतियाँ...

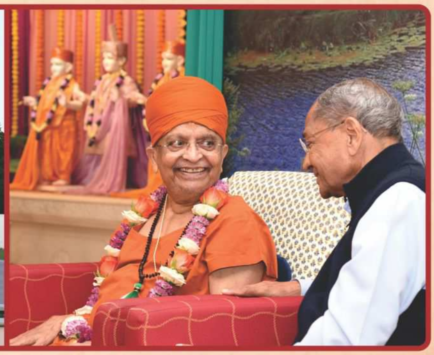

पू. मिहिरभाई कापड़िया के घर...

गुरुहरि काकाजी के प्रासादिक हॉटल ' सवॉय ' पर...

लॅस्टर के मुक्तों की भावना ग्रहण करते...

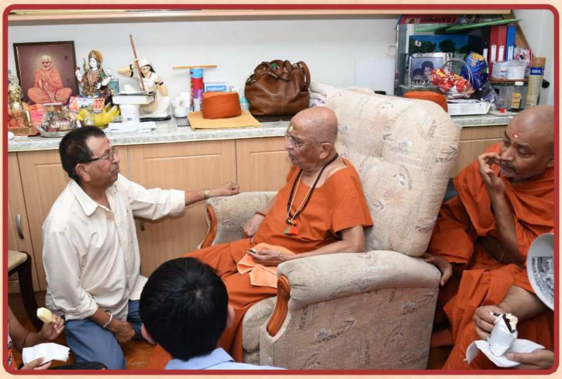

' लंडन आई ' को पावन करते प.पू. गुरुजी...

' प्रगट प्रभु '
और
उनके ' प्रियजनों ' की
मूर्ति पाने के लिए
क्या नहीं कर सकते...

शिक्षापत्री दर्शन – ऑक्सफोर्ड युनीवर्सीटी के ' बॉडलियन ' पुस्तकालय में...

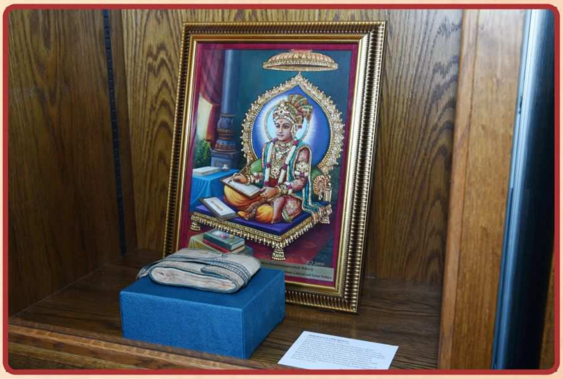

पू. गजराबा एवं पू. सुरुभाई के घर

लंदन ' गुणातीत ज्योत ' में दर्शन

शिकागो – ओहारे एयरपोर्ट पर सुस्वागतम्

पू. डॉ. सपनभाई शाह के फार्म हाऊस पर प.पू. दिनकरभाई के अमृत पर्व का शुभारंभ

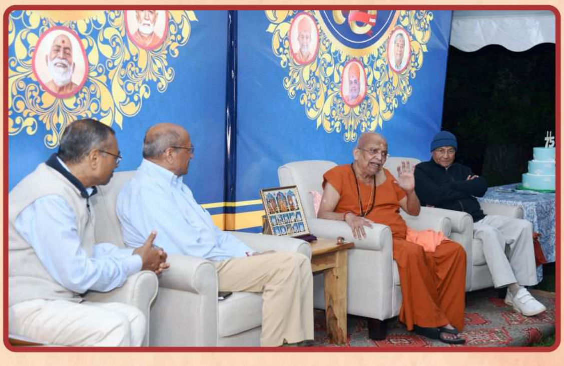

प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी की निश्रा में ‘ गाला नाईट ’

डॅसप्लेन मंदिर में प.पू. दिनकरभाई के 'अमृत पर्व शिविर' का प्रथम सत्र

अमृतपर्व निमित्त ' बहनों की सभा '

प.पू. दिनकरभाई के अमृत पर्व की पूर्णाहुति सभा

डॅसप्लेन मंदिर

तीर्थधाम 'वॉकिंगन मंदिर' का दर्शन...

शिकागो मंडल द्वारा भावभरी विदाई...

ही नहीं रहे और... आपने जो दासत्व का मिशन उठाया है कि 'दास का दास...' इस मार्ग पर चल कर आपके अंतर में ठंडक करें। आपने, साहेबजी ने, गुरुजी ने बहुत परिश्रम किया है, परंतु अब हमारी बारी है... दिनकरभाई के अमृतपर्व निमित्त आज आप सबको ऐसे आशीर्वाद दें...

प.पू. वशीभाई की प्रार्थना सुन कर प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी, प.पू. दिनकरभाई को साथ में बिठा कर स्टेज पर विराजमान हुए। तब **प.पू. दिनकरभाई** ने प्रार्थना करते हुए कहा–

आज बहुत भाग्य का दिन है क्योंकि स्वामीजी के साक्षात् दर्शन हो रहे हैं। वशीभाई ने कहा कि स्वामीजी 87 वर्ष के हैं, लेकिन 25 साल के लगते हैं और ऐसे ही दयालु! हमारे लिए आपको बहुत रहना है। दिल्ली से गुरुजी इतना लंबा सफ़र तय करके संतों-बहनों को साथ में लाए। जैसे कि वशीभाई ने बताया कि अश्विन दादा एक महीना पहले यहाँ अमेरिका से लंदन गए थे, लेकिन साहेब दादा की आज्ञा से लंदन से दोबारा यहाँ आए हैं। इंडिया मोगरी से साहेब दादा ने तो कहा था कि मैं भी वहाँ आऊँ ? तब हमने साहेब दादा से प्रार्थना करते हुए कहा था कि यदि आप आशीर्वाद देने के लिए शिकागो आओ, तो हमें सौ प्रतिशत आपका आशीर्वाद मिलेगा। लेकिन, आप यदि अश्विन दादा, जयेशभाई या जिसे भी यहाँ भेजेंगे तो आपकी प्रसन्नता का डेढ़ सौ प्रतिशत आशीर्वाद मिलेगा। आज अश्विन दादा आए हैं, तो साहेब दादा बहुत राज़ी हैं। आज के अवसर पर स्वामीजी के आशीर्वाद लेने हैं। स्वामीजी की कृपादृष्टि हम पर हो...

फिर **प.पू. स्वामीजी** ने प.पू. दिनकरभाई पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आशिष वर्षा की–

...भगवान पृथ्वी पर आए, लेकिन साथ ही उन्होंने आशीर्वाद दिया कि माँ जैसे साधु के द्वारा वे अखंड रहेंगे। माँ जैसे साधु के संबंध से इंद्रियों-अंतःकरण विवेकी, शुद्ध, पवित्र और निर्मल बनते हैं। माँ जैसे साधु ज्योत से ज्योत प्रज्वलित करके जाते हैं। ***इस संप्रदाय की यही बड़ी से बड़ी विशेषता है। भगवान स्वामिनारायण ने अपनी प्रणालिका को जीवंत रखा है,*** *जिसके फलस्वरूप हम आनंद में रह सकते हैं। साधु जीवनप्रवाह का स्वरूप है। भगवान स्वामिनारायण के अंतर्धान होने के बाद भगतजी महाराज, जागास्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी-पप्पाजी, प्रमुखस्वामी महाराज, महंतस्वामी महाराज, डॉक्टरस्वामीजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामीजी जैसे सनातन दिव्य पुरुषों द्वारा भगवान अखंड विचरण करते रहते हैं। ऐसे जीवंत पुरुषों द्वारा भगवान पृथ्वी पर रहते हैं। जिससे बड़ा फ़ायदा होता है कि जो स्वयं निष्कामी होंगे, वे अन्यों को निष्कामी बनाएँगे। जो स्वयं निष्क्रोधी होंगे, वे अन्यों को क्रोध रहित बनाएँगे। जो निर्मानी होंगे, वे निर्दंभ, पवित्र, दासत्वभक्ति से युक्त सनातन पुरुष तैयार करेंगे।*

भगवान स्वामिनारायण की यह प्रणालिका इतनी जीवंत है कि गीता में और गुणातीतानंदस्वामी के कहे अनुसार नरक के द्वार–काम, क्रोध, लोभ, हठ, मान और ईर्ष्या को निकालती है... आप सभी को धन्यवाद कि ऐसे संतों को पहचान लिया। काकाजी-पप्पाजी को कोई स्वार्थ नहीं था। इनके योग में आप आए, जिसके फलस्वरूप आपकी यात्रा सहज और सरल बनी। दीपक से दीपक जो प्रज्वलित करे, वो साधु! काकाजी ऐसे निष्कामी पुरुष थे। गुरुजी जैसे मस्त फ़कीर का योग दिया। भरतभाई जैसे संतों का समाज उत्पन्न हुआ। इतना ही याद रखना कि माँ जैसे जीवंत साधु के साथ बाप-बेटे का संबंध स्थापित कर लेना। हमें काम, क्रोध और लोभ जैसे सौ दुश्मन चिपके हुए

हैं... तो हमारा इतना ही फर्ज़ है कि ऐसे संतों के साथ हम मैत्री बढ़ाएँ। हम से और कुछ नहीं हो सकता। आँख को योग्य देखता, कान को योग्य सुनता, जीभ को योग्य बोलता बनाना है। हृदय में देखेंगे तो निरंतर गंद भरी हुई है। सो, हम सभी को जाग्रत बन कर अपनी आत्मा को निर्दंभ, निर्दोष, पवित्र, निष्कामी बना कर सुखी करना है... पूर्व के बलिष्ठ संस्कार के फलस्वरूप जीवंत प्रणालिका का संबंध हुआ। हम पर प्रभु की बड़ी कृपा हो गई। हमारी यात्रा सहजता और सरलता से चलेगी... इसलिए हम निश्चिंत हैं... हमें शुभ विचारों में अखंड रहना है। गर्भवास के त्रास से हमें मुक्ति लेनी है।

निष्कामी, निर्लोभी, निर्दंभी होने के लिए, अनंत प्रकार का मान, दंभ निकालने के लिए संत चाहिए, चाहिए, चाहिए... हमारा एक ही फर्ज़ है कि किसी बड़े संत को आगे रख कर, दो हाथ जोड़ कर सरलता से जिएँ... उनके समक्ष जितनी सरलता होगी, उतना ही तुम्हारा संबंध पक्का होगा। गुरु तुम पर जितना अधिकार करेगा, उतना तुम्हारा संबंध बढ़ता जाएगा... *हमें अपने घर में संप, सुहृदभाव, एकता और मिठास प्रगटानी है। हमारे घर में अखंड दीवाली प्रगटानी है। हमारे घर में अखंड प्रेम का प्रवाह प्रगटाना है। हमारे घर में अखंड दासत्वभक्ति प्रगटानी है...*

प्रभु-गुरु के कारण ही तो मैं जीवंत-सुखी-समृद्ध हूँ ऐसा मानना। पवित्र संतों का यदि योग होगा, तो हृदय में शुभ-पवित्र विचार उत्पन्न होगा, होली दीवाली में परिवर्तित होगी, अंतिम जन्म होगा। भले कैसे ही बुरे प्रारब्ध होंगे, वे बदल जाएँगे और हमारा जीवन अखंड प्रज्वलित रहेगा... ***गुरुजी, साहेब को कोई स्वार्थ या अपेक्षा नहीं है।*** *बस,* ***संत प्रधान जीवन जिएँगे, तो कब भीतर में प्रकाश हो जाएगा उसका ख्याल भी नहीं पड़ेगा... दिल्ली की धरती पर गुरुजी एक अद्‌भुत धुनी जमा कर बैठे हैं...*** *तुम्हें ख्याल न पड़े तो अपने इष्टदेव से प्रार्थना करना कि हे प्रभु ! माँ जैसे किसी संत की गोद में मुझे बिठाना। प्रभु का स्वभाव है कि प्रार्थना सुन कर वे तुम्हें जोग देकर जीवन धन्य-कृतार्थ बनाएँगे...*

तत्पश्चात् **गुरुहरि प.पू. स्वामीजी** ने अपने वरद् हस्तों से **प.पू. दिनकरभाई** के **अमृतपर्व** की स्मृति में–

* **'चाबी'** के आकार की पॅनड्राईव का अनावरण किया। इसमें स्वरूपों-हरिभक्तों द्वारा की गई धुन, भजनों की नई ऑल्बम 'इन ट्यून', करीब दो सौ भजनों एवं सत्संग की विभिन्न पुस्तकों की पी.डी.एफ. का समावेश है।
* **'अक्षरब्रह्मना भुलका'** नामक पुस्तक का विमोचन किया। प.पू. दिनकरभाई ने नवयुवकों को किस प्रकार सत्संग में प्रोत्साहित किया है, उसे उजागर करते प्रसंगों का वर्णन किया है।
* **पू. परिक्षितभाई मोदी** द्वारा रचित **'दिनकर अंकल मेरी दृष्टि से...'** पुस्तक का उद्‌घाटन किया। इस पुस्तक में प.पू. दिनकर अंकल के अप्रतिम प्रसंगों का विवरण किया गया है।

सभी केन्द्रों की ओर से मुक्तों ने प.पू. स्वामीजी एवं प.पू. दिनकरभाई को हार एवं स्मृति भेंट अर्पित की और केक कटिंग करके इस विशिष्ट आयोजन का समापन महाप्रसाद से हुआ।

अगले दिन **1 सितंबर–गुरुहरि पप्पाजी के प्राकट्‌य दिन** पर डॅसप्लेन, मॅरियन स्ट्रीट में स्थित **'अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण स्पीरीच्युअल सॅन्टर'** में **प.पू. दिनकरभाई** के **अमृत पर्व** निमित्त शिविर के प्रथम सत्र का प्रारंभ **पू. हिंमतस्वामीजी** ने माहात्म्यगान से किया–

...दिनकर अंकल के जीवन में देखें तो सभी स्वरूपों की रूचि और अभिप्राय निहित है।

ब्रह्मस्वरूप योगीबापा का सूत्र था – **संप, सुहृदभाव, एकता!**

काकाजी का सूत्र था – **निर्दोषबुद्धि!**

पप्पाजी का सूत्र था – **संबंध वाले में महाराज को देखो!**

स्वामीजी कहते हैं कि **भुलका बन कर वर्तो!**

साहेबजी कहते हैं सभी का **पॉज़ीटिव देखो!**

ये सभी गुण **दिनकर अंकल में सहज दिखाई देते हैं।** गुरुजी ने पहले ही दिन कहा था कि दिनकर अंकल में हमें सरलता दिखाई देती है। उनके दर्शन करने और साथ में बैठने से एकदम शांति हो जाती है। प्रभु को कितना धार कर जीते होंगे... यहाँ का समाज छोटा है, लेकिन भीतर में कैसी भक्ति दिखाई देती है... पहली सितंबर पप्पाजी का प्रागट्य दिन है, तो दिनकर अंकल के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि सभी स्वरूपों को राज़ी करके आप काकाजी रूप हो गए हो। हमें भी जहाँ जिस जगह रखा है, वहाँ मिलजुल कर - एक होकर स्वरूपों को जो खूब पसंद है, ऐसा हमारा जीवन और वर्तन बने। ऐसे आज आप आशीर्वाद देना।

तत्पश्चात् प.पू. दिनकरभाई के प्रति भाव व्यक्त करते हुए **प.पू. भरतभाई** ने कहा–

...गुणातीत स्वरूपों का प्राकट्य दिन तो हमारे लिए है। उनके लिए तो प्राकट्य दिन मनाओ या नहीं, उससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। उनकी भावना यही रहती है कि सब इकट्ठे मिलें और संप, सुहृदभाव, एकता से जिएँ। ऐसा उत्सव होता है तो हमारे अंतर के स्वभाव और प्रकृति बाहर आते हैं। सब इकट्ठे होते हैं, तो ख्याल पड़ता है कि हम कितना संप, सुहृदभाव और एकता से जीते हैं। यहाँ भक्त कम हैं और इतना बड़ा आयोजन करना मुश्किल तो है ही, लेकिन सबका उत्साह ऐसा लगता है कि बस क्या कर दें! उसका दर्शन कल 'गाला नाईट' में किया...

दिनकरभाई जो बाहर से दिखाई देते हैं, वो अलग है और उनकी अंतर समृद्धि अलग है... 1987 में बापु जब यहाँ आकर दिनकरभाई के पास रहे, तो दिनकरभाई का जीवन नज़दीक से देख कर ताड़देव में उन्होंने बताया कि दिनकरभाई कितने सेवक - भक्तिभाव से जीवन जीते हैं...

आज पप्पाजी का प्राकट्य दिन! पप्पाजी का एक ही सूत्र था कि संबंध वाले में महाराज को देखो... पप्पाजी के पास जब जाते थे, तो वे ज़्यादा कुछ बोलते नहीं थे। लेकिन, वे हमें सिखाते थे कि संकल्पों - विकल्पों को छोड़ कर अंदर से नीरव बनो। उनके कहने का तात्पर्य यह था कि अंदर से नीरव बनोगे तो भगवान की आवाज़ भीतर में सुनाई देगी... तो, ऐसा नीरव बन कर, पूरे समाज को ब्रह्मनियंत्रित मान कर हम जीवन जिएँ। पप्पाजी ने योगीजी महाराज की भक्ति करके सिखाया कि प्रगट स्वरूप के प्रति अखंड निर्दोषबुद्धि रख कर किस प्रकार जीना! योगीजी महाराज जो भी करते हैं वो दिव्य है। वे सब जानते हैं, सर्वज्ञ हैं ऐसा स्वयं मान कर सबको समझाया... पप्पाजी का जीवन अद्भुत! पहली बार में ही उन्होंने योगीजी महाराज को भगवान का स्वरूप मान लिया कि वे प्रभु के धारक हैं, उनमें साक्षात् प्रभु विराजमान हैं। **मानना और विश्वास से जीवन जीने में बहुत फ़र्क़ है। लेकिन, पप्पाजी के जीवन से हमने वो दर्शन किया है...**

हम परेशानियों से डरते हैं, जबकि ***काकाजी कहते कि मैं तो परेशानियों को सामने से बुलाता हूँ... दिनकरभाई भी ऐसे ही हैं, कोई भी मुश्किल आए या कुछ भी तकलीफ़ आए, वो अपनी मूर्ति और स्मृति में, अपने भजन में हमेशा स्थिर देखे हैं। उनका पॅन्ड्युलम कभी हिलता नहीं है।*** *वो हमेशा प्रभुमय ही रहते हैं। ऐसे गुणातीत संतों के साथ हम जुड़े हुए हैं, वो हमारा सबसे बड़ा सद्‌भाग्य है। वो इसलिए है कि वे हमें ऐसी स्थिति पर ज़रूर पहुँचाएँगे, क्योंकि उनके पास वो पावर है... गुणातीत संतों को जो मिला है, वे दूसरों को दिए बिना रहेंगे नहीं... ये गुणातीत संत हमें अपने जैसा बनाने के लिए कष्ट उठाते हैं, तकलीफ सहन करते हैं, मुश्किलें झेलते हैं और परिश्रम करते हैं।* ***भगवान स्वामिनारायण*** *ने वचनामृत में भी कहा कि मुझे अपने आश्रित में तिल मात्र भी कसर नहीं रहने देनी है।* ***गुणातीतानंदस्वामी*** *ने कहा था कि मेरा एक ही उद्यम है कि सबको मेरे जैसा साधु बनाना है... बस हमें गुणातीत संतों को सहकार देना है। कल गुरुजी ने बताया कि संतों के प्रति ऐसा सद्‌भाव रखो कि ये संत बहुत अच्छे हैं। स्वामीजी ने भी कहा था कि संतों के साथ प्रेमभाव से जुड़े रहो कि 'मैं आपका हूँ', संत राज़ी हों और उनको जो कार्य करना है उसके लिए उन्हें हम अधिकार दें कि आप शिल्पकार हैं, आपको जिस प्रकार भी मेरी घड़ाई करनी है, ऐसी करना – यही प्रार्थना।*

प.पू. अश्विनभाई (अनुपम मिशन) संत भगवंत प.पू. साहेबजी की आज्ञा से उनका प्रतिनिधि बन कर ख़ास आए थे, सो उन्होंने निम्न आशीष वर्षा की–

...आज गुरुहरि पप्पाजी का प्रागट्य दिन! 'गुणातीत भावना-अस्मिता' की बात की हम सभी को इन्हीं से सीख मिली और इन्हीं से परंपरा चल रही है। कांतिकाका के प्रागट्य दिन से इस शुभ महोत्सव की शुरुआत हुई... ताड़देव को हम सुहृदभाव की गंगोत्री कहते हैं। ***काकाजी, पप्पाजी, कांतिकाका और सोनाबा ने जो अद्‌भुत जीवन जिया, वो 'गुणातीत अस्मिता' का ज्वलंत दृष्टांत था...***

सुहृदभाव कोई शिष्टाचार नहीं, बल्कि सनातन सिद्धांत है *और...* ***जब वह स्वभाव बन जाए, तब सही अर्थ में सुहृदभाव कार्यशील दिखाई देता है।***

काकाजी के साथ दिनकरभाई का असाधारण प्रीति युक्त लगाव! काकाजी ने ही उनके हृदय में स्थान लिया। काकाजी ने ही उन्हें पसंद किया। पूर्व जन्म का कैसा चैतन्य होगा कि अपना कार्य करवाने के लिए माध्यम-करण के रूप में उन्हें अमेरिका में पसंद किया... दिनकरभाई का जीवन हमने देखा है कि ***काकाजी का इतना अनुसंधान होने के बावजूद भी, उन्होंने काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी के बीच विक्ति नहीं की।*** *काकाजी से सर्वदेशीयता सीख कर वे हर जगह सुहृदभाव रखते हैं। उनकी दृष्टि से सभी जगह ब्रह्म का परम तत्त्व ही कार्य कर रहा है, इस बात का हृदय में पूर्ण स्वीकार होने के कारण वे सब जगह ओत-प्रोत होते हैं और सभी का सहजता से-समग्ररूप से स्वीकार कर सकते हैं। सुहृदभाव की यह सबसे ऊँची भूमिका इसलिए है कि संपूर्ण रूप से केवल प्रभु को ही कर्ता-हर्ता मान कर सभी के साथ वे व्यवहार करते हैं। दिनकरभाई ने जिस प्रकार काकाजी को आत्मसात् किया और गुरुजी-भरतभाई ने भी परब्रह्म के रूप होने के लिए जो साधना की, वही उनके जीवन का सच्चा दर्शन है...*

स्वामीजी ने दिनकरभाई का एक विशिष्ट गुण बताया कि अपने गुरु के समक्ष वे एकदम शून्यभाव से वर्ते, जिसके लिए साहेब दादा कहते हैं – अहंशून्यता! ***अहंशून्यता की अवस्था पर पहुँचना यानि गुणातीत अवस्था पर***

पहुँचना। *अपनी कोई अस्मिता नहीं... सत्संग की भाषा में कहें तो* ***तू ही, तू ही, तू ही की पुकार।*** *दिनकरभाई के जीवन में यह हमेशा दिखाई देती है –* ***वही बड़प्पन है।*** *हम उन्हें बड़प्पन दें या उनकी गिनती ही न करें, इन दोनों संजोगों में उनकी जो अवस्था है, वो वचनामृत के अनुसार है कि –*

चाहे मुझे कोई हाथी पर बिठाए या नाक-कान काट कर गधे पर बिठाए, मुझे हर परिस्थिति में समभाव रहता है। इस अवस्था पर पहुँचना बहुत मुश्किल है, लेकिन जब अति बड़े पुरुष की कृपा हो, तो कुछ भी असंभव रहता नहीं। हम सबने अनुभव किया है और हमारा सद्भाग्य है कि वर्तमान काल में हमें ऐसे स्वरूप प्राप्त हुए हैं... काकाजी ने हमें मैत्रीभाव का संदेशा दिया और अभी भी जो सुहृदभाव-आत्मीयता की बातें होती हैं, 'भुलका' और सबके सुहृद बनने की ये बड़े पुरुष जो सीख दे रहे हैं, ये सभी बातें एक ही हैं, लेकिन ***वर्तना तो मुझे है।*** *जो जहाँ है वह वहाँ अपने स्वरूप के प्रति ऐसा भाव रख कर, अपने आत्म कल्याण की बात ध्यान में रख कर, दिनकरभाई जैसों को आदर्श मान कर, उन्हें अपने नज़र समक्ष रखें कि वे किस प्रकार जीवन जिए हैं और अस्तित्वहीन हो गए... जैसे पानी में शक्कर या नमक घुलने के बाद उसे अलग नहीं किया जा सकता, वैसे ही* ***गुरुजी, दिनकर अंकल या भरतभाई में अलग विक्ति नहीं कर सकते...*** *काकाजी के साथ तीनों का जो एकधारा, एक समान संबंध निरंतर रहा है, वह काकाजी के ब्रह्म साक्षात्कार का भगवत्भाव है।* ***तीनों अलग-अलग स्थान पर विराजमान हैं*** *और भले ही तीनों से अलग-अलग मिलें,* ***लेकिन 'ब्रह्म' की अनुभूति होती है।*** *यह ब्रह्मभाव है और इस गुणातीतभाव और अस्मिता को धारने व फैलाने के लिए बड़े पुरुष ने हमें माध्यम बनाने का संकल्प किया है।* ***गुणातीतानंदस्वामी*** *ने अपनी बातों में कहा है कि* ***सबको गुणातीत करना है।*** *भगवान स्वामिनारायण के आशीर्वाद के कारण, समय-समय पर ऐसे गुणातीत स्वरूपों को हमें ढूँढना नहीं पड़ता, वे स्वयं हमें ढूँढ लेते हैं, हमें अपना मानते हैं और हाथ थाम लेते हैं... बड़े पुरुषों ने हमारे लिए बहुत किया है। उनका उपकार मान कर हम धन्यता का भाव हृदय से व्यक्त करें। सभी एक-दूजे के प्रति गुणातीत अस्मिता के मुताबिक जीने की भावना रखें। सत्संग स्वाध्याय में* ***प्रार्थना करते हैं*** *कि* ***संबंधी को माथे का मुकुट मानने मैंने इच्छा तो की है;*** *लेकिन सही अर्थ में यह मानना कितना मुश्किल है, वह हम सभी ने स्वानुभव किया है। पर, इतना विचार करें कि मुझे ये संबंध वाले मुक्तों को माथे का मुकुट मानना है। यह इच्छा की है न ? इतना ही काफ़ी है। योगीजी महाराज ने तो महेळाव के संकल्प में यहाँ तक लिखा है – मेरे शरीर की चाम मुक्त के पैर की जूती बने... यह हम सब जानते हैं और इसका पाठ करते हैं। लेकिन, जीवन आचरण में लाने की बात होती है, तब यह ज्ञान बहुत मुश्किल है, वह हम स्वीकार करते हैं...*

तो, आज के मंगलकारी दिन जब पप्पाजी का प्राकट्य दिन है, तो हम सभी ऐसी इच्छा वाले बैठे हैं। यह बहुत आनंद की बात है और ऐसी इच्छा की पूर्ति करें, ऐसे स्वरूप – ऐसे प्रभु हैं। पप्पाजी के शब्दों में सर्वोपरि-सर्वव्यापी, सर्वनियंता सम्राट प्रभु ने हमारी इच्छा पूर्ण करने का संकल्प किया है – यह विचार करके आनंद में रहें, धन्यता अनुभव करें। इससे बढ़ कर उत्सव मनाना और क्या कहा जाए ? दिनकर अंकल आप ऐसी कृपा करना कि आपके जैसी सरलता, साधुता, सहजता, स्वाभाविकता, सहृदयता जैसे शब्दों के माध्यम से आपका चित्रण करने का प्रयत्न

कर रहे हैं, परंतु वह भी हमारी बुद्धि, समझ और मर्यादा के अनुसार है। भगवान का स्वरूप अमाप और अपार है और उन्हें धार कर जीने वाले साधु की महिमा भी सभी शास्त्रों के अनंत माध्यम द्वारा वर्णित हुई है। ***ऐसे साधु के साथ बैठने को मिले, तो गुणातीतानंदस्वामी की बात के अनुसार ऐसे साधु के कपड़े की हवा मिले, तो साठ हज़ार वर्ष के पाप जल कर भस्म हो जाएँ।*** *अधिक नहीं, पर हमारी पिछली जिंदगी के साठ-सत्तर साल के पाप जल कर भस्म हो जाएँ, ऐसे आशीर्वाद दो।*

प.पू. अश्विनभाई के आशीर्वचन के बाद **आस्ट्रेलिया** के **पू. संजयभाई** एवं **पॅरिस** के **पू. अंकुरभाई लाड** ने 75 के लोगो वाले विशिष्ट हार एवं कार्ड अर्पण करके प.पू. दिनकरभाई के प्रति भक्ति अदा की। गुरुहरि काकाजी स्वरूप प.पू. दिनकरभाई के प्रति भावना व्यक्त करते हुए, दिल्ली के मुक्त समाज की ओर से **प.पू. गुरुजी** जो स्मृति भेंट लाए थे, उसके विषय में बताते हुए **पू. राकेशभाई** ने निम्न प्रार्थना की –

'**प.पू. दिनकर अंकल**, जो कि सरल, विनम्र, सर्वदेशीय और ऊँचे और सामान्य से दिखते हैं, वे दरअसल तो **गुरुहरि काकाजी महाराज के अखंड धारक** और 'स्थितप्रज्ञ' दुर्लभ गुणातीत '**विभूति**' हैं।

'विभूति' इसलिए कहा है कि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी की बातों में है कि – विभूति हो तो मंडल चले। प.पू. दिनकर अंकल ने यहाँ आत्मबुद्धि-प्रीति संपन्न मंडल बनाया है - अग्रसर किया है।

तभी तो गुरुहरि काकाजी प.पू. गुरुजी से कहते –

तुम मेरे पास बैठे हो और दिनकरभाई वहाँ पाँच हज़ार मील दूर हैं, लेकिन मेरे पास हैं।

अमेरिका में कई मुक्त बसते हैं। पर, **बुद्धि से परे की एक बात** डंके की चोट पर प.पू. गुरुजी कहते हैं और मानते हैं कि –

आज अमेरिका का जो वैभवसंपन्न अस्तित्व बना रहा है, वो सिर्फ और सिर्फ
गुरुहरि काकाजी द्वारा तराशी गई 'विरल विभूति' प.पू. दिनकरभाई की यहाँ मौज़ूदगी के कारण है।

वर्ना, पुस्तक '**धी मेन हु सॉ टुमॉरो**' में फ्रॅन्च भविष्यवेत्ता (एॅस्ट्रॉलॉजर) **नास्ट्रॉडॅमस** ने अमेरिका के बारे में जो आगाह किया है, वो तो आपत्तिजनक है।

श्रीजी महाराज ने अपने समय में आने वाले ऐसे काल के विषय में **संतों** को सचेत किया था और इससे बचने के लिए उपाय बताया था कि –

शंकरजी काल के स्वरूप - प्रलय के देवता कहे जाते हैं और रुद्राक्ष उनका 'तीसरा नेत्र' है। सो, शिवजी को प्रसन्न रखने के लिए, उनका प्रतीक स्वरूप रुद्राक्ष सभी पहनें। तुम्हारी इस भक्तिरूप क्रिया से लोगों का भी अहित कम होगा।

श्रीजी महाराज के इन कृपावचनों को ध्यान में रखते हुए प.पू. गुरुजी को विचार आया कि –

प.पू. दिनकरभाई जैसी '**विरल विभूति**' को उनके अमृतपर्व निमित्त जैसे गुरुहरि काकाजी पहनते थे, ऐसी ही सर्वजीवहितावह कंठी '**विरल स्मृति भेंट**' के रूप में अर्पण करें। भावना यही है कि **प.पू. दिनकरभाई के धारण करने से यहाँ सभी की हर पल-हर प्रकार से रक्षा हो।**

रूद्राक्ष भी कई मुखी होते हैं, लेकिन **एकमुखी रूद्राक्ष बहुत रेयर-विरल और दुर्लभ है।**

सो, प.पू. दिनकरभाई जैसा ही दुर्लभ और विरल एक मुखी रुद्राक्ष डलवा कर प.पू. गुरुजी कंठी लाए हैं, जो आज के परम पावनकारी अवसर पर दिल्ली के मुक्त समाज की ओर से **विरल विभूति प.पू. दिनकरभाई** को पहनाएँगे...'

प.पू. अश्विनभाई के वरद् हस्तों से प.पू. गुरुजी ने प.पू. दिनकरभाई को कंठी पहनवाई।

तत्पश्चात् इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण की स्मृति कराते हुए, उनके पसंदीदा 'मोगरे' के पुष्पों द्वारा बनाया गया हार, मुकुट व भुजबंद पवई के पू. अश्विनभाई, पू. सुहृदभाई एवं पू. नमन अमीन ने प.पू. दिनकरभाई को अर्पित किया। सौभाग्य से आज **प.पू. गुरुजी के अंतेवासी सेवक 'पू. अभिषेक'** का दीक्षा दिन था, सो उस पर प्रसन्नता उड़ेलते हुए प.पू. दिनकरभाई ने अपनी प्रसादी का हार, मुकुट व भुजबंद उसे पहनाया। हॉल में विराजमान सभी मुक्त यह सारा दृश्य देख कर भावुक हो उठे थे कि **सत्पुरुषों का राज़ी होना ही जीवन की परम धन्यता है।**

तदोपरांत **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्दान दिया–

...हम मानते हैं कि दिनकरभाई हमारे हैं, पर फॅक्ट यह है कि इन्होंने हमें अपना बना कर रखा है। *हम पहले से कहते हैं कि काकाजी-पप्पाजी हमारे हैं।*

एक छोटा-सा प्रसंग है। पप्पाजी के 'भक्ति उत्सव' के समय लंदन से लालजीभाई इंडिया आए हुए थे। फॉरेन के इन मुक्तों का सारा ग्रुप दिल्ली आया था और लालजी मामा की अचानक मृत्यु हो गई। स्वाभाविक है कि यहाँ ऐसी कोई घटना बने, तो दिनकरभाई सेवा के लिए तत्पर होंगे ही या लंदन में हिंमतस्वामी दौड़ेंगे। सो, जैसे ही देर रात को मेरे पास यह खबर आई, तो मैं वहाँ पहुँच गया। ***पप्पाजी*** *भी दिल्ली आने का सोच रहे थे, लेकिन मेरी विनती पर वे नहीं आए। फिर उन्होंने एक लॅटर में लिख कर भेजा–*

'मेरा भतीजा वहाँ है, इसलिए मैं यहाँ निश्चिंत हूँ।'

ये बात वैसे नॉर्मल लगती हैं कि ऐसे मौके पर पप्पाजी ने यह लिख दिया। हक़ीक़त यह है कि मेरा संबंध पहले से काकाजी के साथ अधिक रहा था। सो, मेरे मन में ऐसा रहता था कि क्या पप्पाजी मुझे अक्षरविहारीस्वामीजी की भाँति अपना गिनते होंगे? हमारा माइंड कुछ भी बेतुकी बातें सोचता है। यहाँ वज़ह यह होगी कि पहले मुझे अक्षरविहारीस्वामी से इरीटेशन था। हम साथ रहते थे, पर हम दोनों की हर चीज़ अलग होती थी। दोपहर को साथ में कॉफी पीते थे, पर वे पप्पाजी की तरह कॉफी को थाली में एकदम ठंडी करके पीते थे और मैं तेज़ गरम पीता हूँ। उन्हें कोपीन की बेल्ट पतली चाहिए थी और मुझे चौड़ी। हम दोनों में इस हद तक के हर चीज़ में डिफरन्सिस थे। सो, मेरे मन में ऐसा रहता था कि पप्पाजी मुझे अक्षरविहारीस्वामीजी जितना गिनते हैं क्या? इस संदेह का यह रिप्लाई था।

पप्पाजी ने अक्षरविहारीस्वामीजी के लिए कभी नहीं लिखा होगा कि 'मेरा पुत्र!' लेकिन, मेरे लिए लिख कर भेज दिया कि 'मेरा भतीजा' है...

गुणातीत समाज का पहला कायज़ा यही है कि किसी का कुछ देखो मत; यानि–स्वभाव, प्रकृति, बोलना-करना न देखें। *फिर भी हम सब के–मेरे भी रेफरन्स में अब तक यह तो आ ही जाता है कि इसने यह कहा, इसने ये बात करी... इसमें से ही हम अभी बाहर नहीं आए हैं। फिर अपने दोष देखने की बात तो दूर ही रह जाती है।* ***जबकि दिनकर अंकल को देखेंगे, तो ये सारी चीज़ें उन्होंने ट्रान्सेन्ड कर दीं।*** *हर एक को भीतर में इसका*

एहसास होगा। ***दिनकरभाई इतने सरल हैं कि इनके पास हमें अपने आप सरल हो जाना पड़ता है। काकाजी-पप्पाजी हम सबको ऐसा बनाना चाहते हैं, इन्हें किसी से पक्षपात नहीं है।*** *लेकिन हम भी रिस्पॉन्डींग होने चाहिए। हम रिस्पॉन्ड करते हैं, लेकिन इरिटेटिंग वे में। हम सभी की हर बात का स्वीकार नहीं करते हैं। पर, दिनकरभाई में यह बात दिखाई देती है। अगर दिनकरभाई की तरह हम सभी का स्वीकार करें, तो महाराज के लिए हमारे प्यॉरिफिकेशन का रास्ता आसान बन जाता है कि अब ये मुझे ऑपरेशन तो करने देगा। ऑपरेशन थिएटर में हमें एनेस्थीसिया दे दिया हो, तो डॉक्टर निश्चिंत हो जाता है कि अब मुझे इसे चीरा मारने में कोई हरज़ नहीं है। हमारे लिए एनेस्थीसिया क्या कि भक्तों के साथ सुहृद्‌भाव व कुटुंबभाव से हिल-मिल जाएँ। सो, हम भी इस प्रकार महाराज को सहायभूत हों। काकाजी ने यह बहुत अच्छा फॉर्म्युला बता दिया।* ***महाराज के लिए हमारा ऑपरेशन करने का रास्ता आसान हो जाए, इसलिए भक्तों के साथ ऐसे ओतप्रोत हो जाएँ कि कोई भी प्रसंग बनने पर हम एक - दूसरे को छोड़ ही नहीं पाएँ।***

काकाजी, पप्पाजी, कांतिकाका, सोनाबा – इन चारों ने ऐसा जीवन जीकर हमारे सामने डॅमोंस्ट्रेट किया है कि आत्मबुद्धि एवं प्रीति क्या चीज़ है ! *वह जिन्होंने देखी है, जो साक्षी बने हैं; उन्हें ख्याल पड़ेगा कि ऐसी आत्मबुद्धि व प्रीति से हम तो जी नहीं पाते। हमें छोटी-छोटी बातें फील हो जाती हैं। एक-दूसरे से एट डिस्टंस हो जाते हैं, स्तब्ध व क्षोभ में चले जाते हैं।* ***काकाजी कहते थे – तुम क्षोभ में भी चले जाते हो न ?*** *सो,* ***यह न हो और यदि गए भी, तो उसका सीधा-सादा, पर अक्सीर इलाज है कि प्रगट संत की स्मृति के साथ भीतर में 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण...' धुन-भजन करने बैठें।***

हम बोलते तो हैं कि ***स्वामिनारायण मंत्र बहुत बलवान है,*** *लेकिन एन मौके पर उसका रटन हम मिकॅनीकली करते हैं। परंतु, जिस प्रगट स्वरूप के साथ हम जुड़े हैं, उसकी स्मृति के साथ उलझन-परेशानी में भजन करें। करोड़ों साल की तपस्या के बावजूद भी ऋषि-मुनियों ने यह सिद्ध नहीं किया होगा।*

काकाजी कहा करते थे – मन का अमन करके, उसे समन करके प्रभु में जोड़ना है। *निवृत्ति मार्ग में हमें सिर्फ बैठे नहीं रहना है। भगवान के संबंध वाले भक्तों के अंदर खो जाना है, ओतप्रोत हो जाना है और इसीलिए प्रभु ने मंदिर में सभी भक्तिरुप क्रियाएँ सेट करी हैं। ये करेंगें तब आपस में ओतप्रोत होंगे और हमें अपने स्वभाव का दर्शन होगा कि मेरा ये दोष हमारे सुहृदभाव का खंडन कराता है और तब हमें ख्याल पड़ेगा कि भजन करने से हम इसमें से निकलते जाते हैं। कई कहते हैं कि गुरुजी रात को बहुत भजन करते थे। मैं इसीलिए भजन करता था... इन चीज़ों से बाहर निकलने का यह रास्ता है।* ***काकाजी*** *हमेशा कहते थे – तुम्हें जो करना है करो, लेकिन धुन करके करो।* ***पप्पाजी*** *कहते थे –* ***पहले प्रभु , फिर कदम।*** *काकाजी यह भी कहते थे –* ***धुन करके करना, धेन यु विल कमिट नो मिस्टेक।***

सिवा इन सत्पुरुषों के, हम सब के जीवन में तो मिस्टेक्स की परंपरा जारी रहती है; क्योंकि ये सब सहज ही नीरवता से परमात्मा में लयलीन हो गए हैं। अखंड मूर्ति में रह कर सभी क्रियाएँ करते हैं। अखंड मूर्ति में रहना बहुत कठिन है। पर, अगर धुन करते - करते सब क्रियाएँ करेंगे, तो धीरे-धीरे उस भूमिका में दाख़िल हो ही जाएँगे। हम यदि

नहीं भी होना चाहेंगे, तो महाराज धक्के मार कर हमें दाख़िल कर ही देंगे। ऐसी निश्चिंतता और विश्वास से हमें इस रास्ते पर अग्रसर रहना है...

हमारी गुणातीत रीत है कि कहीं से भी बड़प्पन मिलता हो, तो यश की पगड़ी दूसरे के सिर पर रख देनी है। *हमने देखा है कि दिनकर अंकल हमेशा धुन ही करते रहते हैं। उनके अमृतपर्व की फलश्रुति के रूप में यह प्रार्थना करनी है कि हम में धुन की जाग्रतता रहे... निरंतर करते रहें अर्थात् –* ***लगातार*** *और* ***अंतरायरहित होकर*** *प्रभु के समक्ष अपनी भूल स्वीकारें। हम अपनी शॉर्टकमिंग्स से भलीभाँति वाक़िफ़ होते हैं कि हमें हठ, मान, ईर्ष्या, असूया, मत्सर परेशान कर जाते हैं।* ***काकाजी*** *ने 26 जनवरी की शिविर में* ***'मत्सर'*** *का अर्थ समझाया था –* ***दूसरों की प्रशंसा से हमें क्षोभ होना मत्सर कहा जाता है।*** *तो, ऐसी सारी चीज़ों पर हमारा ध्यान केन्द्रित हो और हमारे एक-एक काम भी निपटते जाएँ, ऐसे दिनकर अंकल आज के दिन आशीर्वाद दें ऐसी प्रार्थना!*

इस सत्र के अंत में वचनामृत द्विशताब्दी वर्ष एवं गुरुहरि पप्पाजी के प्राकट्य पर्व की स्मृति करते हुए **प.पू. दिनकरभाई** ने वचनामृत गढडा अत्यं. प्रकरण 26 का पठन करते आशीर्वाद दिया–

...भगवान की सेवा करने योग्य बिजली जैसे गुणातीत संत कैसे होते हैं ? तो,

इंद्रियों-अंतःकरण आदि माया के गुण को जो दबा कर वर्ते

और

भगवान संबंधी क्रिया ही करते हुए पंच वर्तमान में दृढ़ रहते हों

और

स्वयं को ब्रह्मरूप मान कर पुरुषोत्तम भगवान की उपासना करते हों।

योगीजी महाराज, काकाजी और सभी गुणातीत स्वरूपों की कृपा से आज हमें ऐसे संत प्राप्त हुए हैं और उनके साथ हमारा संबंध हुआ है। सो, उनके प्रति कभी मनुष्यभाव न लाएँ। *गुणातीत सत्पुरुषों को देवतुल्य नहीं मानना, क्योंकि देवों में भी हठ, मान और ईर्ष्या होती है। अपने गुरु के प्रति यूँ आदर रखना चाहिए कि ऐसा मायिकभाव उनमें नहीं होता है। भागवत् में ऐसे सभी दृष्टांत और उनसे उत्पन्न समस्याओं का वर्णन किया गया है।* ***जिसे कल्याण की गरज़ हो, उसे ऐसे संत की सेवा करनी चाहिए और साधु गुण युक्त जो बाई हों, उनकी सेवा बाइयों को भी करनी चाहिए।***

महाराज ने वचनामृत की इस पंक्ति में जो विवरण दिया है, वह विशिष्ट है। *इस* ***कथन से ही आज हमारा चार पंखुड़ी वाला गुणातीत समाज बना है। बहनों का भी ऐसा ही समाज है।*** *बहनें तो बहुत छुपी सेवा करती हैं।* ***महाराज ने यह स्पष्टीकरण किया और काकाजी ने 3 फरवरी 1952 को साक्षात्कार-ज्ञान समाधि में महाराज से आदेश पाया।*** *काकाजी ने यह संदेश जब योगीजी महाराज को बताया और उनसे पूछा कि आपकी क्या मरज़ी है ? तब* ***बापा बोले – बहनें भगवान भजें, इसमें क्या गलत है!*** *और... आज गुणातीतभावना वाली बहनें हैं, जिसमें सर्वप्रथम* ***सोनाबा ने पहल करी थी*** *जिससे बहनों का समाज रचित हुआ है... माणावदर का सेन्टर तो बहुत इफ़ॅक्टीव है। वहाँ से कई - कितने संत, साधक भाई और बहनें एवं हरिभक्त हैं। वही बताता है कि* ***माणावदर भगवान का पसंदीदा गाँव है...***

हरिप्रसादस्वामीजी ऐसा कहते हैं वचनामृत अत्यं 26 के अनुसार यदि हम वर्तेंगे, तो प्रथम 27 में प्रवेश कर पाएँगे। तो, सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में हमारी प्रार्थना यही है कि हम अत्यं 26 सिद्ध कर पाएँ, ताकि प्रथम 27 में प्रवेश मिल जाए और वो भी सिद्ध हो जाए...

प्रसाद वितरण के बाद सभी स्वयंसेवक सायं 'बहनों की सभा' की तैयारियों में जुट गए।

सायं करीब छः बजे स्वामिनारायण धुन-भजन से बहनों की सभा का मंगल आरंभ हुआ। शुरुआत एक अनोखे ढंग से हुई। पाँच मुक्तों की समिति बिठाई गई, जिसमें पू. हर्षा बहन, पू. किरण बहन, पू. कृपा बहन, पू. नीता बहन और पू. ब्राह्मी बैठे थे। पू. डॉ. रचना बहन ने प.पू. दिनकरभाई के व्यक्तित्व, कार्य और उनसे प्राप्त हुई अध्यात्म शिक्षाओं को प्रकाशित करने हेतु इनसे प्रश्न किए। इन मुक्तों से जो प्रत्युत्तर मिला, उससे अल्प समयावधि में ही प.पू. दिनकरभाई का अलग-अलग रूप में परिचय मिला! इस समिति द्वारा माहात्म्य दर्शन के बाद संत बहनों ने मंच पर अपना स्थान लिया और सर्वप्रथम **प.पू. दीदी** ने अमृत प्रार्थना की –

यहाँ आने से पहले दिल्ली में मुझसे एक हरिभक्त ने पूछा था – गुरुजी को विदेश जाना ही ज़्यादा पसंद नहीं है, फिर इतना लंबा टूर कैसे बन गया ?

गुरुजी ख़ास तो दिनकरभाई के अमृतपर्व निमित्त ही निकले थे।

मैंने उस हरिभक्त से कहा कि सही बात है कि गुरुजी फॉरेन जाना ज़्यादा पसंद नहीं करते। पर, गुरुजी के प्राकट्य दिन निमित्त दिनकरभाई ज़्यादातर 13 मार्च पर दिल्ली होते ही हैं। एक बार तो फरवरी में आए थे। तब उनसे किसी ने पूछा कि अब आप मार्च में तो नहीं आ सकोगे न ? तब दिनकरभाई ने उत्तर दिया – मैं अक्षरधाम में भी हूँगा, वहाँ से भी मार्च में आ जाऊँगा। दिनकरभाई वैसे तो निरंतर अक्षरधाम में ही रहते हैं।

*दूसरी बात – अभिषेक ने **पप्पाजी** द्वारा 1996 में गुरुजी को लिखे लॅटर की मुझे कॉपी दी, जिसमें लिखा है –*

*सदा दिव्य साकार **काकाजी महाराज स्वरुप गुरुजी – मुकुंदजीवनदासस्वामी** और दिल्ली का मुक्त समाज... हॅपी न्यू इयर। आप काकाजी स्वरुप हो, **प.पू. काकाजी ने पूरी दुनिया में विचरण किया और संबंध वाले अनंत जीवों का कल्याण किया। इसलिए आप भी काकाजी का कार्य जारी रखना और पूर्ण करना ऐसी प्रार्थना और आशीर्वाद।** इसलिए आपको फॉरेन की यह डायरी भेजी है।*

पप्पाजी का यह लॅटर पढ़ने के बाद ही गुरुजी विदेश जाने के लिए रज़ामंद हुए थे। उससे पहले गुरुजी कभी विदेश नहीं गए थे। 2010 में पहली बार दुबई गए थे। ऐसे बड़े सत्पुरुष हमें खुद बरत के बताते हैं कि हमें किस प्रकार भगवत्स्वरूप विभूति की आज्ञा में जीना है।

*बड़े पुरुषों के लिए तो उनका प्राकट्य दिन मनाओ या न मनाओ, ऐसा कुछ होता ही नहीं है। पर, **ऐसे बड़े उत्सव द्वारा हम एक - दूसरे के नज़दीक आएँ और महिमा समझ कर मिलजुल के सेवा करें।** काकाजी के मुख से अकसर **दिनकरभाई** का ज़िक्र सुना था। तब मन में विचार उठते थे कि कैसे होंगे दिनकरभाई ? मीलों दूर होते हुए भी काकाजी के मुख से उनकी प्रशंसा होती है। गुरुजी ने कई बार बताया है कि ऐसे कल्याणकारी गुण हम अपने साधन व एफर्टस से कल्टिवेट नहीं कर सकते। इन्हें प्राप्त करने का सरल रास्ता यह है कि ऐसे प्रत्यक्ष*

स्वरुप - गुणातीत संत के साथ अनन्यभाव का संबंध दृढ़ करके उनसे जुड़ जाओ – जैसे रामजी के साथ हनुमानजी, कृष्ण के साथ राधा और मीरां ने दृढ़ किया था।

...पप्पाजी ने गुरुजी को एक लॅटर में लिखा था कि तुमने वचनामृत प्रथम 58 सिद्ध किया है। अर्थात् ***हम अपने आप निर्मानी, निष्क्रोधी, निर्लोभी, निस्नेही, निस्वादी नहीं बन सकेंगे, पर यदि ऐसे प्रगट गुणातीत स्वरूप के साथ निर्दोषभाव व दिव्यभाव से जुड़ जाएँ, तो ये सारे गुण हम में अपने आप ही आ जाएँगे।*** *हम सब काकाजी - पप्पाजी के ऋणी हैं। आज हम सब जो बैठे हुए हैं, वह उनकी कृपा के बिना संभव नहीं था। उनका ऋण हम कभी चुका भी नहीं पाएँगे। परंतु, गुणातीत स्वरुपों के परिश्रम की निरंतर स्मृतियाँ भी करते रहेंगे, तब भी अपना बहुत बड़ा काम हो जाएगा...*

काकाजी को अपने भक्तों से प्यारा कोई नहीं था... मेरे संबंध में जो आए हैं, उन्हें कैसे प्रभु दे दूँ यही चाहना थी। सभी गुणातीत स्वरुपों का उद्यम यही है। 1997 में ***पप्पाजी*** *और* ***ज्योति बहन*** *मेरी रीढ़ की हड्डी का ऑपरेशन करवाने के लिए खुद अमदावाद आए थे। इसी प्रकार,* ***स्वामीजी*** *कल सबको आशीर्वाद देने के लिए यहाँ आए। वर्ना, आज की टॅक्नोलॉजी से वे वीडियो द्वारा आसानी से आशीर्वाद भेज देते। और... तब भी दिनकरभाई उतने ही खुश होने वाले थे। लेकिन, इस आयु में वे आए और मैंने जब उन्हें सोफे पर बैठते व उठते देखा, तो मेरी आँखों में पानी आ गया कि इन गुणातीत पुरुषों को क्या स्वार्थ है कि हमारे लिए इतना परिश्रम करते हैं।*

दिसम्बर 2018 में सांकरदा में हुए उत्सव का प्रसंग है – एक दोपहर ***दिनकरभाई*** *हरिधाम से सांकरदा जा रहे थे। उन्होंने हरिधाम के इन्क्वाइरी ऑफिस पर दो बुर्ज़ुर्ग लेडिज़ को देखा और उनसे उनकी समस्या पूछी। दरअसल उन्हें भी सांकरदा जाना था। तो, दिनकरभाई ने उनसे कहा – मैं भी सांकरदा जा रहा हूँ, तो आप मेरे साथ मेरी गाड़ी में चलें। सीवियर बॅक पेन होने के बावजूद भी दिनकरभाई ने उन लेडिज़ को आगे बिठाया और खुद पीछे की सीट पर बैठ गए। मैंने जब यह प्रसंग सुना, तो मुझे एहसास हुआ कि* ***ऐसे सत्पुरुषों को 'स्व' की कॉन्सियसनेस ही नहीं होती।*** *वे हमें आभास ही नहीं होने देते कि वे इतने बड़े हैं। काकाजी ने अपने 1966 के कई लॅटर्स के अंत में लिखा है – दिनकर के जय स्वामिनारायण ! मानो हमारे लिए काकाजी ने फॉरकास्ट कर दिया कि 'दिनकर' में रह कर मैं ही कार्य करूँगा। तो, उसे अभी पहचान लो। अगर हम अपनी मायिक दृष्टि छोड़ कर, अंतर की नज़रों से देखेंगे, तभी इन सत्पुरुषों की पहचान होगी। जब तक इन्हें मायिकभाव से देखते रहेंगे, तब तक प्राप्ति शून्य है...*

ये ***सभी स्वरुप इतने छुपे हुए रहते हैं कि पहचाने नहीं जाते कि वे इतने बड़े हैं।*** *24 अप्रैल 2015 की बात है। एक लड़का मंदिर में आया। इससे पहले भी वह एक बार मंदिर आया था। सभा पूरी होने के बाद उसने* ***गुरुजी*** *को अपनी परेशानी बताई कि उस दिन कॉलेज में उसके हिस्से के एवॉर्डस किसी और को दिए गए, मैट्रो में उसका फोन भी चोरी हो गया। यूँ सुबह से डिस्टर्ब था और जब घर पहुँचा तो पापा ने फटकार दिया। लगातार ऐसे प्रसंग बनने से उसने आत्महत्या करने का फ़ैसला किया। वह कदम उठाने ही जा रहा था कि उसकी नज़रों के सामने गुरुजी की हँसती हुई मूर्ति आई और वह रुक गया। सीधा मंदिर गुरुजी का दर्शन करने आया। यूँ गुरुजी की बदौलत वह आत्महत्या करने से रुक गया। कहने का तात्पर्य यह है कि उस लड़के ने केवल एक बार ही गुरुजी*

का दर्शन किया था; फिर भी गुरुजी ने दर्शन देकर जब उसकी इतनी रक्षा करी, तो वे पल-पल हमारी तो कितनी रक्षा करते होंगे?

...स्वामी की बातों में एक बात है कि महाराज ने संतों से पूछा कि तुम विचरण में गए थे, तो सत्संग कितना बढ़ा? संतों ने उत्तर दिया – देस-देस बहुत फर्या, मनुष्य का बहुत सुकाल। पर, जाको देख छाती ठरे, वांका बहुत दुकाल।

***दिनकरभाई का** दर्शन करते समय मुझे यह बात हमेशा याद आती है कि **जो भी उनका दर्शन करता है, उसे अपने भीतर में ठंडक-शांति महसूस होती है।** हम खूब जाग्रत बनें और ये स्वरूप जो हमसे करवाना चाहते हैं, वह करते रहें...*

इन गुणातीत स्वरूपों – सोनाबा, बेन, ज्योति बहन, दीदी, देवी बहन, तारा बहन, प्रेम बहन, योगिनी दीदी, माधुरी बहन के रूप में हमें काकाजी-पप्पाजी मिले हैं। जितना इन बातों का विश्वास करेंगे, उतनी वे प्रतीति कराते जाएँगे...

***अक्षरविहारीस्वामीजी** का एक प्रसंग मुझे बहुत छू गया है। गुरुजी के प्रागट्यपर्व निमित्त स्वामीजी दिल्ली आए थे। दिल्ली में गुरुजी के लिए गॉल्फ कार 'टमटम' है। उसमें साहेबजी, दिनकर भाई, निर्मलस्वामी और गुरुजी बैठे थे। अक्षरविहारीस्वामीजी ड्राइविंग सीट पर बैठ गए।*

गुरुजी ने आश्चर्यपूर्वक पूछा – स्वामी आप क्यों ड्राईव कर रहे हैं?

तब अक्षरविहारीस्वामीजी ने उत्तर दिया – पहले योगीजी महाराज को बिठा कर फार्गो गाड़ी चलाता था, अब योगी स्वरुपों को बैठा कर चला रहा हूँ।

*कहने के लिए बात बहुत छोटी है, पर ऐसे सत्पुरुष कैसा निर्मानी जीवन जीते हैं, यह सीखने जैसा है। मुझे तो सारे गुणातीत समाज का बहुत प्यार मिला है। जब से ज्योति बहन ने स्थूल रुप से विदाई ली, तब से दीदी मुझे और भी ज़्यादा प्यार करने लगी हैं। इन गुणातीत स्वरूपों का जितना भी माहात्म्य गाएँ, कम है। बस हमारी नज़र इनके जीवन की ओर रहे। थोड़े समय पहले **महंतस्वामीजी महाराज** का एक संदेश वॉट्सएप पर आया था कि –*

दो साल बाद अगर दर्जी के पास जाएं, तो तुम्हारा नाप बदल चुका होता है। इसी प्रकार भक्तों के प्रति प्रीकंडिशनिंग कैसे रख सकते हैं कि फलां ऐसा ही है। ये पुरुष ऐसे समर्थ हैं कि पल में सब कुछ बदल सकते हैं।

दिनकरभाई ने नक्षु की डायरी में आशीर्वाद लिखा था कि सब हमें प्यार करें, तो बहुत अच्छा लगता है। लेकिन, वे हमें अधिकार से डाँटे, हम पर शासन करें, तब भी उतना ही अच्छा लगना चाहिए। नक्षु से जब दिनकरभाई ये आशा रखते हैं, तो हमसे कितनी रखते होंगे? हमारी बातें तो जब हमारे वर्तन में आएँगी, तभी दूसरों को स्पर्श होंगी...

*इन गुणातीत पुरुषों ने हमारे जीवन में बहुत काम किया है। **काकाजी** पूछते थे कि तुम कौन हो, किसके हो? मैं किसकी घरवाली? तो, इन गुणातीत पुरुषों की ओर नज़र रख कर हम जिया करें, ताकि काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी के लिए कभी ऐसी बात न आए कि उन्होंने बहनों का कार्य करके कुछ ग़लती करी है। हमारी यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। काकाजी के स्थूल शरीर छोड़ने के बाद गुरुजी, दिनकरभाई, भरतभाई ने अपने वर्तन से उन्हें जीवंत रखा है। अब हम अपने वर्तन से इन गुणातीत पुरुषों को ठंडक प्रदान कर सकें और उन्हें हमारे बीच धरती पर बहुत सालों तक रहने का मन हो – ऐसी प्रार्थना!*

तत्पश्चात् हरिधाम से आईं **प.पू. सर्वेश्वर दीदी** ने अमृत वंदना करते हुए कहा–

...मंदिरों का निर्माण करना सरल है, लेकिन दिल से किसी का गुणगान करना कठिन है। *इसीलिए शायद* ***गुणातीतानंदस्वामी*** *ने अपनी बातों में कहा है कि* ***गुण गाने से जीव ब्रह्मरूप हो जाता है...*** *बहुत आनंद की बात है कि प्रभु ने हमें भगवान भजने का मौका दिया... हमारा जीव विषय से हट कर भगवान की ओर केन्द्रित हो, इसी हेतु हमारे स्वरूपों का उद्यम है... निरंतर हमारे साथ चलते हैं। इससे भी अधिक हमारे अंतर का सब कुछ जानने के बावजूद, हमारे जीवन में स्थान लेने के लिए वे सहजता से हमारी कक्षा पर आए हैं। सहजता से अपने सामर्थ्य को छुपाया है, कसनी सही है और आशीर्वाद देने के लिए पात्रता भी बख़्शी है। उन्होंने वर्त कर बताया है कि स्वयं को निरंतर भगवान और भगवान के संबंध वाले के समक्ष न्यून मानना है...* ***स्वामीजी 'ताड़देव' को याद करते हुए हमेशा कहते हैं कि वह सुहृदभाव की गंगोत्री है। वहाँ से आत्मीयता की शुरुआत होती हुई देखी है...*** *आज विचारने का दिन है कि हमें जो प्राप्ति हुई है, उन्हें हम ढूँढने के लिए नहीं गए थे। हमें जिन्हें पहचानना है, वे स्वयं अपनी पहचान कराने के लिए निमित्त बने हैं... हम अपने भीतर टटोलें तो ख्याल पड़ता है कि हमारी ऐसी कोई हैसीयत नहीं कि सत्पुरुष को साथ दे सकें या उनके अनुसार चल सकें... अपने निस्वार्थ प्रेम और प्रीति से उन्होंने हमें बाँध कर रखा है...*

आज से सत्रह-अट्ठारह वर्ष पहले जब मेरा ***पू. दिनकरभाई*** *से कोई सीधा संपर्क भी नहीं था, तब एक सभा में अपने आसन से उठ कर वे मुझे मिलने के लिए आए और हाथ जोड़ कर कहा–*

बहन, आप सभा में बातें करते रहना। तो, मुक्तों को सत्संग का ख्याल पड़ेगा। मुझे इतना आश्चर्य हुआ कि जो स्वयं अन्यों की खूब जिम्मेदारी लिए हुए हैं, जो अपने स्वरूप के साथ लय और लीन हैं, जिन्हें साधना मार्ग के उतार-चढ़ाव का ख्याल है; उनका साधु कपड़े पहनी एक छोटी-सी बेटी के समक्ष हाथ जोड़ कर, इतनी विनम्रता से खड़े रह कर खुद को तुच्छ मानना – वह गुणातीत परंपरा, रीति-नीति और ज्ञान है...

दूसरा एक प्रसंग स्मरण होता है – अद्भुत तीर्थस्थान डॅस्प्लेन हम गए थे और दिनकरभाई को ऑफिस जाना था। लेकिन हमारी वेईट करते हुए वे नहीं गए। सो, मैंने सहज ही कहा – हम तो सिर्फ दर्शन करने के लिए आए हैं, आप अपने ऑफिस चले जाते। उन्होंने तुरंत ही कहा कि –

ऑफिस में जाना तो इस लोक की ड्यूटी है। लेकिन, साधु जब घर आएँ और उनकी राह देखना भगवान की दी हुई ड्यूटी है। भगवान की दी हुई सेवा मैं किस प्रकार छोड़ दूँ? यूँ दिनकरभाई ने अपने जीवन की पल को अनमोल बनाया है।

काकाजी-पप्पाजी के चरणों में प्रार्थना कि योगीजी महाराज के वचन – 'बहनें भगवान भजें तो क्या गलत है' – इसे साकार करने हेतु खूब परिश्रम करके हमें खड़ा किया है। आज स्वामीजी मर्यादित रीति से हमारी प्रगति करा रहे हैं। ये ऋण तो हम कभी चुका ही नहीं सकेंगे। बस, आपके चरणों में प्रार्थना करते हैं कि हमारी सुरुचि कभी कम न हो। हमारे दिल से निकली प्रार्थना कभी बंद न हो... जहाँ हमारा मस्तक झुका है, उन्हें सौ प्रतिशत कर्ता-हर्ता मानें और ***दिनकरभाई जैसे गुणातीत दासत्व के मार्ग पर निरंतर जी रहे हैं,*** *ऐसा जीना हमें आ जाए – यही प्रार्थना!*

लंदन गुणातीत ज्योत की **पू. दीना बहन** ने अमृत प्रार्थना की–

सच में खूब आनंद होता है कि शिकागो आकर दिनकर अंकल का अमृत पर्व मनाने का हमें मौका मिला। हमें ख्याल नहीं था कि दिनकर अंकल क्या हैं ? पर, ये तीन दिन में हमें बहुत सुनने और जानने को मिला। सबकी हृदयस्पर्शी बातें सुन कर ऐसा हुआ कि दिनकरभाई कैसे हैं ? पप्पाजी कई बार दिनकर अंकल का दृष्टांत देते थे कि वेस्टर्न वर्ल्ड में वे रहते हैं और इतनी बड़ी पोस्ट है, फिर भी भगवान का कार्य करते हैं और भगवान देते हैं। सत्संग कराते हुए, सत्संगी के सुख से सुखी और दुःख से दुःखी होते हैं... 1997 में पप्पाजी यू.एस.ए. की यात्रा करवाने के लिए हम सभी बहनों को लेकर आए थे। वेस्ट कोस्ट से इस्ट कोस्ट में जाने के लिए हमें शिकागो में फ्लाईट बदल कर जाना था। हम एयरपोर्ट पर आए तो लॉन्ज में शिकागो के मुक्त हमारे लिए चाय-नाश्ता लेकर आए हुए थे और साथ में पॅक करके भी दिया, जो हमें आगे जाकर खूब काम आया। कई दिनों से हमने भी इंडियन भोजन नहीं खाया था। आज 22 साल के बाद विचार करती हूँ कि हमें पसर्नली तो कोई पहचानता नहीं था, लेकिन दिनकर अंकल की आज्ञा से सभी सत्संगियों ने हमारी ऐसी सेवा की। वह कब होता है कि जब स्वयं में ऐसी महिमा और माहात्म्य हो और दूसरों में भरे, तभी यह संभव है। ***गुरुजी*** *ने पहले ही दिन बहुत अच्छी बात की थी कि महिमा गाना बहुत बड़ा गुण है। दिनकर अंकल के जीवन में देखते हैं कि उनके जीवन में इतनी अधिक महिमा है कि उनका पूरा डी.एन.ए. महिमारूप ही है। इसलिए 22 वर्ष पहले की जनरेशन में जो महिमा थी, उससे अधिक महिमा आज की यंग जनरेशन में हम देख रहे हैं। तीन दिन से हम देख रहे हैं कि उनका दिनकर अंकल के प्रति जो प्रेम है, वो बहुत हृदयस्पर्शी लगता है... जब-जब दिनकर अंकल लंदन पधारे हैं, तब हमेशा लंदन गुणातीत ज्योत में पधारे हैं। आप ऐसे ही आते रहना और ऐसे अच्छे आशीर्वाद देते रहना। आपकी तबियत बहुत अच्छी रहे, ऐसी हम प्रार्थना करेंगे। आपकी प्रभु के प्रति जो भक्ति है, वह हम में आ जाए ऐसे हम पर आशीर्वाद बरसाते रहना और कृपा करते रहना... आज से 39 वर्ष पहले पहली सितंबर को ही पप्पाजी ने लंदन ज्योत की स्थापना की थी...* ***काकाजी-पप्पाजी का संकल्प ही हमारे लिए कार्य कर रहा है। बाकी हम में कोई ताक़त नहीं है...*** *काकाजी-पप्पाजी जैसे बड़े स्वरूपों की जो ताक़त है, वह जबरदस्त है। उन्हें कभी भी कम नहीं आँकना चाहिए, क्योंकि खूब परिश्रम करके हमारे जीवन में वे ही कार्य करते हैं। हम सोचते हैं कि हमें उनसे लगाव है, परंतु उन्हें हम से अनंत गुणा लगाव है। हम सोचते हैं कि हम उनके प्रति सिन्सियर हैं, लेकिन उनकी सिन्सियारिटी हमारे प्रति ज़्यादा होती है। हमें क्या होता है, उसका उन्हें खूब ख्याल होता है। वे हमारा जतन करते हैं, प्रार्थना करते हैं और संकल्प करते हैं। उन्हीं की बदौलत हम आगे जाने वाले हैं।* ***पप्पाजी कहते कि सिन्सियरीटी रखना और आनंद के सिवा जीवन में और कुछ मत करना।*** *बाकी तुम्हारे लिए गुरु करेंगे। सच में, यहाँ तक ये स्वरूप हमें लेकर आए हैं, तो आगे भी वे ही कार्य करने वाले हैं। इसलिए हमें बहुत निश्चिंतता है... हमारे लिए आप प्रार्थना करते ही रहना–ऐसी आप सभी के चरणों में प्रार्थना।*

पवई की **पू. लीलू बहन** ने अमृत याचना की–

दिनकरभाई की विशेषता है कि किसी का अभाव आने नहीं देते और यदि आ जाए तो उसे निकाल देते हैं। उन्होंने कल एक ही प्रार्थना की थी कि दिव्यता जोवा (देखने की) दृष्टि दे... बस यह मुझ में आए कि सभी में दिव्यता देखूँ और उनका जो निरपेक्षभाव, पॉज़ीटिव दृष्टि, साक्षीभाव और तटस्थता है, बस मुझे वही चाहिए। तो, आप देना...

प.पू. दिनकरभाई की बड़ी बहन **पू. महालक्ष्मी बहन** (मोटीबा) ने बहुत मार्मिक हृदय से प्रार्थना करते हुए धुन कराई और बोलीं –

हे काकाजी महाराज ! आज दिनकरभाई का अमृत पर्व मनाया जा रहा है, तब आप सभा में हाज़िर हैं, हैं, हैं – ऐसा हमें दर्शन हो रहा है। तो, हम सभी को इतना बल देना कि सभी स्वरूपों की मरज़ी के मुताबिक़ जी सकें। काकाजी ने हमें जो रास्ता दिखाया है, उसके अनुसार हम सभी बहनें वर्तें। हमारी वाणी, वर्तन और विचार ऐसा हो – ऐसे आशीर्वाद देना।

बहनों का जो यह समाज तैयार हुआ, उसमें सबसे पहले थीं ज्योति बहन ! सोनाबा का आशीर्वाद और ज्योति बहन व तारा बहन की तैयारी। *भगवान ने अक्षरधाम में से ही इन स्वरूपों को हमारे लिए भेजा है... इतनी सारी बहनों ने यह मार्ग प्रशस्त किया है और पप्पाजी - सोनाबा ने खूब बल दिया है। ज्योति बहन, हंसा दीदी, जसु बहन, नीलम बहन, प्रेम बहन, बेला बहन सभी बहनों का इतना परिश्रम है कि हम विचार करें तो उसका पार ही न आए। समुद्र को देखें तो जहाँ तक दृष्टि जाए, वहाँ तक पानी दिखाई देती है, बाकी कुछ दिखाई नहीं देगा। बहनों के वर्तन, विचार, वाणी को धन्यवाद देना ही चाहिए और उनके चरणों में वृत्ति लगा कर चरण छूने का मन हो जाता है। हमारी इतनी उम्र हो गई, तब भी कई शौक़ पैदा होते हैं। इन बहनों ने तो सारे शौक़ समेट कर साधुता ग्रहण की है। बड़े पुरुषों के संकल्प और आशीर्वाद से यह होता है, वर्ना संभव ही नहीं है। यदि* ***काकाजी - पप्पाजी धरती पर नहीं आए होते, तो बहनों का यह समाज नहीं होता। हमें जो बल मिलता है, वो इनके संकल्प से ही मिलता है। यदि योगीबापा का संकल्प नहीं होता, तो बहनों के लिए इतनी छूट मिलती ही नहीं।*** *लेकिन* ***बापा को यह करवाना था... इतना सारा विकास बापा के संकल्प से ही हुआ है। काकाजी - पप्पाजी ने उस संकल्प को साकार किया और सोनाबा ने साथ दिया...*** *गुणातीत समाज का एक बगीचा खिला हुआ है और समाज बढ़ता ही रहे, इस हेतु धुन करें...*

तदोपरांत **प.पू. दिनकरभाई** ने गुरुहरि काकाजी का आशीर्वाद पढ़ते हुए मानो सत्र का सार बता दिया –

...तीन - चार दिन पहले जब स्वामीजी शिकागो पधारे, तो हम उनके दर्शन करने के लिए गए थे।

स्वामीजी ने एक बात चार - पाँच बार दोहराई कि योगीजी महाराज के समाज के अंदर यदि थोड़ी अन्डरस्टेन्डिंग डॅवलप हुई होती, तो यह विभाजन न हुआ होता। हमारा वही एक समाज होता। ***स्वामीजी ने कहा कि हम जितने भी अलग - अलग केन्द्र से हैं, वो साल में दो बार इकट्ठे होकर तो मिलें।*** *स्वामीजी का हार्द यह है कि ऐसे उत्सवों में तो आते रहते हैं, लेकिन जैसे कि बहनों का समाज इकट्ठे होकर विचार विनिमय करे। संतों और हरिभक्तों का ऐसा ही समाज मिल कर सत्संग की महिमा की बातें करे।* ***तो, ज़रूर एक लिंक बनती रहेगी और वो लिंक वीक नहीं होगी और एक - दूसरे से एकता बढ़ती जाएगी।*** *वो स्वामीजी को बहुत पसंद है और* ***काकाजी भी स्वरूपलक्षी एकता पर खूब ज़ोर देते थे...*** *आज* ***दिव्यांगभाई*** *ने मुझसे एक चर्चा की –*

जब हम सत्संग में आए थे, तब खूब महिमा थी। पर, अब कई बार ऐसा लगता है कि वह कम होती जाती है और लिमिट भी क्रॉस होती है। यह नुकसान दिखाई देता है। पर, बहनों द्वारा बनाए भजन की पंक्ति याद आई – ***'सत्संग की शुरुआत है महिमा, पूर्णाहुति है महिमा। बीच में अमहिमा का समय आ जाता है।'***

यहाँ कोई जो नया भी आएगा, उसे महिमा होगी तो ही वह टिकेगा। सो, महिमा शुरुआत है। पर, जब हमारे पास ऐसे ऐश्वर्य आते जाते हैं या स्पेशियालिटी आने लगती है, तब हम बराबरी करने लगते हैं या पैत्रिक दावा करते हैं और उससे अमहिमा उत्पन्न होती है। यह अमहिमा भी अच्छी चीज़ है, यदि जगत में होते तो उसका पता भी नहीं चलता। यदि हम अमहिमा के बारे में इतना विश्लेषण करके बताते हैं, तो वह भी बड़ी बात है कि हमें दर्शन तो हुआ कि हमें यह नहीं करना है। इससे आगे बढ़ने के लिए जिसके प्रति अमहिमा होती है, उसके बारे में सोचें कि ऐसा विचार क्यों आया ?

आप सब यूँ ही आते रहें और आनंद करते रहें...

प.पू. दीदी की ओर से प.पू. भरतभाई ने **प.पू. दिनकरभाई** का पूजन करके, उन्हें गुरुहरि काकाजी के इनिश्यल्स के डिज़ाईन की **'स्वर्ण राखी'** अर्पित की और प.पू. दीदी ने ऐसे डिज़ाईन की **'रजत राखी' प.पू. भरतभाई** को स्वयं पहनाई। सभा के अंत में प.पू. दिनकरभाई ने केक कटिंग करके भक्तों की भावना ग्रहण की और... सभी ने प्रसाद लेकर स्वयं को धन्य किया।

अगले दिन **2 सितंबर** को **प.पू. दिनकरभाई** के **अमृत पर्व** की **पूर्णाहुति सभा** के लिए सभी एकत्र हुए। **पू. राकेशभाई** एवं **पू. डॉ. दिव्यांग** ने प.पू. दिनकरभाई की स्तुति करते हुए **'अक्षरब्रह्म का तेजपुंज...'** भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् **प.पू. अश्विनभाई** ने आशीर्वाद दिया–

दिनकरभाई के प्राकट्य पर्व के निमित्त गुणातीत परिवार के सभी सदस्यों से मिलना हुआ। एक-दूसरे का अधिक नज़दीक से परिचय और माहात्म्य समझने का मौका मिला।

गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी बातों में कहा है सूर्य के रथ में बैठ जाएँ, तो अंधेरा रहेगा ही नहीं। यह बात काकाजी महाराज द्वारा हमने अनेकों बार सुनी है...

दिनकरभाई अपने नाम के अनुसार 'सूर्य' समान हैं, जहाँ अखंड महिमा और गुणगान की ही बातें होती हैं। जहाँ 'संबंध' को प्राधान्य दिया जाता है, वहाँ किसी भी प्रकार से अज्ञान का अंधकार रहता ही नहीं... बड़े पुरुष हमारे जीवन का मध्यबिन्दु हैं–केन्द्रस्थान पर हैं। उन्हीं के प्रताप से यह सब है। *ऐसा दासत्व हमेशा हृदय में रखने के लिए हम सब स्वाध्याय कर रहे हैं। थोड़ी जाग्रतता रखें, तो जहाँ हाथ डालेंगे वहाँ से गुण की मिठास हाथ में लगेगी...* ***हमारे सत्संग का मूल प्राण है 'माहात्म्य'!***

शिकागो मंडल के सभी युवकों, युवतियों और भक्तों ने बहुत सुंदर, विशिष्ट कार्यक्रम द्वारा दिनकरभाई के प्रति गुरुभक्ति अदा करके ऐसे अद्‌भुत माहात्म्य का दर्शन कराया है। *अनुपम मिशन के प्रतिनिधि के रूप में व्यक्तिगत रूप से शिकागो मंडल को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ...* ***ऐसा माहात्म्य सदैव हमारे हृदय में धारने का अभ्यास करेंगे।*** *गुणातीतानंदस्वामी ने ब्रह्मरूप होने का श्रेष्ठ उपाय बताया है कि भगवान और भगवान के भक्तों के गुण गाना और सुनना। यह बात हमने अनेक बार पढ़ी और सुनी है। अवसर आने पर हम गुण कहते भी हैं, जैसे कि आज मैं कह रहा हूँ। पर, यदि आजमाएँ तो – जिस जीवभाव से हम जीते हैं, बड़े पुरुष के अनुग्रह और कृपा से उससे ऊपर उठ कर, ब्रह्मसंबंध से हम ब्रह्मभाव में माहात्म्य से जीते हो जाएँगे। ऐसे आशीर्वाद दिनकरभाई बरसाएँ, ऐसी प्रार्थना सभी भुलकों की ओर से करते हैं...*

यह उत्सव ऐसा नहीं है कि इकट्ठे हुए, खेले-कूदे, अच्छा भोजन-आनंद करके चले जाना है। बल्कि जिस स्थिति में हैं, उससे एक कदम आगे बढ़ें, बड़े पुरुषरूप-बड़े पुरुषमय बन कर एक-दूसरे के साथ ओतप्रोत होकर, उनके अनुग्रह और कृपा से थोड़ा आगे बढ़ें *– ऐसी अभीप्सा से प्रार्थना करते हैं...*

भजन और स्वाध्याय करते हुए हमने दिनकरभाई को देखा है और उसका अनुसंधान रखते हुए काकाजी के जीवन सूत्रों के अनुसार वे जी रहे हैं... गुणातीतानंदस्वामीजी सिखा गए कि जैसी आत्मबुद्धि व प्रीति अपनी देह और देह के संबंधी के प्रति है, ऐसी भगवान और भगवान के भक्त के लिए करें, तो कुछ करना शेष रहता नहीं। ***दिनकरभाई*** *का ऐसा माहात्म्य* ***'अक्षरब्रह्म का भुलका'*** *और* ***'दिनकर अंकल मेरी दृष्टि से'*** *पुस्तक द्वारा समझने को मिला। ऐसे महापुरुष* ***हमारे साथ, हमारे जैसे, हमारे बीच सहजता से जीते हैं। लेकिन, उनके अंतर की गहराई में भगवान के संबंध वाले भक्तों का जो माहात्म्य है, वह उन्होंने जीकर हमें बताया है। हमारे लिए आदर्श रूप हैं...*** *अपने जीवन से उन्होंने दर्शन कराया है और* ***उन्होंने हमें महिमा की दृष्टि दी है।***

वर्तमान स्वरूप – भरतभाई, दिनकरभाई, गुरुजी, वशीभाई या छोटे-बड़े जो भी भक्त हैं, उन सबकी – ये सभी सेवक महिमा से कैसी सेवा करते हैं ! सुबह हम आते हैं, हृदय के प्रेम से जो सत्कार करते हैं, वो भगवत्भाव की अनुभूति करा देता है। शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता, इसलिए धन्यवाद-धन्यवाद कहता हूँ...

प्रभुकृपा में जब रोज़ रात को पप्पाजी के पास बैठ कर या सभी शिविरों, उत्सवों में वच. अत्यं. 26 और प्रथम 27 की लगातार बातें सुनते थे। पर अब गंभीरता से उस का स्वाध्याय करते हैं, तो एहसास होता है कि भगवान स्वामिनारायण ने कैसे वरदान दिए हैं और ***काकाजी कहते –***

राजा ! ये आशीर्वाद मैदान में खुले रखे हैं, जो चाहे ऐसी स्थिति प्राप्त कर सकता है।

उनके अभय वरदान-उन शब्दों का माहात्म्य अब समझ में आता जाता है, जब वे पुरुष हमारे बीच में नहीं हैं।

सो, आज यह भी प्रार्थना करनी है कि अब जब ये भगवत्स्वरूप संत हमारे बीच हैं, हमारे साथ हैं और हम पर अनुग्रह है, तब सारा ज्ञान और समझ उनके प्रति महसूस करके, उन्हें जीवन का माध्यम बना कर थोड़ी सुरुचि रख कर प्रयत्न करेंगे, तो हम भी भगवान के सुख से सुखी होंगे। ऐसा बड़े पुरुषों का अभयदान-वरदान है...

स्वामिनारायण भगवान *ने अपने आश्रितों को किसी भी मतभेद से दूर रहने के लिए शिक्षापत्री में लिखा है कि* ***मेरी और शंकरजी की एकता है, सो कोई हम में भेद न समझे।*** *इसी प्रकार, मंच पर बैठे हुए* ***दादुकाका ज़ाहिर सभा में कह देते थे कि मेरी, पप्पाजी और स्वामीजी की – हम तीनों की एकता है; तो आप कोई भेदभाव रखना नहीं।*** *यह बात मैंने स्वयं सुनी है। लेकिन, हमें विक्ति थी, इसलिए हम भेदभाव में पड़े। यह हमारा इतिहास है। अभी तो बहुत विकास हो गया है और आचरण में भी आया है। स्वामिनारायण भगवान ने दो सौ साल पहले शिक्षापत्री में लिख दिया कि अध्यात्म को मुख्य रखो और इस सिद्धांत पर रहने के लिए उन्होंने लिख दिया कि मेरी और शिवजी की एकता है... किसी भी देव का मंदिर यदि मार्ग में आए, तो उसके लिए भी स्वामिनारायण भगवान ने कहा है कि दो हाथ जोड़ कर नमन करना। पर, साथ ही अपने ईष्टदेव के प्रति* ***'पतिव्रता की भक्ति'*** *जैसी बात भी समझाई...*

*हम परिवार के सदस्यों के साथ बैठ कर हँसी-मज़ाक करते हैं। गुरुजी को भी हमने देखा है कि हँसाते-खिलाते हुए हमें कितना आनंद कराते हैं। **'आनंद करो भई आनंद करो'** – यह सूत्र हम तीन दिन से सतत जप रहे हैं। तो, ऐसे आनंद के प्रकार में ऊँचाई, प्रेम और पवित्रता हो और हम सब मिल कर ब्रह्मानंद करते रहें – ऐसे आशीर्वाद बरसाओ यही प्रार्थना।*

जिस प्रकार बहनों की सभा में छः बहनों की एक समिति द्वारा प.पू. दिनकरभाई के निरपेक्ष प्रेम और कार्य के विषय में जाना था, उसी प्रकार शिकागो से बाहर प.पू. दिनकरभाई ने पवई के भाइयों को अपना सबसे अधिक समय दिया है, उसे मद्देनज़र रखते हुए **प.पू. भरतभाई, प.पू. बापु, प.पू. वशीभाई, पू. राजुभाई ठक्कर** एवं **पू. अश्विनभाई** को समिति के सदस्य के रूप में बिठा कर **पू. अमितभाई** ने प्रश्नोत्तर किया। फलस्वरूप बहुत ही कम समय में प.पू. दिनकरभाई के बारे में बहुत अधिक जानने को मिला कि किस प्रकार उन्होंने गुरुहरि काकाजी की भाँति ही सभी के उत्थान हेतु अद्भुत कार्य किया है।

तत्पश्चात् पहले प्रकरण की 14वीं 'स्वामी की बात' का जिक्र करते हुए **प.पू. दिनकरभाई** ने निम्न आशीर्वाद दिया और उसके बाद दो मिनिट धुन कराई –

*...करोड़ों काम **छोड़ कर** नहीं, **बिगाड़** के भी मोक्ष सुधार लेना। करोड़ों काम बिगाड़ कर यानि जानबूझ कर भी सब कुछ छोड़ देना। **स्वामी के एक-एक शब्द ब्रह्म वाक्य हैं।** काकाजी कहते थे कि जीवन में हम बड़े पुरुष को आगे रख कर करोड़ नहीं, अबज़ों कार्य भी करेंगे तब भी हमारा मोक्ष नहीं बिगड़ेगा। हम जगत की किसी भी प्रवृत्ति में जुड़े रहें, लेकिन जैसे काकाजी को प्रगट स्वरूप योगीजी महाराज का एक अखंड अनुसंधान रहता था, यूँ वर्तमान समय में स्वामीजी - साहेबदादा का योगीबापा के साथ, भरतभाई, वशीभाई, गुरुजी का काकाजी का रहता है। ऐसे ही अश्विनदादा का साहेबदादा के साथ है। जो जिस स्वरूप से जुड़ा है, उसका उसके साथ रहता है। यह अनुसंधान यदि पक्का रहे, तो कई-कितने भी काम होंगे वो महाराज अच्छी तरह सफल करेंगे। हमें यह नहीं सोचना है कि मेरे पास समय नहीं है। यदि हम बड़े पुरुष को आगे रख कर काम करेंगे, तो हमारा काम होगा भी और पूरा समय भी मिलेगा।*

*कल हम गाड़ी में जा रहे थे, तो **डॉ. दिव्यांग** के साथ बहुत अच्छा डिस्कशन हुआ। दिव्यांग काकाजी के आशीर्वाद से हुआ है, उसके जन्म से पहले काकाजी ने आशीर्वाद दिया था। उसने मुझसे कहा कि जिन स्वरूपों और भक्तों के प्रति महिमा रखनी चाहिए, वो महिमा मैं जब शुरुआत में आया तब रहती थी, वो कम हो रही है। बाज़ी बिगड़ रही है, बल्कि महिमा तो बढ़नी चाहिए। तो, क्या करना चाहिए ? मैंने उसे भजन की एक पंक्ति से समझाया कि **सत्संग की शुरुआत है महिमा, पूर्णाहुति है महिमा; बीच का पल अति कठिन आता है, जिसमें आ जाती है अमहिमा।** हम जब सत्संग की मध्य स्थिति में होते हैं, तब हमारी ऐसी हालत होती है। वो अमहिमा आने के कारण अलग-अलग है। हमारी पोज़ीशन, ज्ञान, स्टेटस इत्यादि आड़े आ जाते हैं, जो हमें इस स्थिति तक लेकर आए हैं। वे ही उन्हीं की महिमा कम कर देते हैं। यह न आए उसके लिए पहले तो हम बाहर जगत में जहाँ घूमते हैं, वहाँ भी उनकी महिमा गाना शुरू करें। क्योंकि हमारा 10-15 प्रतिशत समय सत्संग में जाता है और 80-90 प्रतिशत समय जगत में व्यतीत होता है। यदि 100 प्रतिशत सत्संग में बीते, तो कोई समस्या ही नहीं है। परंतु,*

जलझीलनी एकादशी के अवसर पर ‘नायगरा फॉल्स’ में प्रत्यक्ष स्वरूपों की निश्रा में नौकाविहार...

पू. हितेशभाई पटेल के घर...

न्यू जर्सी के लिए प्रस्थान...

अनुपम मिशन–एलनटाऊन की दिव्य स्मृतियाँ...

न्यू यार्क में 'ग्राऊंड ज़ीरो' पर आकस्मिक मृतकों की मुक्ति हेतु धुन...

न्यू जर्सी में पू. संजय शर्मा के घर...

पारसीपॅनी के मंदिर के दर्शनार्थ...

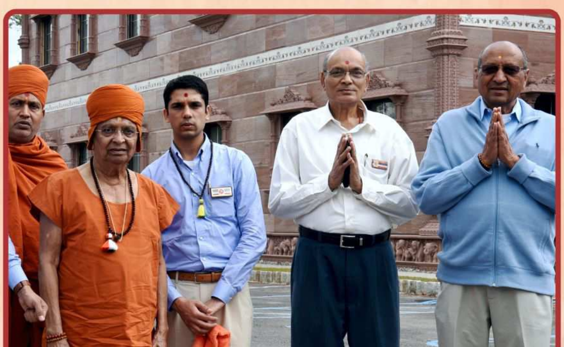

न्यू जर्सी में पू. डॉ. चैतन्यभाई मेहता के घर महापूजा...

न्यू जर्सी में पू. सुनीलभाई शाह के घर महापूजा...

पू. सुनीलभाई शाह के घर प.पू. गुरुजी का त्रिमासिक एवं प.पू. दिनकरभाई का अमृत प्राकट्योत्सव

‘कॉलोनियल पार्क’ में आनंदोब्रह्म...

पॅरिस–स्वीट्ज़रलैंड के लिए प्रस्थान...

स्वीट्ज़रलैंड में...

पू. गिरीश अग्रवालजी के घर...

प.पू. ज्योति बहन के कृपापात्र पू. नीरव खत्रीजी के घर...

माऊंट टिटलिस पर...

माऊंट टिटलिस पर...

एंगलबर्ग चर्च को तीर्थत्व प्रदान करते...

चीज़ फॅक्टरी में...

पू. प्रतीक्षा बहन के मोटल पर...

गुरुहरि काकाजी के प्रासादिक 'एफिल टावर' पर...

पॅरिस के सर्वदेशीय-भावुक मुक्तों का भाव ग्रहण करते...

मंदिर के 'प्राण' प.पू. गुरुजी के आगमन पर...

सुस्वागतम्...

हमारी इन्फ्लुअन्स ज़गत में ज़्यादा होती है। हम अमहिमा की बातें करेंगे-गुस्सा करेंगे। वैसी ही इन्फ्लूएन्स सत्संग में भी हो जाएगी। ***स्वामिनारायण भगवान*** *ने कहा है–बाहर जो पाप किए हैं, उन्हें धोने के लिए सत्संग में आना है। लेकिन, सत्संग में जो पाप करेंगे, वो वज्रलेप हो जाता है। तो, सत्संग में कोई दिक्कत न आए, उससे जाग्रत रहने के लिए जगत में ही पॉज़िटिव बिहेवियर करने की शुरुआत करें। बाहर हमारा बिहेवियर 90 प्रतिशत पॉज़ीटीव होगा, तो सत्संग भी होगा। लेकिन, यह थोड़ा कठिन भी है; क्योंकि यह करने में हमारी इगो को झुकाना पड़ेगा और सब हमारे सिर पर चढ़ जाएँगे। पर, यदि गुणातीत स्वरूपों को आगे रखेंगे, तो ऐसे सारे भय भाग जाएँगे।* ***स्वामिनारायण भगवान*** *के समय की बात है - अखंडानंदस्वामी वन में जा रहे थे, उनके समीप शेर का झुंड आ गया। पर, अखंडानंदस्वामी का विश्वास अटल था, तो आँखें बंद करके वे माला फेरते हुए 'स्वामिनारायण' मंत्र जपने लगे। हमारा जगत भी जंगल ही है। वहाँ कभी (मनरूपी) शेर आ जाता है। तो, ऐसा ही विश्वास हम तब रखें।* ***पू. डॉ. आर.डी. काका*** *धुन का सहारा लेते थे। तो, वही लाख दु:खों की एक दवा है, क्यों न आजमाएँ! तो, दो मिनिट धुन करते हैं...*

धुन के बाद दिल्ली मंदिर के आत्मीय एवं **पू. डॉ. दिव्यांग के पिताश्री पू. अनिल शर्माजी** ने प.पू. दिनकरभाई का बहुत सुंदर पँसिल स्कॅच बनाया था, वह **पू. डॉ. दिव्यांग और पू. नक्षत्र** ने प.पू. दिनकरभाई को अर्पित किया। तदोपरांत **प.पू. गुरुजी** द्वारा पसंद की गई फिल्मी तर्ज **'देखते-देखते...'** पर, उन्हीं की प्रेरणा से **पू. राकेशभाई शाह** ने प.पू. दिनकरभाई के लिए भजन–***'रज के दौलत दी, रज के प्रभु दिए...'*** **पू. डॉ. दिव्यांग** के साथ ऐसे भाव से प्रस्तुत किया कि पूरा हॉल इतना रोमांचक हो गया और तालियों के गड़गड़ाहट से सभी 'वन्स मॉर' कहने लगे।

तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्दान दिया–

मैंने ***काकाजी*** *के मुख से दिनकरभाई की बहुत प्रशंसा सुनी थी। वे अकसर कहते थे–* ***तुम यहाँ मेरे पास बैठे हो और दिनकरभाई 5 हज़ार माईल्स दूर है, पर फिर भी वह मेरे पास है।*** *काकाजी की यह बात सुन कर मेरे मन में भी सवाल उठता था कि इनमें ऐसी क्या विशेषता होगी ? एक बार रात को मैं ताड़देव में था, तब दिनकरभाई आने वाले थे। रात के लगभग दो-ढाई बजे, तब काकाजी से पूछा कि आपको सोने नहीं जाना है ? काकाजी ने कहा दिनकरभाई आ जाएँ उसके बाद जाएँगे। एक बार तो उनसे कहा कि आप सो जाओ, जब वे आएँगे तब आपको उठा देंगे। लेकिन वे माने नहीं और अपने कमरे में बैठे रहे। पौने तीन बजे के करीब दिनकरभाई आए। तब शायद मैंने पहली बार दिनकरभाई का दर्शन किया था। काकाजी ने दिनकरभाई से सहज ही पूछा–क्या पियोगे? दिनकरभाई ने कहा–चाय पीऊँगा। मुझे उसी समय विचार आया कि इनको यह कहना चाहिए था कि कुछ नहीं पीना, काकाजी आप सो जाइए। काकाजी और दिनकरभाई ने चाय पी और फिर सब सो गए। एक घंटे के बाद तो काकाजी जग गए। मैं तो हमेशा देखता रहता था कि काकाजी के कमरे की लाईट कब जलती है और उनके पास जाकर बैठ जाऊँ।*

दरअसल बापा के समय में भी मुझे उनके दर्शन करना जँचता था, सो उनके कमरे में भी आधी रात को जाकर बैठता था। बापा ने मेरा पक्ष लेकर ***माधवस्वामी*** *को कह भी रखा था कि मुकुंद को आने देना। मैं चुपचाप बैठा ही*

रहता था... बड़े पुरुष कब किस हेतु के लिए ऐसे वर्तते हैं, हमें ख्याल नहीं पड़ता। पर, आज भी मुझे वे स्मृतियाँ हूबहू हैं और हमें उन्हीं में खोए रहना है...

जैसे कि मैं दिनकरभाई की बात कर रहा था, तो अगले दिन मैंने दिनकरभाई से पूछा – आपने ऐसा क्यों कहा कि चाय पीनी है। दिनकरभाई ने उत्तर दिया कि काकाजी की मर्जी थी, इसलिए मैंने कहा। इस बात से मुझे स्वामी की एक बात याद आई कि बड़े पुरुष की मर्जी को जो जानता हो, उससे जीव जोड़ लेना चाहिए... बाद में काकाजी ने भी मुझसे कहा – तुझे ऐसा था कि दिनकरभाई ने चाय पीने के लिए क्यों कहा ? दरअसल, वह मेरी मरज़ी को जानता है। ***दिनकरभाई जैसे यदि पाँच तैयार हो जाएँ, तो मैं समझूँगा कि पूरे अमेरिका को सत्संग हो गया। आज काकाजी के आशीर्वाद साकार होते हुए नज़र आ रहे हैं। हमें पूछना नहीं पड़ता कि दिनकरभाई ने क्या सत्संग कराया है...***

काकाजी जैसे बड़े संत सब कुछ देखते हैं और अपनी योजना के साथ वे आते हैं। यह भरोसा रख कर हम उनके साथ चलते रहें, उनकी आज्ञा का पालन करें। उन्होंने हमारी खूब परवरिश की है, तो उनका ऋण अदा करने के लिए हम कुछ न करें, सिर्फ उनके बताए मार्ग पर हम चलते रहें। उससे उन्हें तकलीफ कम होगी और हमारी सेवा एवं हमारी आध्यात्मिक प्रगति - विकास होता रहेगा। हमें साधना क्या करनी है, वह हमें पता नहीं... मोक्ष के लिए किस रास्ते पर चलना है, वह हमें पता नहीं। हम अपने दोष ढूँढ कर उसे खुद निकालने का प्रयत्न न करें, लॅट हिम ऑपरेट, लॅट हिम डु। एनेस्थीसिया के रूप में भजन करते रहें और मुक्तों के साथ ओतप्रोत हो जाएँ। ***हरिप्रसादस्वामीजी*** *पिछले पाँच - छः साल से हठ, मान, ईर्ष्या, काम, क्रोध, लोभ इन छः दोषों को टालने पर ज़ोर देते हैं। हम इनसे मुक्त हो जाएँ, इस हेतु स्वामी की कैसी प्रबल इच्छा है। कोई एक ही एक बात बार - बार कहा करे, इसका मतलब उस व्यक्ति को उस चीज़ की कितनी चाह होगी कि तुम मुझे यह दे दो।* ***स्वप्रयत्न से ये दोष टल नहीं सकते, इन्हें टालने के लिए रोज़ काकाजी - पप्पाजी से प्रार्थना करें कि स्वामीजी जिस चीज़ के लिए लगे हुए हैं, उसके लिए हम 'जी हज़ूरी' करते रहें, हम सहायरुप बनें – अवरोध न उत्पन्न करें। ऐसा भजन न करें कि हमसे सहन नहीं होता। उसकी बजाय प्रार्थना करें कि हे महाराज ! हमें बल दीजिए कि आपकी रीति से हम आगे चलते रहें।*** *दिनकरभाई जैसे पुरुष को आगे रखें और स्वामीजी के स्वरुप को पहचानें, इतनी प्रार्थना !*

जैसे कि **पू. अमितभाई** ने समिति के सदस्यों से प्रश्नोत्तर किया था, उसी प्रकार उन्होंने अपनी भावना प्रकट करते हुए **प.पू. गुरुजी** से पूछा –

दिनकरभाई 75 साल के हो गए हैं और सभी की भावना है कि शताब्दी तक वे सबके साथ रहें। पर, जैसे कि सभी स्वरुपों की आयु बढ़ रही है, सबका स्वास्थ्य चुनौती के समान है। तो, जैसे कि हम दिनकरभाई के साथ जुड़े हुए हैं, आप कृपया हमें मार्गदर्शन दें कि काकाजी के साथ यदि स्थूल रूप से आपको दस साल और मिल जाते, तो आप क्या करते ?

इस बात का प्रत्युत्तर देते हुए **प.पू. गुरुजी** ने कहा – ***मैं तो एक ही भजन करता रहता हूँ कि काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी ने अभी तक मुझे इस समाज में टिका कर रखा है, यूँ मुझे टिकाए रखना।***

सच, प.पू. गुरुजी ने एक सेवक की अदा से बहुत ही अचरजभरा उत्तर दिया। क्योंकि वे स्वयं ऐसे हैं कि हम सभी के दोष-स्वभाव देखे बिना, केवल संबंध की दृष्टि से हमें निभा रहे हैं-लाड़ लड़ा रहे हैं। उनका यह जॅस्चर दर्शाता है कि **कितनी भी ऊँचाई या कक्षा पर पहुँच जाओ, लेकिन अपना सेवकभाव कभी भी चूकना नहीं चाहिए।** तो, हे गुरुजी ! आपके वर्तन द्वारा बताई गई इस राह पर चल कर हम आपको धार लें, यही प्रार्थना।

समापन के रूप में स्वरूपों ने 'कप केक्स' काटे। लेकिन, जैसे कि शिविर का माहौल एकदम घरेलू था, सो मंच पर विराजमान स्वरूपों ने सहज गोष्ठि शुरू की। सबसे पहले, प.पू. दिनकरभाई के चाय वाले प्रसंग की पुनः स्मृति करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने गुरुहरि काकाजी द्वारा कहा गया रहस्य बताया–

जैसे गुणातीतानंदस्वामीजी महाराज की मरज़ी जानते थे, उसी प्रकार दिनकरभाई काकाजी की मरज़ी को जानने वाले हैं।

महाराज के समय के मायाराम भट्ट के प्रति दीनानाथ भट्ट की ईर्ष्या, असूया, मत्सर जैसे भावों का दृष्टांत देते हुए **प.पू. अश्विनभाई** ने सुहृद् प्रार्थना की –

साहेब दादा *ने सुहृदभाव की व्याख्या की है कि* ***अन्य का उत्कर्ष देख कर जो राज़ी हो, वो उसने सुहृद्भाव रखा कहा जाए...*** *सभी मंडलों में जो जहाँ जुड़ा है, वहाँ ऐसी छोटी-बड़ी गड़बड़ चलती ही रहती है... भक्त के प्रति की असूया के कारण भगवान के प्रति मनुष्यभाव आ जाता है... हम सभी परिवार के सदस्य एकत्र होकर आनंद गोष्ठि कर रहे हैं, पर साथ ही साथ यह प्रार्थना करें कि मंडल वाले-संबंध वाले किसी भी भक्त के प्रति वर्तमान समय में भी ऐसे भाव उत्पन्न हो जाते हैं, तो ऐसा भूत आप निकालो–ऐसी प्रार्थना।*

तब **प.पू. गुरुजी** ने गुरुहरि योगीजी महाराज की स्मृति करते हुए कहा–

बापा कहते कि दीनानाथ भट्ट को तो एक भूत चिपका था, हमें 51 भूत चिपके हैं। उसका उपाय यही है कि ***हरिभक्तों के साथ ओतप्रोत होकर, उनकी महिमा समझ कर सेवा करा करेंगे, उनके साथ कुटुंबभाव से मिलजुल जाएँगे, तो कोई भूत टिक ही नहीं पाएगा-खड़ा नहीं रह पाएगा।*** *अभी हम डॉ. सपन के फार्म हाऊस पर ठहरे हुए हैं, उन्होंने व उनके परिवार ने ऐसी सेवा की है।*

सभी स्वरूपों ने पू. डॉ. सपनभाई पर प्रसन्नता व्यक्त की और... दिव्यताभरी ऐसी गोष्ठि के साथ **प.पू. दिनकरभाई** के **अमृत पर्व** की शिविर की पूर्णाहुति प्रसाद के साथ हुई।

प्रसाद के बाद प.पू. गुरुजी एवं सभी पू. डॉ. सपनभाई के फार्म हाऊस पर गए। शिकागो के मुक्तों को नज़दीक से अपना जोग देने हेतु इसी दिन सायं से प.पू. गुरुजी को पधरामणी शुरू करनी थी। सो, दोपहर का आराम करने के बाद सायं 5:00 बजे के करीब **पू. विद्याधरभाई** के घर गए। धुन-भजन का लाभ लेकर वहाँ सभी ने प्रसाद लिया।

3 से 7 सितंबर तक प.पू. गुरुजी शिकागो में **पू. पार्थभाई भगत, पू. अमितभाई शाह, पू. केतनभाई पटेल (कंथारिया), पू. दक्षी बहन, पू. घनश्यामभाई, पू. विनोदभाई, पू. वंदनभाई पटेल, पू. नयना बहन गेंगर, पू. जीतूभाई जोशी,** प.पू. दिनकरभाई की बड़ी बहन **पू. महालक्ष्मी बहन, पू. शंकरभाई,** मुंबई के पू. डॉ. महेन्द्रभाई मर्चंट के सुपुत्र **पू. संकल्प मर्चंट, पू. तुषारभाई चौटलिया, पू. दास काका, पू. निर्भीकभाई, पू. किरण बहन सिद्धपुरा एवं पू. पंकजभाई शाह** जैसे आत्मीय मुक्तों के घर गए। प.पू. दिनकरभाई तो लगातार

प.पू. गुरुजी के साथ ही रहे, लेकिन प.पू. भरतभाई, प.पू. बापु, प.पू. वशीभाई, पवई के मुक्त एवं शिकागो के स्थानिक हरिभक्त भी प्रत्येक पधरामणी में एकत्र हो जाते थे। सो, ऐसा लगता रहा कि प.पू. दिनकरभाई का अमृत पर्व जारी ही है और साथ ही प.पू. गुरुजी भी पू. राकेशभाई एवं पू. डॉ. दिव्यांग से हर जगह प.पू. दिनकरभाई का भजन **'रज के दौलत दी, रज के प्रभु दिए...'** गवाते थे। **6 सितंबर** की सायं **डॅस्पलेन मंदिर** में **'भजन संध्या'** में पू. राकेशभाई एवं पू. डॉ. दिव्यांग द्वारा भजन फिर-से सुन कर सभी ने आनंद किया। प.पू. दिनकरभाई के अमृत पर्व का अद्‌भुत लाभ लेकर **7 सितंबर** की सायं फ्लाईट से **पू. पुनीत गोयलजी** भारत-दिल्ली के लिए रवाना हुए। इसी दिन रात को डॅस्पलेन **'साधक निवास'** में कई मुक्त प.पू. गुरुजी को विदाई देने के लिए एकत्र हुए थे, क्योंकि अगले दिन कनाडा जाने वाले थे। शिकागो से **पू. किशोरभाई मास्टर्स (लंदन), पू. घनश्यामभाई अमीन, पू. केतनभाई** एवं **पू. पिंकी दीदी** भी कनाडा जाने के लिए साथ में जुड़ गए।

8 सितंबर की सुबह करीब नौ बजे प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई एवं सभी शिकागो के **'मिडवे इंटरनेश्नल एयरपोर्ट'** के लिए रवाना हुए। दोपहर करीब 2 बजे साऊथवेस्ट एयरलाईन्स से निकल कर सायं 4:30 बजे बफॅलो एयरपोर्ट पहुँचे। **पू. इक्षेन्य संघवी** यहाँ तक साथ में आए और प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. दीदी के लिए गाड़ी एरेन्ज करवा कर **न्यू जर्सी** चले गए। दो दिन के बाद प.पू. गुरुजी एवं सभी वहीं जाने वाले थे, सो पू. सुनीलभाई शाह एवं परिवार से मिल कर पूर्व तैयारियाँ करनी थी। बफॅलो एयरपोर्ट से निकल कर करीब साढ़े छः बजे प.पू. गुरुजी एवं सभी कनाडा में 'नायगरा फॉल्स' के सामने स्थित हॉटल **'एम्बेसी स्युट्स'** में पहुँचे। कनाडा में पढ़ाई करते अमदावाद के **पू. मालव जानी-पू. प्रीत आचार्य** एवं दिल्ली के **पू. आदित्य कैला** प.पू. गुरुजी के दर्शन हेतु हॉटल आए और एक रात साथ में ठहरे। रात को साढ़े आठ बजे के करीब हॉटल के नज़दीक ही 'मोक्ष' रेस्तरां में सभी भोजन करने गए और हॉटल लौटे। कनाडा से न्यू जर्सी जाने के बाद प.पू. गुरुजी पॅरिस-स्वीट्ज़रलैंड जाने वाले थे। प.पू. गुरुजी को गुरुहरि काकाजी की गोद में पले-बढ़े मुक्तों के प्रति अलग ही लगाव है। सो, शिकागो से साथ में आए पू. घनश्यामभाई अमीन को प.पू. गुरुजी ने पॅरिस चलने के लिए कहा। तबियत नरम-गरम होने के बावजूद, **पू. घनश्यामभाई** भी प.पू. गुरुजी के प्रेमवश साथ में चलने के लिए तैयार हो गए। प.पू. गुरुजी की इस यात्रा में शामिल होने के लिए इसी दिन दिल्ली-अक्षरज्योति से **पू. परछाईं दीदी** एवं **पू. डॉ. अर्ची** सायं आठ बजे कनाडा-टोरन्टो एयरपोर्ट पहुँचे। पुराने जोगी अक्षरनिवासी **पू. आर.के.पटेल साहेब-पू. मंजुला बहन** की भतीजी **पू. पुष्पा बहन** के सुपुत्र **पू. हितेशभाई पटेल** करीब ग्यारह बजे उन्हें 'एम्बेसी स्यूट्स' ले आए। देर रात्रि को प.पू. गुरुजी विश्राम में गए।

अगले दिन **9 सितंबर** को **'जलझीलनी एकादशी'** थी। स्वामिनारायण संप्रदाय में इस दिन श्री ठाकुरजी को 'नौका विहार' कराया जाता है। संजोग की बात थी कि इसी दिन सुबह श्री ठाकुरजी को लेकर, सभी संत, युवक, बहनें एवं हरिभक्त, प.पू. गुरुजी और प.पू. दिनकरभाई जैसी प्रभुधारक विभूति के सान्निध्य में **'हॉर्न ब्लोर क्रूज़'** द्वारा **'नायगरा फाल्स'** में विहार करने गए। यहाँ से लौट कर 'मोक्ष' रेस्तरां में फलार करके, प.पू. दीदी एवं कुछ मुक्त पैदल हॉटल जा रहे थे कि रास्ते में प.पू. भरतभाई का दर्शन हुआ। तभी प.पू. गुरुजी भी वहाँ पहुँच गए और बातचीत से पता चला कि प.पू. भरतभाई और उनके साथ के मुक्त 'हॉर्न ब्लोर क्रूज़' में बैठने जा रहे थे।

तो, प.पू. गुरुजी ने तुरंत ही कहा – चलो हम भी चलते हैं। देखा जाए तो उसी दिन सुबह प.पू. गुरुजी वहाँ से होकर आए थे और थके हुए भी थे। लेकिन, गुणातीत परिवार के सदस्यों के साथ उन्हें इतना आनंद आता है कि वे अपनी आयु या तबियत को तो भूल ही जाते हैं। सो, श्री ठाकुरजी को अपनी गोद में विराजित करके, **प.पू. गुरुजी और प.पू. दिनकरभाई** पुनः **प.पू. भरतभाई** एवं मुक्तों को साथ लेकर नौका विहार करने गए। उपस्थित **मुक्तों को जीवनभर के लिए अविस्मरणीय स्मृति मिल गई कि श्री ठाकुरजी के साथ, उन्हीं के धारक प्रत्यक्ष स्वरूपों के साथ जलझीलनी एकादशी के पवित्र दिन दो बार नौका विहार किया।** सायं छः बजे फ़ारिग होकर, डेढ़ घंटे की दूरी तय करके **पू. हितेशभाई** के घर पधरामणी के लिए गए। भारत से **पू. मंजुला बहन** भी वहाँ पहुँची हुई थीं। प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी का दर्शन एवं दिल्ली मंदिर की पुरानी स्मृतियाँ करके वे अत्यंत भावुक हो गईं। **प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी से घनिष्ठता से जुड़ा कनाडा का निजी समाज, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई के दर्शन हेतु आया था।** प्रसाद लेने के बाद पुनः हॉटल लौट कर विश्राम किया।

10 सितंबर की दोपहर करीब 12:30 बजे 'मोक्ष' रेस्तरां में भोजन करने गए। यहाँ से हॉटल लौट कर, सामान लेकर दोपहर ढाई बजे के करीब **बॅफेलो एयरपोर्ट** के लिए रवाना हुए। बॅफेलो एयरपोर्ट पर चॅक इन करा कर, सायं 7:00 बजे युनाईटिड एयरलाईन्स से **'नीवॉक'** के लिए रवाना हुए और रात को साढ़े आठ बजे पहुँचे। **पू. सुनीलभाई शाह, उनकी धर्मपत्नी पू. दीप्तिभाभी, पुत्र पू. समीर शाह एवं पुत्रवधु पू. ध्वनि, मित्र पू. दीपकभाई, पू. डॉ. चैतन्यभाई महेता,** पू. स्मिता दीदी की बड़ी बहन – 'बड़ी बाई' का बेटा **पू. संजय शर्मा** एवं **पू. इक्क्षेण्य** रीसीव करने के लिए एयरपोर्ट पहुँचे हुए थे। **पू. सुनीलभाई शाह – पू. दीप्तिभाभी** का परिवार पिछले बीस साल से प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी से बहुत ही अपनेपन से जुड़ा हुआ है। मार्च महीने से ही वे इस दिन के इंतज़ार में थे कि कब प.पू. गुरुजी उनके नए घर को पावन करने के लिए न्यू जर्सी आएँगे। सो, सभी न्यू जर्सी के लिए रवाना हुए। डेढ़ घंटे का सफ़र तय करके **डॉ. पू. चैतन्यभाई महेता** के घर पहुँचे और प्रसाद लेकर प.पू. गुरुजी तो वहीं ठहरे और अन्य सब अलग-अलग स्थान पर गए। **पू. इक्क्षेण्य** ने अपने अर्जित बोनस पोईन्ट्स से न्यू जर्सी में हॉटल 'स्टेब्रिज स्यूट्स' में सेवारूप व्यवस्था भी करी थी।

11 सितंबर की सुबह नाश्ते के बाद, करीब दो घंटे की दूरी तय करके **'एलनटाऊन'** के **'अनुपम मिशन'** का दर्शन करने के लिए गए। वहाँ **प.पू. अश्विनभाई** की निश्रा में सभा आयोजित थी। पुष्प हार से प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. दीदी का स्वागत किया गया। छोटी-सी सभा के बाद 'मॅक्सीकन व्यंजन' का प्रसाद लिया। इसी दिन प.पू. अश्विनभाई लंदन जाने वाले थे, सो सायं 4:00 बजे के करीब मुक्तों ने उन्हें विदाई दी।

तत्पश्चात् तुरंत ही प.पू. गुरुजी ने **न्यू यॉर्क** जाने का प्रोग्राम बनाया। हाँलाकि जब सारा कार्यक्रम सॅट हो रहा था, तो उसमें न्यू यॉर्क जाने का कार्यक्रम नहीं था। लेकिन, संजोग वश **11 सितंबर** थी। यह वही तारीख थी जब सन् 2001 में 11 सितंबर को (इस्लामिक) आतंकवादियों ने प्लेन द्वारा **'वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर'** पर हमला किया था। करीब 3000 लोगों की उसमें मृत्यु हुई, हज़ारों घायल हुए और कैन्सर जैसी कई बीमारियों के शिकार भी हुए। सो, ऐसी आकस्मिक मृत्यु को पाए मृतकों को मानो सद्गति देने की भावना से प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई ढाई घंटे की दूरी तय करके न्यू यॉर्क गए। वहाँ **'ग्राउंड जीरो'** पहुँच कर करीब दस मिनिट धुन कराई और आस-पास घूमते

मुक्तों को सहज दर्शन देकर कल्याण का अधिकारी बनाया। तत्पश्चात् वहीं रेस्तरां में भोजन करके न्यू जर्सी के लिए रवाना हुए। करीब पौने दो घंटे में सभी न्यू जर्सी में अपने-अपने ठहरने के स्थान पर पहुँच कर विश्राम में गए।

पंद्रह दिन प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में पाई दिव्य स्मृतियों की सौगात लेकर, **12 सितंबर** की सुबह करीब नौ बजे **पू. विपिन यादव** न्यू यॉर्क एयरपोर्ट जाने के लिए निकले और दोपहर की फ्लाईट से दिल्ली के लिए रवाना हुए। अन्य सभी पू. डॉ. चैतन्यभाई के घर पर नाश्ता करके 'बड़ी बाई' के बेटे **पू. संजय शर्मा** के घर गए। वहाँ पर धुन-भजन करके सभी ने प्रसाद लिया और अपने-अपने ठहरने के स्थान पर लौटे। कुछ मुक्त शॉपिंग के लिए 'जर्सी मॉल' गए। शाम को रीलेक्स मूड से पू. डॉ. चैतन्यभाई के घर में प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई ने उपस्थित मुक्तों को आनंद कराया।

13 सितंबर की सुबह नाश्ते के बाद, पौने दो घंटे की दूरी पर **प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी** द्वारा **'पारसीपॅनी'** में नवनिर्मित **मंदिर** का दर्शन करने गए। वहाँ **पू. ललित काका** एवं मुक्तों ने **कोठारीश्री प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी** की आज्ञा से अन्नकूट रूपी प्रसाद की बहुत भारी व्यवस्था की हुई थी। प्रसाद लेने के बाद मंदिर के सभी कार्य स्थलों का दर्शन करके, **संतभगवंत साहेबजी** से आत्मीयता से जुड़े **पू. जलाभाई** के घर गए। वहाँ आराम करने के बाद अल्पाहार लिया और धुन-भजन करके **पू. डॉ. चैतन्यभाई महेता** के घर लौटे। पू. डॉ. चैतन्यभाई महेता को यह घर खरीदे हुए थोड़ा ही समय हुआ था, सो उनकी इच्छानुसार प.पू. गुरुजी की आज्ञा से **पू. अभिषेक** ने महापूजा की। 13 सितंबर के मुताब़िक प.पू. गुरुजी का त्रिमासिक प्राकट्य दिन था, उस निमित्त पू. डॉ. चैतन्यभाई की पुत्रवधु **सौ. लीनाभाभी** ने वेजिटेबल केक बनाया था। उसका कटिंग करके सभी ने प्रसाद लिया। देर रात तक आनंद करा के प.पू. गुरुजी आराम में गए व अन्य सभी अपने ठहरने के स्थान पर चले गए।

14 सितंबर की सुबह **पू. सुनीलभाई शाह** के घर पर सभी ने नाश्ता किया। प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई की निश्रा में पू. अभिषेक ने महापूजा की। पू. सुनीलभाई के परिवार को इस क्षण की बेसब्री से प्रतीक्षा थी। **प.पू. गुरुजी ने उनके घर का नाम 'स्वीट होम' दिया।** महापूजा के बाद सभी ने दोपहर को प्रसाद लिया। सायं पू. सुनीलभाई के घर में प.पू. गुरुजी के त्रिमासिक प्राकट्य दिन एवं प.पू. दिनकरभाई के अमृत पर्व की सभा आयोजित थी। पू. सुनीलभाई ने अपने कई मित्रों-संबंधियों को दर्शन हेतु बुलाया था। दिल्ली मंदिर के आत्मीय **पू. अमृतभाई पटेल साहेब** के सुपुत्र **पू. हितेनभाई** भी काफ़ी दूर से परिवारसहित दर्शन के लिए पहुँचे थे। सो, धुन-भजन करके **पू. राकेशभाई शाह** ने संक्षेप में प.पू. गुरुजी का और उनके द्वारा दिल्ली में स्थापित किए पारिवारिक सत्संग का परिचय दिया। तत्पश्चात् पू. सुनीलभाई शाह एवं उनके सुपुत्र पू. समीर शाह ने अपने अनुभवों को बता कर, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई को प्राकट्य दिन निमित्त हार अर्पण किया। पू. सुनीलभाई के अनुभवों के आधार पर **प.पू. दिनकरभाई** ने आशीर्वाद देते हुए कहा–

...पूर्व के चैतन्य जब भगवान के जोग में आते हैं, तो तुरंत ही उनके साथ प्रीति हो जाती है। स्वामी की बातों में लिखा है कि जीव पूर्व का है या नहीं, वह कैसे पता लगे? तो, गुणातीत पुरुष से मिलने पर जिन्हें दिव्यभाव का संबंध हो जाता है, वो पूर्व के हैं। ***हम सब जो इधर इकट्ठे हुए हैं, वे सभी पूर्व के हैं।*** *हमें ख्याल ही नहीं पड़ता कि सत्संग में कैसे आए और कैसे जुड़े! लेकिन, हम पर प्रभु और स्वरुपों की मेहरबानी है... बस भजन का प्रवाह जारी*

रखना, वही ब्रह्मप्रवाह है और उसी से प्रभु हमारे संकल्प पूरे करेंगे... गुरुजी इतने सस्ते बन कर यहाँ आए हैं और सबको दर्शन दिए हैं... गुरुजी के जो आशीर्वाद मिलेंगे, वो हमारे जीवन की परमेनन्ट एसेट हो जाएगी। गुरुजी से प्रार्थना करें कि आप जैसे हैं, अपने उस स्वरुप का दर्शन कराना। आपने काकाजी को कितना राज़ी किया है... संसार में धूप-छाँव तो होने ही वाली है, लेकिन संत को राज़ी करने के लिए, उनकी मरज़ी के मुताबिक हम हर परिस्थिति में उन्हें ही कर्ता-हर्ता मानें, यही सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद दिया–

सद्‌गुरुश्री गुणातीतानंदस्वामीजी ने कहा है कि प्रगट स्वरुप की बातें बहुत करामाती हैं - जादूभरी हैं! पिछले दो-तीन वर्ष से स्वामीजी सभा में हठ, मान, ईर्ष्या, काम, क्रोध, लोभ जैसे दोषों से मुक्त होने की ही बातें करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को ये दोष परेशान करते ही हैं। आपसी मनमुटाव, अबोला, मुँह सुजाना, रुठना - मनाना इत्यादि घर - घर में चलता रहता है। इन सब का कारण हठ, मान, ईर्ष्या है।

* *मानो किसी व्यक्ति से कहा जाए कि तुझे यह नहीं करना है, फिर भी करे ही–उसे कहा जाता है **हठ**।*

* *कोई हमें हमारी भूल पर टोके और वह हमसे सहन न हो वह है **मान**।*

* *किसी व्यक्ति की प्रगति व सुख देख कर हमें क्षोभ हो जाए वह है **ईर्ष्या**।*

*हम बोलते नहीं हैं, पर मन में झुलसते रहते हैं कि फलां हमसे आगे निकल गया। इन सबसे निजात पाने के लिए हरिप्रसादस्वामीजी संप, सुहृदभाव, एकता की बात करते हैं... गुणातीतानंदस्वामी ने सरल रास्ता बताया है कि **भगवान के भक्तों में आत्मबुद्धि व प्रीति ही सत्संग है।** जैसी आत्मबुद्धि व प्रीति हमें अपने देह के संबंधियों से होती है, वैसी आत्मबुद्धि व प्रीति भगवान व भगवान के भक्त के प्रति रखें, तो सारी कसर अपने आप ही टल जाती है। विदेश आने से पहले स्वामी की इस बात का अंग्रेज़ी अनुवाद में ढूँढ रहा था –*

'लव इंटिमसी' विथ डिवोटीज़ ऑफ धी गॉड मॅनिफेस्ट इज़ सत्संग।

*मैंने ऐसा सुना है कि जगत में जैनी कर्म को ख़तम करते - करते आत्मोन्नति करते हैं। यह सत्संगी फॅमिली भले ही जैनी है, पर धर्मनिष्ठ हैं। भगवान स्वामिनारायण किसी भी जात के प्रति भेददृष्टि नहीं रखते। उनके लिए जैन, ब्राह्मण, वैष्णव सब एक समान हैं। कहने का मर्म यह है कि भगवदी को आगे रख कर कार्य करना! यहाँ अमेरिका में **दिनकरभाई जैसी विभूति** हैं। विभूति इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि संत कहूँगा तो (पहनावा देख कर) सबको स्वीकार नहीं होगा। पर, वे संत से भी विशेष हैं। **प्रभु के अखंडधारक संत को 'प्रभु का स्वरुप' कहा जाता है।** ऐसे ही मानवरुप में दिनकरभाई भगवान का स्वरुप हैं। **अमेरिका के लिए भगवान ने दिनकरभाई जैसे भव्य स्वरुप ख़ास भेजे हैं।** शायद मेरी यह बात आप सबको न जँचे, पर विश्वास रखना मुझे आपसे कोई स्वार्थ नहीं है। **दिनकर अंकल, भरतभाई, वशीभाई ये सब सॅटेलाइट जैसे हैं।** वो इसलिए कि **जैसे सॅटेलाइट मॅसेजिज़ इमिडीएट ट्रांस्फर करते हैं, उसी प्रकार भगवान के पास हमारे संदेश तुरंत पहुँचाने व इंस्टेंट रिप्लाई पाने के लिए ऐसे संत माध्यम हैं।** सो, ऐसे बड़े संत की स्मृति करके, उन्हें आगे रख कर, उनके वचन से कार्य करें। जीवन में जब उतार-चढ़ाव आएँ, तब इन प्रभुधारक विभूतियों की स्मृति करके भजन करना और... इनके संबंध वाले भक्तों में निर्दोषबुद्धि व सुहृदभाव रखेंगे, तो महाराज हमारी कैसी भी समस्या हल कर ही देंगे।*

इस रस्ते हमेशा अग्रसर रहना और किसी का अभाव-अवगुण मत देखना कि फलां व्यक्ति इतना ठीक करता है, इतना नहीं। गुणातीतानंदस्वामी ने तो यहाँ तक कहा है कि भगवान ने हमें कहाँ अधिकार दिया है कि दूसरों के दोष देखा करें। किसी को यदि नहीं समझ आता, तो आगे जाकर समझ आएगा। कौन-सी जल्दीबाजी है। स्वामी को तो सब कुछ हस्तकमलवत् दिखाई देता था, फिर भी इतनी शांति से बात कही है, जबकि हमें तो दीवार के पार दिखाई देता नहीं... सो, ठंडे कलजे से-दिल से यह मानें कि मुझे मिले भगवान ही कर्ता-हर्ता हैं, सो मेरा अहित नहीं होगा। यह बात बहुत कठिन है, लेकिन प्रगट विचरते स्वरूप को ही कर्ता-हर्ता मानेंगे, तो प्रभु अनुभव भी कराएँगे कि संपूर्ण नियंत्रण उनके हाथ में है। यह दृढ़ता होती जाएगी, तो जीवन में निर्भयता, निश्चिंतता, शांति, सुख, आनंद आएगा और इसके फलस्वरूप तन, मन, धन और आत्मा सर्व प्रकार से समृद्धि होती रहेगी...

अंत में केक कटिंग हुई और सभी ने प्रसाद लिया।

15 सितंबर की सुबह नाश्ते के बाद, पू. सुनीलभाई शाह के आग्रह पर प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई आनंदोब्रह्म करवाने के लिए सभी को **'कॉलोनियल पार्क'** ले गए। पार्किंग लॉट-डी में अल्पाहार किया, भजन एवं हरिभक्तों के नामों की अंताक्षरी खेली। प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई ने भी मुक्तों की रुचि अनुसार अपने को ढाल कर अनोखी स्मृति दी। प.पू. भरतभाई, प.पू. बापु एवं उनके साथ मुक्त भी इस आनंद में बढ़ोतरी करने के लिए आ गए। शिकागो से लेकर अब तक तकरीबन बीस दिन प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई के सान्निध्य में दिल्ली के मुक्तों की सेवा-समागम करके, **पू. इक्क्षेण्य** ने एटलान्टा अपने घर जाने के लिए यहाँ से विदा ली।

हर बार की तरह अबकी बार भी पू. इक्क्षेण्य ने अपनी सेवा से स्वरूपों को राज़ी करके न केवल मुक्तों को अपनेपन का एहसास कराया, बल्कि अपने माता-पिता **पू. प्रमीतभाई** एवं **पू. वर्षाभाभी** द्वारा विरासत में मिले सत्संग का अपने वर्तन से परिचय दिया।

तत्पश्चात् सभी पू. सुनीलभाई शाह के घर गए। प.पू. गुरुजी ने वहाँ आराम किया। प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई एवं मुक्तों के साथ गोष्ठि करते रहे। फिर देर सायं प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई एवं सभी पू. सुनीलभाई के मित्र **पू. दीपकभाई पटेल** एवं **पू. चिरागभाई भट्ट** के घर गए और प्रसाद लेकर अपने-अपने ठहरने के स्थान पर पहुँच कर, सेवक सामान पॅक करने में लग गए, क्योंकि अगले दिन **पॅरिस** के लिए रवाना होना था।

16 सितंबर की सुबह सभी पू. सुनीलभाई शाह के घर एकत्र हुए और हॅवी नाश्ता करके, 12:30 बजे न्यूयॉर्क **जे.एफ.के. एयरपोर्ट** के लिए रवाना हुए। एयरपोर्ट पर **प.पू. दिनकरभाई की गुणातीत अस्मिताभरी सरलता का और अधिक दर्शन हुआ।** एयरपोर्ट के बाहर सभी सामान इकट्ठा कर रहे थे। **प.पू. दिनकरभाई** एक **सेवक की अदा से** देर तक **सामान की रखवाली करते हुए खड़े थे।** इतना ही नहीं, हमारा करीब बीस मुक्तों का ग्रुप था, सो चॅक इन कराने में काफ़ी समय लगा; पर, प.पू. दिनकरभाई शांति से तकरीबन दो घंटे तक साथ में खड़े रहे और आख़िर सिक्योरिटी चॅक अप के लिए जब सब जाने लगे, तब भी सबको दर्शन देने के बाद प.पू. भरतभाई एवं मुक्तों के साथ आगे के विचरण में जुड़ गए।

हम सभी को जो प्रत्यक्ष स्वरूप मिले हैं, उनके प्रत्येक जेस्चर से पल-पल एहसास होता है कि **प्रभु पाने की जो गरज़ हमें उनसे रखनी है, उससे कई अधिक गरज़ उन्हें हमें देने की है।** बस, हमारे लेने में ही कमी है। सायं करीब सात बजे ब्रिटिश एयरवेज़ से हम पॅरिस के लिए रवाना हुए।

17 सितंबर की सुबह करीब 8:00 बजे पॅरिस के **'शॉल ड गॉल'** एयरपोर्ट पर पहुँचे। गुरुहरि काकाजी के अंतर के प्रसन्नतापात्र **पू. प्रवीणभाई लाड** एवं उनके द्वारा सत्संग की राह पर चलते मुक्त हमें रीसीव करने के लिए आए और अपने घरों में ले गए। प.पू. गुरुजी पहली बार पूरे एक महीने के लिए दिल्ली से बाहर आए थे, सो स्वाभाविक रूप से दिल्ली के मुक्त थोड़े उदास थे। इससे लगता था कि सबको प.पू. गुरुजी से कितनी प्रीति है। पर, स्वामी की बातों का जिक्र करते हुए प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि भगवान और संत को भी भक्तों की वासना रहती है। उसी लगाव के वश प.पू. गुरुजी ने शिकागो से ही दिल्ली मंदिर से जुड़े **पू. विजयपालजी (दिल्ली), पू. ओ.पी. अग्रवालजी - पू. अनिलभाई माणिक (मुंबई)** को आग्रहपूर्वक कहलवाया कि वे पॅरिस में हमारे ग्रुप के साथ जुड़ जाएँ और... प.पू. गुरुजी के ऐसे प्रेम में सराबोर ये तीनों मुक्त और सेवक **पू. शिवम** 16 सितंबर की सायं पॅरिस पहुँच गए थे। पॅरिस के सत्संगियों के घरों में नित्यक्रम से फारिग़ होकर, सबको **'ग्या डी लिओन'** रेलवे स्टेशन पहुँच कर बॉसल - स्वीट्ज़रलैंड के लिए 'टी जी वी लिरिया' से रवाना होना था। पॅरिस के **पू. लालाभाई** ने रास्ते के लिए भोजन दिया। पू. प्रवीणभाई, पू. ठाकुरभाई, पू. मुकुलभाई, पू. बकुलेशभाई, पू. अंकुरभाई सहित कई मुक्त स्टेशन छोड़ने के लिए आए थे। दोपहर ढाई बजे ट्रेन रवाना हुई और सायं साढ़े पाँच बजे बॉसल स्टेशन पर पहुँचे। पॅरिस से **पू. प्रतिषभाई** एवं **पू. अमीषभाई** प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी के लिए दो गाड़ियाँ लेकर, पहले ही स्वीट्ज़रलैन्ड के लिए रवाना हो गए थे। सो, बॉसल पहुँचने पर वे रीसीव करने पहुँच गए थे। अन्य मुक्तों के लिए 'एस.ओ.टी.सी.' ट्रावल कंपनी की कोच आई थी। करीब डेढ़ घंटे का सफ़र करके स्वीस गाँव **'एंगलबर्ग'** के हॉटल **'बॅलमोन्ट'** पहुँचे। रात को हॉटल के नज़दीक ही 'स्पाईस बाज़ार' में भोजन करके हॉटल में लौटे।

18 सितंबर की सुबह नाश्ते के बाद, हॉटल के नज़दीक ही 'केबल कार' में बैठ कर, समुद्री तल से 10,623 फुट की ऊँचाई पर स्थित **'माऊंट टिटलिस'** के लिए रवाना हुए। यहाँ के द्वितीय तल पर इंडियन रेस्तरां में दोपहर का भोजन करने के बाद, रोटेयर केबल कार से आगे गए और पाँचवें तल पर पहुँचे। वहाँ प.पू. गुरुजी की निश्रा में करीब दो घंटे आनंद किया। 'क्लीफ वॉक' और 'आईस फ्लायर' क्रियाकलापों का अनुभव किया। मुख्य तो प.पू. गुरुजी ने वहाँ बैठ कर, न केवल अलग-अलग जगह से आए व्यक्तियों को दर्शन देकर कल्याण किया, बल्कि वहाँ उपस्थित पक्षियों को केले के चिप्स खिला कर मानो उस योनि से मुक्त किया। सायं करीब 6:00 बजे 'केबल कार' के माध्यम से ही नीचे लौट कर हॉटल गए। वहाँ कमरे में बैठ कर ही प.पू. गुरुजी ने मुक्तों को आनंद कराया और रात को साढ़े आठ बजे के करीब भोजन करने गए और लौट कर आराम में गए।

19 सितंबर की सुबह नाश्ता करके, चालीस मिनिट की दूरी पर **'ल्यूसन'** शहर गए। वहाँ की लेक में पंद्रह मिनिट 'नौका विहार' करने के बाद, दिल्ली मंदिर के नज़दीक रहते प्रींसीपल गुप्ताजी के दामाद **पू. गिरीश अग्रवालजी** एवं सुपुत्री **पू. श्रुति** के घर 'ज्यूरिक' गए। उन्होंने बहुत ही भक्तिभाव से खूब अच्छा भोजन बनवाया था। धुन-भजन करके श्री ठाकुरजी को थाल धराया। वहाँ प.पू. गुरुजी करीब डेढ़ घंटा बैठे और फिर पुनः

'ल्यूसन' आकर, दिल्ली मंदिर के मुक्तों को देने के लिए चॉकलेट्स खरीद रहे थे कि छुट्टी मनाने आया, दिल्ली मंदिर से जुड़ा **पू. अनुज दुरेजाजी** का आत्मीय परिवार मिला। सभी ने एक साथ रेस्तरां में रात का भोजन किया। यहीं पर **प.पू. ज्योति बहन** से खूब अपनेपन से जुड़े **पू. नीरव खत्री** अपनी पत्नी **पू. स्वाति** एवं पुत्र के साथ दर्शन करने के लिए आए। अत्यंत भावपूर्ण हृदय से उन्होंने प.पू. गुरुजी को अपने घर पर चलने के लिए कहा। सो, दो गाड़ियों द्वारा प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी कुछ मुक्तों के साथ उनके घर गए। अन्य सभी कोच द्वारा एंगलबर्ग हॉटल चले गए। प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी रात को करीब पौने बारह बजे हॉटल लौटे।

20 सितंबर की सुबह रीलेक्स मूड से सभी हॉटल में रहे और रेस्तरां में दोपहर का भोजन करने के बाद **'फ्यूनीक्युलर लिफ्ट'** से 'जर्शनीएल्प' गए। करीब पौना घंटा वहाँ ठहरने के बाद नीचे लौटे। साथ गए कुछ मुक्त **'फुट स्कूटर'** से सैर करते हुए आए। सायं 5:00 बजे एंगलबर्ग के **चर्च-मोनेस्ट्री** गए। वहीं साथ में 'चीज़ फॅक्ट्री' थी, सो वहाँ जाकर चीज़ बनते हुए देखा और कुछ चीज़ खरीद कर हॉटल लौटे।

अगले दिन यानि 21 सितंबर को **पू. पुनीत मल्होत्रा** का **40वाँ जन्मदिन** था, सो उस निमित्त सायं हॉटल के डाईनिंग हॉल में बैठ कर आधा घंटा धुन की। तत्पश्चात् केक कटिंग की और एक ऑल्बम के रूप में पू. पुनीत मल्होत्रा के लिए मुक्तों ने जो अपने उद्‌गार लिख कर भेजे थे, वे प.पू. गुरुजी ने कुछ स्वयं पढ़े और कुछ पू. राकेशभाई ने पढ़े। इसके बाद सभी भोजन करने के लिए रेस्तरां में गए और वहाँ से हॉटल में लौटे। सभी सेवक सामान पॅक करने में जुट गए, क्योंकि अगले दिन पॅरिस के लिए रवाना होना था।

21 सितंबर की सुबह करीब 10:00 बजे ज्यूरिक के लिए रवाना हुए, क्योंकि वहीं से पॅरिस के लिए फ्लाईट लेनी थी। प.पू. गुरुजी कुछ मुक्तों के साथ ज्यूरिक की मार्किट में 'घड़ी' खरीदते हुए, मुंबई के आत्मीय **डॉ. उपेन्द्रभाई पटेल** की बहन **पू. प्रतीक्षा बहन** के मोटल पर गए। वहाँ प्रसाद लेकर एयरपोर्ट पहुँचे। अन्य सभी ज्यूरिक लेक देख कर, रेस्तरां में भोजन करके एयरपोर्ट पहुँचे। पू. प्रतीषभाई एवं पू. अमीषभाई एयरपोर्ट छोड़ कर सायं 4:00 बजे अपनी गाड़ी से पॅरिस के लिए रवाना हुए। चॅक इन कराने के बाद सायं पौने सात बजे **स्वीस एयरलाईन** से प.पू. गुरुजी एवं सभी पॅरिस गए। रात को करीब आठ बजे पॅरिस पहुँचे। पू. प्रवीणभाई, पू. अंकुरभाई, पू. भरतभाई एवं मंडल रीसीव करने के लिए आया था। एयरपोर्ट से सभी सीधा पू. प्रवीणभाई लाड के घर पहुँचे। वहाँ सभी ने मॅक्सीकन व्यंजन का प्रसाद लिया और करीब पौने ग्यारह बजे प.पू. गुरुजी ने कहा कि अभी **'एफिल टावर'** की लाईटिंग देखने के लिए जाएँगे। सभी हैरान थे कि **पूरे दिन की थकान और सफ़र करने के बाद भी 82 साल की उम्र में प.पू. गुरुजी बस मूर्ति लुटाने के लिए कैसे सस्ते बने हैं!** एफिल टावर जाने के लिए सभी जल्दी से तैयार हो गए और बारह बजने से पाँच मिनिट पहले वहाँ पहुँच कर 12:00 बजे की लाईटिंग देखी। वहाँ पॅरिस के मुक्तों ने आइसक्रीम खिलाई और रात को एक बजे की अंतिम लाईटिंग देख कर, पू. प्रवीणभाई के घर के नज़दीक क्लीशी के **'ली एपार्टमेन्ट्स'** में करीब दो बजे पहुँच कर सभी सॅटल हुए।

22 सितंबर की सुबह पू. प्रवीणभाई का परिवार एपार्टमेन्ट्स में नाश्ता लेकर आया। सो, वहीं नाश्ता करने के बाद, नज़दीक में **पू. बलवंतराय मिस्त्री** के घर गए। वर्षों पहले **गुरुहरि काकाजी** का माणावदर मंडल

'गोकुळियुं मंडल' कहा जाता था, इसी प्रकार पॅरिस का मंडल है। गुरुहरि काकाजी की सर्वदेशीय समझ रखते मुक्त हर प्रकार से सुख-समृद्धि हेतु प.पू. गुरुजी ने करीब पंद्रह मिनिट धुन कराई, तब साथ में आए **पू. घनश्यामभाई अमीन** तो रो पड़े। पर, पू. प्रवीणभाई के घर से **पू. हर्षा बहन** ने प.पू. गुरुजी को प्रार्थना कहलवाई –

भौतिक समृद्धि से अधिक हमारा आपसी सुहृदभाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहे, ऐसे आशीर्वाद दो !

तदोपरांत पीज़ा का प्रसाद लेकर, प.पू. गुरुजी एवं कुछ मुक्त **पू. प्रफुल्लभाई मिस्त्री** के यहाँ पधरामणी करने गए और प.पू. दीदी एवं कुछ मुक्त **पू. बकुलेशभाई पटेल** एवं **पू. हर्षदभाई पटेल** के घर गए। सायं सभी **पू. युवराजसिंह सीलह** के घर एकत्र हुए। वहाँ धुन-भजन करके प.पू. गुरुजी ने थोड़ी बातें करीं और प्रसाद लेकर एपार्टमेन्ट में लौटे। **23 सितंबर** की सुबह भी एपार्टमेन्ट्स में ही नाश्ता करके **'एफिल टावर'** गए। उसकी दूसरी और तीसरी मंज़िल पर पहुँच कर प.पू. गुरुजी ने पॅरिस शहर पर दृष्टि करके धुन कराई और फिर नीचे लौट कर, **पू. मुकुलभाई शाह** के घर के लिए रवाना हुए। ट्राफिक के कारण करीब साढ़े पाँच बजे वहाँ पहुँचे। पू. मुकुलभाई की पत्नी **पू. मालाभाभी** जो कि दो-तीन घंटे से राह देख रही थीं, उन्होंने सबको गरम-गरम इडली, सांभर का प्रसाद खिलाया। यहाँ सबको इतना अपनापन लगा कि खूब भूख लगने के कारण सभी भोजन पर मानो टूट पड़े और आनंद किया। तत्पश्चात् सायं **'एसपास न्योज़ी ल सॅक'** बँकेट हाल में सभी गए। वहाँ पॅरिस मंडल के करीब सौ-डेढ़ सौ मुक्त बहुत उमंग से एकत्र हुए थे। धुन-भजन के बाद **पू. अंकुरभाई लाड** ने प.पू. गुरुजी का संक्षिप्त परिचय देते हुए अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं और प.पू. गुरुजी सहित जो भी मुक्त उनके साथ गए, उनका पुष्प गुच्छों द्वारा स्वागत किया। पू. राकेशभाई ने पॅरिस मंडल का आभार व्यक्त किया और पू. घनश्यामभाई अमीन एवं पू. ओ.पी. अग्रवालजी ने माहात्म्य दर्शन कराया। गुरुहरि काकाजी की स्मृति करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद दिया –

*दुनिया जानती है कि **पॅरिस इज़ ए सिटी ऑफ लव एण्ड रोमांस!***

*मेरे मन में हमेशा से एक विचार उठता था कि काकाजी पॅरिस पर क्यों इतने मेहरबान थे ? पर, उन्होंने मुझसे कहा था – **आई एम ए ट्रान्सिन्डेन्टल लवर एन्ड माई रोमांस इज़ ऑलसो ट्रान्सिन्डेन्टल!***

*ट्रान्सिन्डेन्टल यानि - फिज़िकल रिलेशन से परे; जिसे काकाजी कहते थे – अंतःकरण पार का विचार ! सिर्फ एक प्रभु का संबंध निभाए रखते हुए संबंध वाले की वृद्धि करें। प्रवीणभाई लाड, शंभुभाई पटेल जैसों में ऐसा नज़र आता है और इनकी भक्ति से ऐसा आभास होता है कि हम दिल्ली या मुम्बई में बैठे हैं... **गुणातीतानंदस्वामी** ने अपनी बातों में कहा है – **भगवान के भक्तों में आत्मबुद्धि व प्रीति, वो ही सत्संग है।** अपने देह के संबंधियों से जैसी आत्मबुद्धि व प्रीति है, वैसी भगवान के भक्तों से दृढ़ करना। यहाँ ऐसा दिखाई पड़ता है। प्रवीणभाई लाड, शंभुभाई, बकुलेशभाई जैसों के ज़रिए पेरिस में ये पॉसिबल हो पाया, क्योंकि काकाजी ने आपके लिए **दिनकर अंकल** को यहाँ डेप्यूट किया। उनसे जितना संबंध दृढ़ करेंगे, उतना काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेबजी को राज़ी करने और उनकी मूर्ति भीतर में प्रगटाने की कला वे आत्मसात् करवा देंगे...*

काकाजी-पप्पाजी के संबंध की महिमा समझते हुए सभी की ऐसी भावना है कि गुरुजी यहाँ आए हैं, तो उन्हें कैसे खुश करके भेजें। कल हम सबके भोजन की व्यवस्था शम्भूभाई के घर है। मैंने जब पूछा कि ऐसा क्यों सेट किया,

तो बताया कि – ***शंभुभाई की ऐसी भावना है कि उनके घर ठाकुरजी का थाल लगे। संत और भक्त उनके यहाँ भोजन करें।*** *कहने का मक़सद यह है कि यदि वे चाहते तो होटल में व्यवस्था कर सकते थे, परंतु भक्तों के प्रति ऐसा अपनापन कि हमारे रिश्तेदार आए हैं इन्हें यहाँ ही खिलाना है। कथा-पाठ, तीर्थाटन, यज्ञ, व्रत इत्यादि* ***भक्ति*** *का एक रुप हैं, किन्तु मानवरुप में प्रगट संत और इनके संबंध वाले भक्तों को राज़ी करने के लिए क्रिया करें – वह* ***सत्संग*** *है। ऐसी भावना जितनी डॅवलप होगी, उतना हमने सत्संग किया!*

इतिहास इस बात का साक्षी है कि ***काकाजी, पप्पाजी, कांतिकाका, सोनाबा ऐसा जिए हैं व गुणातीत समाज का सर्जन किया है।*** *उनके बाद स्वामीजी, साहेबजी, दिनकर अंकल ने आत्मबुद्धि व प्रीति के सिद्धांत की पुष्टि की है! इनकी योजना में पार्टिसीपेट होंगे तो आनंद प्राप्त होगा। पप्पाजी के शब्दों में 'जी हज़ूरी' किया करें...*

वचनामृत प्रथम 27 में लिखा है कि ***मनुष्य ही एकमात्र ऐसा जीव है, जिसे भगवान के प्रति आस्था रहती है।*** *साथ ही महाराज ने यह भी निर्देश दिया है कि भगवान भजने की इच्छा सबको होती है, पर उसकी रीति किसी को आती नहीं! वह रीति क्या? हम किसी व्यक्ति से पूछते हैं कि क्या हुआ? तो, वह कहता है कि ऊपर वाला जाने! अपितु, भगवान स्वामिनारायण ने यह आशीर्वाद दिया है कि वो ऊपर वाला ही नीचे मानव रूप में प्रगट रहेगा और अपने साथ संबंध कराने हेतु वो गुणातीत संत के रुप में हमेशा हाज़िर रहेगा...*

'काकाजी का साक्षात्कार' *बहुत बड़ी घटना थी। योगीजी महाराज सबको एक ऑर्डिनरी साधु के रुप में नज़र आते थे।* ***वे साधारण 'साधु' नहीं, बल्कि 'भगवान का स्वरुप थे' यह पहचान काकाजी ने पूरे समाज को करवाई।*** *योगीजी महाराज के रुप में सहजानंदस्वामी धरती पर साक्षात प्रगट हैं और काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेबजी, दिनकर अंकल के द्वारा मानवस्वरुप में प्रगट रहे हैं...*

भगवान के संबंध वाले भक्त भले ही स्वभावयुक्त हों, पर दिल की सच्चाई से उनकी महिमा समझकर उन्हें भी दिव्य मानना...

लंका पर चढ़ाई करने गए, तो रामचंद्रजी की सेना वानरों की थी। टी.वी. सीरियल में वानरों को पंक्तिबद्ध चलते हुए दिखाते हैं, पर क्या आप इस बात पर विश्वास कर सकते हो कि वानर पंक्ति में चलते होंगे? अरे! मार्ग में उन्होंने कितने वृक्ष तोड़े होंगे, फल खा गए होंगे। फिर भी हमारे लिए वे पूजनीय हैं क्योंकि उनका राम के साथ संबंध था। हम परोक्ष की भक्ति आसानी से स्वीकार कर लेते हैं, लेकिन यह 'गुणातीत समाज' जो मौजूद है, उसमें हर एक को दिव्य मानना कि ओहोहो! प्रगट प्रभु के संबंध वाले मुक्त... ***सर्वप्रथम यह ज्ञान काकाजी ने एस्टेब्लिश किया, फिर पप्पाजी ने आकर उन्हें साथ दिया। काकाजी ने कहा भी था – आगे चलकर मेरा भाई आएगा और बहनों का काम करेगा। बहनों का भव्य समाज तैयार हो गया! आज अपने यहाँ लगभग 800 भगवाधारी बहने हैं, जो भगवान को धार के स्त्री समाज के उत्थान के लिए कार्य कर रही हैं...***

अपनापन किसे कहा जाए वह ***गुणातीतानंदस्वामी*** *ने हमें अपने वर्तन से सिखाया – गुरुपूर्णिमा की बात है। हम सब जानते हैं कि गुरुपूर्णिमा आषाढ़ मास में वर्षा ऋतु में आती है। गुणातीतानंदस्वामी ने कोठारी त्रिकमदास से कहा – कपड़े के थान में से धोती के माप के कपड़े फाड़ कर कोठार में तैयार रखना। त्रिकमदास ने स्वामी से पूछा – इसकी क्या आवश्यकता है? तब स्वामी ने उत्तर दिया – अभी सब भक्त जन आएँगे; वे बारिश में भीग गए*

होंगे तो उनके लिए कोरे कपड़ों की व्यवस्था तो होनी चाहिए!

स्वामी को भक्तों के साथ-साथ मंदिर का भी उतना ही ममत्व था। ममत्व की बात इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि हमें सत्संग का ममत्व होना चाहिए लेकिन स्वरुपलक्षी।

एक समय की बात है गुणातीतानंदस्वामी सभा कर रहे थे अचानक से सभा के बीच कुछ आवाज़ें आने लगीं। स्वामी ने बाहर जाकर देखा तो कोठारी त्रिकमदास और चरवाहे के बीच बैल के मूल्य को लेकर बहस हो रही थी। मंदिर में बैल की आवश्यकता थी। चरवाहा उसे 100 कोड़ी में बेचना चाहता था, पर कोठारी त्रिकमदास 80 कोड़ी में खरीदना चाहते थे। तब स्वामी ने दोनों की समस्या का हल निकालते हुए 120 कोड़ी में खरीदा! इस बात से चरवाहा बहुत प्रसन्न हो गया। उसे स्वामी का गुण आया और धीरे-धीरे सत्संग से जुड़ता गया। ***ये है बड़े संत की विशाल, सर्वदेशीय, आर्ष सुहृद दृष्टि!***

ऐसी सुहृददृष्टि से सत्संग के विकास का जितना प्रयत्न करेंगे, उससे सत्संग में वृद्धि होगी। साथ-साथ भीतर का कुरुक्षेत्र सुहृदक्षेत्र में परिवर्तित हो जाएगा। परंतु इसके लिए अभेददृष्टि अनिवार्य है। हम ये समझना छोड़ दें कि यह हरिधाम, सांकरदा, अनुपम मिशन, दिल्ली, ज्योत, पवई – फलां सेन्टर से आया है बल्कि ये मेरे अपने आए हैं। इसी भावना के साथ 'हम सब एक हैं' सूत्र को लेकर आगे बढ़ें! ***हरिप्रसादस्वामीजी ने मुझे एक बार कहा था कि काकाजी-पप्पाजी को हमसे ठंडक तो है, लेकिन अब हम इन्हें आनंद दे पाएँ*** *और वह सर्वदेशीय सुहृदभाव से ही संभव है; तो उस रास्ते हम अग्रसर हों।*

जो नए आए हैं, इन्हें तो यह समझ नहीं आई होगी कि क्या बात कर रहा हूँ। लेकिन इतना जरूर समझना कि भगवान मानवस्वरूप में इस समाज के अंदर ही प्रगट हैं। इस समाज के अंदर यानि गुणातीत परंपरा के अंदर, क्योंकि महाराज के आशीर्वाद हैं कि ऐसे गुणातीत संत के द्वारा मैं मानवस्वरूप में धरती पर अखंड प्रगट रहूँगा। तो, ये अनमोल मौका जो करोड़ों साल की तपस्या करने के बाद ऋषि-मुनियों को नहीं मिला, वो हमें – जगत में रहते हुए त्यागाश्रम में, आप लोगों के लिए संसार में रहते हुए सुलभ कर दिया। कितनी दुर्लभ बात हमारे लिए आसानी से सुलभ कर दी? सो, उसका ऋण चुकाने के लिए ऐसे संतों के संबंध में रहें, यही प्रार्थना।

अंत में आरती संपन्न हुई और प्रसाद लेकर सभी अपने-अपने ठहरने की जगह पर गए। सभी सेवक सामान पॅक करने में जुट गए, क्योंकि अगले दिन सायं **'मादरे वतन'** के लिए रवाना होना था। गुरुहरि काकाजी के प्रति भक्ति अदा करने हेतु **प.पू. दीदी, पू. प्रवीणभाई-पू. हर्षा बहन** एवं कुछ मुक्तों के साथ मॉरिशियस की तीन प्रेमी मुक्त–**पू. प्रमीलाजी, पू. इन्दुमतिजी** एवं **पू. नंदिनीजी** के घर देर रात्रि को पधरामणी करके पौने दो बजे एपार्टमेन्ट्स में पहुँची।

24 सितंबर की सुबह एपार्टमेन्ट्स में नाश्ता करके **पू. भीखूभाई पटेल**, **पू. ठाकुरभाई लाड** के घर पधरामणी करते हुए दोपहर को **पू. शंभुभाई पटेल** के घर पहुँचे। वहाँ धुन-भजन करके प्रसाद लेकर, दोपहर दो बजे एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए। **पू. विजयपालजी, पू. ओ.पी. अग्रवालजी, शेठ पू. अनिलभाई माणिक** एवं **पू. शिवम** रात को एयर इंडिया की फ्लाईट से जाने वाले थे। सो, वे बाद में एयरपोर्ट के लिए निकले। इस दिन सुबह से ही तेज़ बरसात हो रही थी, फिर भी पॅरिस के अधिकतर मुक्त भावभरी विदा देने के लिए एयरपोर्ट तक

आए ! **सायं 5:40** को **बिट्रिश एयरवेज़** से लंदन पहुँच कर, हिथ्रो से कनेक्टींग फ्लाईट से दिल्ली जाना था। लेकिन, बरसात के कारण पॅरिस से फ्लाईट एक घंटा देर से चली और जब लंदन हिथ्रो एयरपोर्ट पर पहुँचे, तो दिल्ली जाने वाली फ्लाईट की बॉर्डींग हो चुकी थी। पू. राकेशभाई एवं पू. डॉ. दिव्यांग ने बिट्रिश एयरवेज़ के कार्यकर्ताओं से बात की, तो उन्होंने बताया कि अब तो अगले दिन सुबह दस बजे की फ्लाईट है, जिसके द्वारा भारत जा सकेंगे। सो, प.पू. गुरुजी की आयु एवं तबियत देखते हुए सभी व्याकुल हो गए, लेकिन प.पू. गुरुजी तो स्थिरता से व्हील चॅयर पर बैठ कर सबको देख रहे थे। आख़िर ब्रिटिश एयरवेज़ के कार्यकर्ताओं ने अपनी गल्ती के कारण, एयरपोर्ट के नज़दीक हॉटल **'हॉलीडे इन'** (अरोड़ा ग्रुप) में सभी के भोजन व ठहरने की व्यवस्था की। प.पू. गुरुजी ने इच्छा व्यक्त की कि संतों व सेवकों के साथ वे डॅनहाम स्थित 'अनुपम मिशन' जाकर रात को ठहर जाएँगे। सो, प.पू. गुरुजी सहित सभी शटल से 'अरोड़ा हॉटल' पहुँचे। वहाँ अनुपम मिशन से **पू. जयेन्द्रभाई** गाड़ी लेकर आए और प.पू. गुरुजी, संतों-सेवकों को अपने साथ ले गए। अन्य सभी हॉटल में ठहरे।

प्रभुधारक संत का प्रत्येक चिह्न, चरित्र व चेष्टा हेतुलक्षी-स्मृतियुक्त ही होती है। जैसे कि दिल्ली में सभी बेसब्री से पलकें बिछाए बैठे थे कि हमारे प्राणप्रिय प.पू. गुरुजी एक माह के पश्चात् लौटेंगे... सो, उनसे अधिक भजन एवं मनन-चिंतन कराने के लिए, शायद प्रभु ने यह योजित किया था। साथ ही प्रभु शायद यह भी सिखाना चाहते थे कि हम भावनाओं से ऊपर उठ कर, अपने बौद्धिक मूल्यांकनों को छोड़ कर, केवल प्रभु की मरज़ी के अनुसार जीते हो जाएँ। और... इन सभी पिष्टपेषण से अधिक, जैसे कि प.पू. गुरुजी रात को डॅनहाम – अनुपम मिशन में जाकर ठहरे, तो सभी को सहज ही **गुरुहरि काकाजी** के निम्न प्रसंग की स्मृति हो आई –

जब **1981** में पॅरिस से शिकागो जाते हुए, फ्लाईट चूकने के कारण गुरुहरि काकाजी अचानक हिथ्रो-लंदन एयरपोर्ट पर उतरे, तो उन्होंने पू. हिमंतस्वामी को लेने आने के लिए फोन किया था। तब, जहाँ आज अनुपम मिशन स्थित है, उस भूमि के बारे में सब असमंजस में थे। सो, पू. हिमंतस्वामी की विनती स्वीकार करके, **प.पू. काकाजी** इस जगह गए व सबकी दुविधा दूर करते हुए, वहाँ बने मकान के नज़दीक के पेड़ (जो आज भी वहाँ मौजूद है) के पास खड़े रह कर, बोले –

'पप्पाजी मैं हूँ, बा भी मैं हूँ, साहेब भी मैं हूँ, स्वामिनारायण भगवान भी मैं हूँ, जो भी मानना हो वह मान कर तू यह ले ही ले।'

लंदन टाईम के मुताब़िक 24 सितंबर की सुबह साढ़े सात बजे सभी हिथ्रो एयरपोर्ट पहुँच गए। चॅक इन कराने के बाद सुबह करीब दस बजे भारत-दिल्ली के लिए रवाना हुए। **तकरीबन साढ़े आठ घंटे की फ्लाईट में प.पू. गुरुजी सीट के आगे लगे मानचित्र को देखते रहे कि कितनी दूरी शेष है** और... इधर दिल्ली के मुक्त स्वागत की तैयारियों में ज़ोर-शोर से लगे हुए थे। इन्डियन टाईम के अनुसार **रात को करीब 11:30 बजे** दिल्ली के 'इंदिरा गाँधी इंटरनेशनल' एयरपोर्ट पर फ्लाईट उतरी। प.पू. गुरुजी ने एक पेपर पर **'मादरे वतन'** लिख कर, वॉट्सएप द्वारा अपने साथ गए मुक्तों को सुबह ही भेज दिया था। सो, सामान लेने के बाद प.पू. गुरुजी सहित सभी मोबाईल्स द्वारा वह दर्शाते हुए एयरपोर्ट के बाहर निकले। रीसीव करने वाले मुक्तों ने प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी को **हार अर्पण** करके स्वागत किया। प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी के स्वागत हेतु, गुरुहरि काकाजी की कृपापात्र

पू. दमयंती बहन पकई तो 85 साल की उम्र में अपनी बेटी **पू. मयूरी बहन** के साथ अमदावाद से ख़ास आई थीं। उन्हें एयरपोर्ट पर देख कर प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी आश्चर्यचकित हो गए। करीब एक बजे मंदिर को जाते 'स्वामिनारायण मार्ग' पर जब गाड़ी पहुँची, तो वहाँ अंधेरे में पगड़ी पहने 12 मुक्त भारत और गुणातीत समाज का झंडा लगाए हुए बुलेट बाईक पर सवार थे। सबसे आगे 'हार्लेडेविडसन' बाईक पर बैठे **पू. गौरव गर्गजी** अगवाई करते हुए चलने लगे।

सहजानंदस्वामी महाराज की जय की गूंज से 'काकाजी लेन' में दाख़िल होकर जब मंदिर के द्वार के नज़दीक पहुँचे, तो सत्संग की भाभियाँ आरती की थालियों से स्वागत करने खड़ी थीं। मंदिर पर तोरण लगाए हुए थे और लाईट से पूरा मंदिर जगमगा रहा था। मुख्य द्वार पर घर के आकार का फ्लैक्स लगाया था, जिस पर **'वॅलकम होम'** लिखा था। जैसे ही **प.पू. गुरुजी** ने द्वार खोला, तो **85 वर्षीय पू. हिम्मत काका से लेकर, एक वर्ष की प्यारी सौम्या तक के मुक्तों के हाथ से कुमकुम की छाप से गलीचा बनाया हुआ था।** उस पर हठ, मान, ईर्ष्या, काम, क्रोध, लोभ, मोह, माया, अहंकार इत्यादि शब्द लिखे थे, मानो प्रार्थना करी थी कि – *हे गुरुजी ! अपने चरणों के स्पर्श मात्र से हमें इनसे मुक्त कर दीजिए।* मंदिर के कार्यालय की छत से सत्संग के युवक पुष्पों की वर्षा भी कर रहे थे। प.पू. गुरुजी के आसन पर विराजमान होने के बाद, पुष्प हार से प.पू. गुरुजी, प.पू. दीदी एवं साथ में गए सभी मुक्तों का स्वागत किया गया। **सभी के नेत्रों से हर्षाश्रु बह रहे थे, क्योंकि आज मंदिर क्या दिल्ली के प्राण लौट आए थे।** दिल्ली, यू.पी., हरियाणा, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र के करीब तीन सौ मुक्त एकत्र हुए थे। रात के ढाई बजे तक भी कोई घर लौटने को तैयार ही नहीं था... फिर भी समय की मर्यादा के कारण स्मृतियाँ लेकर सभी चले गए।

गुणातीत स्वरूप अकसर कहते हैं – सब कुछ ब्रह्मनियंत्रित है, लेकिन प्रसंग पर हम यह बात भूल जाते हैं और बुद्धिजीवी होने की वज़ह से कार्य - कारण को अधिक मानते हैं। जैसे कि पॅरिस से एक घंटा देर से फ्लाईट उड़ने के कारण दूसरी फ्लाईट चूके और फिर दूसरी फ्लाईट से दिल्ली आना पड़ा। लेकिन, प.पू. गुरुजी जैसे प्रभुधारक संत तो केवल कल्याणकारी ही हैं, इस बात का ब्रिटिश एयरवेज़ की फ्लाईट से ख्याल पड़ा। फ्लाईट में स्टीवर्ड **श्री कॉरेडो मिकैली** एवं एयर होस्ट्रेस **श्रीमती ज्योति वाधवा** प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी का दर्शन करके इतने प्रभावित हुए थे कि वे उसी रात मंदिर आए और स्वागत का अनोखा नज़ारा देख कर उन्हें बहुत शांति और सकारात्मक तरंगों का एहसास हुआ। दूसरी ओर – फ्लाईट में पू. अभिषेक को प.पू. गुरुजी की सेवा करता देख कर, वहीं नज़दीक में बैठे अमेरिका के **डॉ. मार्क** इतने प्रभावित हुए कि **27 तारीख** को वे अपनी पत्नी **श्रीमती लिन** एवं उनकी मित्र **श्रीमती शिवानी सेठ** के साथ मंदिर में श्री ठाकुरजी का दर्शन करने के लिए आए। प.पू. गुरुजी से बातचीत के दौरान **डॉ. मार्क** ने **पू. अभिषेक** के विषय में कहा –

वह जिस प्रकार आपकी सेवा कर रहा था, वह एक बेटे से कई गुणा बढ़ कर थी।

ऐसे प्रसंगों से ख्याल पड़ता है कि **हमारा वर्तन ही स्वरूप की सच्ची महिमा है।** तो, ऐसी राह पर अग्रसर रहते हुए हम सभी अपने प्रगट स्वरूप का परिचय बनें, ऐसी प्रार्थना...

भजन

(राग– देखते-देखते...)

रज के दौलत दी, रज के प्रभु दिये, गुणातीतभाव भी रज के लुटाया,
मानवरूप में काकाजी ने, धरती पर वो सूर्य उतारा ...

आँखों से... वो जो आँखों से एक पल न ओझल हुए,
वो जो आँखों से एक पल न ओझल हुए,
बस गए तुझमें वो देखते देखते...

दर्शन से... जिनके दर्शन से एहसास प्रभु का मिले,
जिनके दर्शन से प्रगट प्रभु जो मिले,
है समर्पित जीवन काकाजी के लिए,

ऐसे दिनकर... ऐसे दिनकर अंकल का करें धन्यवाद,
ऐसे दिनकर दादा को करें हम नमन, करते हर पल परिश्रम मुक्तों के लिए,
सोचता हूँ कि तुम कितने ऊँचे हो पर, कितने सस्ते हुए हो हमारे लिए,

आज काकाजी हैं जिनमें प्रगट रहे-2, बन पहचान काकाजी की हैं जो जिए,
गुणातीत स्थिति, पर सेवक की अदा,
गुणातीत अस्मिता से सुहृद सबके तुम, सहते कसनी हमारे भले के लिए,
ऐसे दिनकर...
दृष्टि संबंध की, बातें महिमाभरी,
गुणातीत दासत्व से ही क्रिया करी,
सर्वदेशीयता युक्त भक्ति तेरी,
वही तो गुणातीतज्ञान सरिता बही,
आपसे जो मिला, 'पोज़ीटिव' हो गया,
चेतना उसकी अक्षर की ओर चली,

जीव जाने ना... जीव जाने ना तुमने जादू क्या किया,
बने सखा उसे जोड़ने के लिए,
थाम ले हाथ जिसका ना छोड़ें कभी,

थाम ले हाथ जिसका ना छोड़ें कभी, अपने संबंध से ब्रह्मरूप है कर दिये,
अपने संबंध से... ओहो... हो.... ओहो... हो....
अपने संबंध से ब्रह्मरूप कर दिये, सिर्फ संबंध से ब्रह्मरूप कर दिये-2
हो... सर्वोपरि का संबंध दिया आपने,

सर्वोपरि का संबंध बख़्शा आपने, देखें गुण-दोष मुक्तों में हम किस लिए ?
याचना है... याचना है निगाहों में तुम ही रहो, उम्र गुज़रे तुम्हें देखते-देखते,
याचना है परिचय तुम्हारा बनें, आप राज़ी हो वैसे ही अब हम जिएँ,
आप राज़ी हों वैसे ही अब हम जिएँ, आप राज़ी हों अब... ओ...!

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 31.12.'19, मंगलवार – 2020 – नए वर्ष के आगमन निमित्त
'ताड़देव' मंदिर में रात्रि 10:00 बजे 'मध्यरात्रि महापूजा'

(2) दि.01.1.2020, बुधवार – 2020– नया साल प्रारंभ

(3) दि. जनवरी 2 गुरुवार से 5 रविवार, 2020 –
वडोदरा में – वचनामृत द्विशताब्दी महोत्सव के उपक्रम में
प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का 'आंतरराष्ट्रीय आत्मीय युवा महोत्सव'

(4) दि. 06.1.'20, सोमवार – एकादशी, व्रत

(5) दि. जनवरी 7 मंगलवार से 10 शुक्रवार, 2020 –
मोगरी में – श्री अक्षरपुरुषोत्तम मूर्तिप्रतिष्ठा मंदिर महोत्सव के उपक्रम में
संतभगवंत साहेबजी का '80वाँ प्राकट्योत्सव'

10.1.'20, शुक्रवार – पौषी पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी का दीक्षा दिन

(6) दि. 13.1.'20, सोमवार – लोहड़ी, प.पू. आनंदी दीदी का 59वाँ प्राकट्य दिन

(7) दि. 14.1.'20, मंगलवार – मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन

(8) दि. 20.1.'20, सोमवार – एकादशी – व्रत, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का अक्षरवास-मुंबई

(9) दि. 25.1.'20, शनिवार – संतों की अनुपस्थिति में प.पू. आनंदी दीदी का 59वाँ प्राकट्योत्सव
'कल्पवृक्ष' हॉल में सायं 5.00 बजे से...

(10) दि. 26.1.'20, रविवार – प्रजासत्ताक दिन
सुबह 9:00 बजे से सायं 6:00 बजे तक 'कल्पवृक्ष' हॉल में अखंड धुन
और... ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्मृति स्थल पर परिक्रमा

(11) दि. 30.1.'20, गुरुवार – वसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती,
ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्य दिन

(12) दि. 31.1.'20, शुक्रवार – प.पू. भरतभाई का प्राकट्य दिन

(13) दि. 01.2.'20, शनिवार – पवई में – प.पू. भरतभाई का प्राकट्योत्सव

(14) दि. 02.2.'20, रविवार – प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. बापु का 'अमृत' प्राकट्योत्सव

(15) दि. 03.2.'20, सोमवार – गुरुहरि काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन
दिल्ली मंदिर का पाटोत्सव दिन

(16) दि. 05.2.'20, बुधवार – एकादशी – व्रत

(17) दि. 19.2.'20, बुधवार – एकादशी – व्रत

(18) दि. 21.2.'20, शुक्रवार – महाशिवरात्रि, व्रत

(19) दि. 24.2.'20, सोमवार – प.पू. गुरुजी की प्राकट्य तिथि

(20) दि. 07.3.'20, शनिवार – गुरुहरि काकाजी का स्वधामगमन दिन

(21) दि. 09.3.'20, सोमवार – होली, अनादि महामुक्त भगतजी महाराज की जयंती

(22) दि. 10.3.'20, मंगलवार – धुलेन्डी, संतभगवंत साहेबजी की 80वीं प्राकट्य तिथि

(23) दि. 13.3.'20, शुक्रवार – **प.पू. गुरुजी** का 83वाँ प्राकट्य दिन
सायं 5:00 बजे से ताड़देव संकुल (दिल्ली) में मनाएँगे...

(24) दि. 20.3.'20, शुक्रवार – एकादशी – व्रत

प्रगट ब्रह्म के सान्निध्य से समय की सुध न रही...

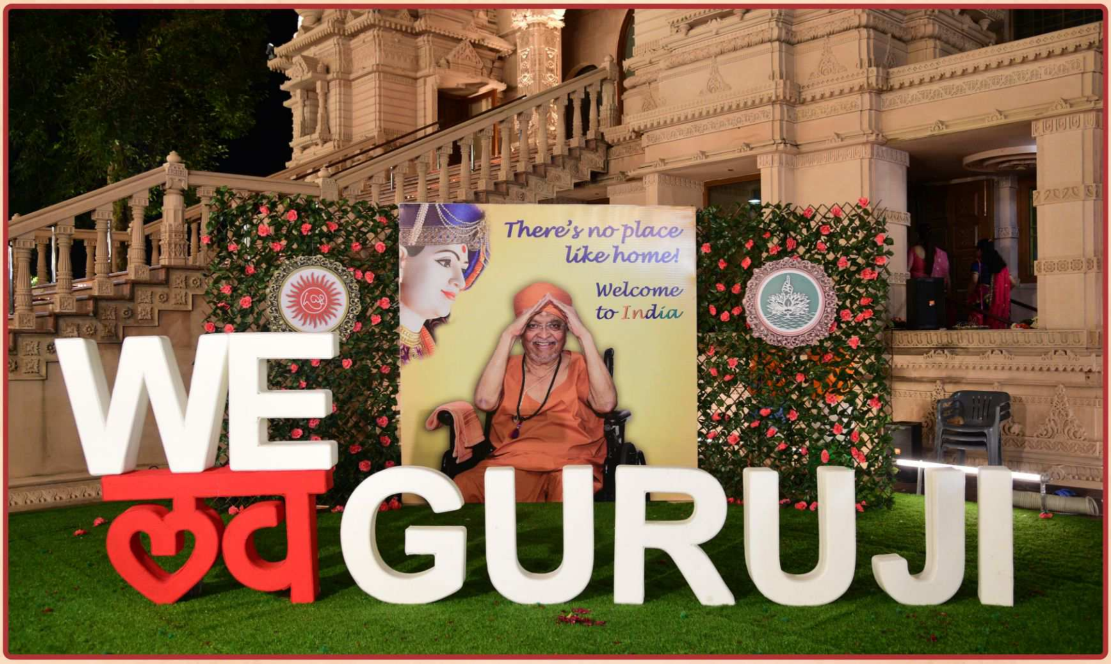

साकार ब्रह्म की दृष्टि में आये चैतन्यों का कल्याण...

Air Mail **R.N.I. 28971/ 77**

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched Bimonthly

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :-*

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kãkãji Lane, Swãminãrãyan Mãrg, Ashok Vihãr-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052